



भारत का राजपत्र The Gazette of India

असाधारण
EXTRAORDINARY

भाग II—खण्ड 3—उप-खण्ड (i)
PART II—Section 3—Sub-section (i)

प्राधिकार से प्रकाशित
PUBLISHED BY AUTHORITY

सं. 111]

नई दिल्ली, बुधवार, मार्च 9, 1994/फाल्गुन 18, 1915

No. 111]

NEW DELHI, WEDNESDAY, MARCH 9, 1994/PHALGUNA 18, 1915

जल भूतल परिवहन मंत्रालय

(पत्तन पक्ष)

अधिसूचना

नई दिल्ली, 9 मार्च, 1994

मा. का. नि. 306(अ)—कलकत्ता पत्तन नियमों का निम्नलिखित प्रारूप, जिसे केन्द्रीय सरकार भारतीय पत्तन अधिनियम, 1908 (1908 का 15) की धारा 6 की उपधारा (1) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए और कलकत्ता पत्तन नियम, 1944 को अधिकांश करने हुए बनाने की प्रस्थापना करती है, उक्त धारा की उपधारा (2) की अपेक्षानुसार ऐसे सभी व्यक्तियों की जानकारी के लिए प्रकाशित किया जाता है, जिनके उससे प्रभावित होने की संभावना है और यह सूचना दी जाती है कि उक्त प्रारूप नियमों पर उक्त तारीख से जिसका राजपत्र में प्रकाशित इस अधिसूचना की प्रतियां जनता को उपलब्ध करा दी जाती हैं, पैंताविंश दिन की समाप्ति पर या उसके पश्चात् विचार किया जाएगा।

ऐसे किन्हीं आक्षेपों या सुझावों पर जो इस प्रकार विनिर्दिष्ट कालावधि की समाप्ति के पूर्व उक्त प्रारूप के संबंध में किसी व्यक्ति में प्राप्त होंगे, केन्द्रीय सरकार द्वारा विचार किया जाएगा।

प्रारूप नियम

अध्याय - 1

साधारण

1. संक्षिप्त नाम (1) इन नियमों का संक्षिप्त नाम "कलकत्ता पत्तन नियम, 1993" है।

(2) प्रारम्भ - ये राजपत्र में अधिसूचना के अंतिम प्रकाशन की तारीख की प्रवृत्त होंगे।

2 परिभाषाएं - इन नियमों में जब तक कि संदर्भ से अन्यथा अपेक्षित न हो,

(1) कलकत्ता पत्तन के संबंध में "बोर्ड" से महापत्तन न्यास अधिनियम, 1963 के अधीन तथा गठित कलकत्ता पत्तन का न्यासी बोर्ड अभिप्रेत है।

(2) "नौका" से हर प्रकार का छोटा यात अभिप्रेत है चाहे वह किसी भी नाम से वर्णित हो, जो यंत्र चालित नहीं है और जिसका उपयोग यात्रियों और स्थोरा के परिवहन के लिए किया जाता है तथा इसके अन्तर्गत इसके साथ खींची जा रही पातटन भी है।

(3) "नौका सर्वेक्षक" से ऐसा अधिकारी अभिप्रेत है जिसे अधीक्षक, नौका रजिस्ट्रीकरण के पर्यवेक्षण के अधीन ऐसी

नौकाओं के सर्वेक्षण का भारसाधन ग्रहण करने के लिए न्यायियों द्वारा नियुक्त किया गया है, जिनके रजिस्ट्रीकरण और अनु-स्थापन की अपेक्षा है।

(4) “स्थोरा नौका” से ऐसी नौका अभिप्रेत है जो सामान्यतया सभी प्रकार की जंगम या व्यक्तिगत सम्पत्ति का, जिनके अन्तर्गत पशु भी है; वहन करती है।

(5) “अध्यक्ष” से बोर्ड का अध्यक्ष अभिप्रेत है और इसके अन्तर्गत महापत्तन न्यास अधिनियम, 1963 की धारा 14 के अधीन उसके स्थान पर कार्य करने के लिए नियुक्त व्यक्ति भी है।

(6) “मुख्य यांत्रिक इंजीनियर” से अन्य बातों के साथ सूखे डाकों का भारसाधन ग्रहण करने के लिए केन्द्रीय सरकार द्वारा नियुक्त अधिकारी अभिप्रेत है।

(7) “अंधेरा” से सूर्यास्त के पश्चात् आधा घंटा अभिप्रेत है।

(8) “नौ फटना” से सूर्योदय के पूर्व आधा घंटा अभिप्रेत है।

(9) “उपाध्यक्ष कलकत्ता” से बोर्ड का उपाध्यक्ष अभिप्रेत है, जिसके पास अध्यक्ष कलकत्ता पत्तन न्यास के नियंत्रणाधीन कलकत्ता डाक प्रणाली का भारसाधन है और इसके अन्तर्गत महापत्तन न्यास अधिनियम, 1963 की धारा 14 के अधीन उसके स्थान पर कार्य करने के लिए नियुक्त व्यक्ति भी है।

(10) “उपाध्यक्ष, हल्दिया” से बोर्ड का उपाध्यक्ष अभिप्रेत है जिसके पास अध्यक्ष, कलकत्ता पत्तन न्यास के नियंत्रणाधीन हल्दिया डाक काम्प्लेक्स का भारसाधन है और इसके अन्तर्गत महापत्तन न्यास अधिनियम, 1963 की धारा 14 के अधीन उसके स्थान पर कार्य करने के लिए नियुक्त व्यक्ति भी है।

(11) “निदेशक” नौ विभाग से कलकत्ता पत्तन और पत्तन पहुंचने वाले भागों के लिए केन्द्रीय सरकार द्वारा ऐसे नियुक्त नौ विभागाध्यक्ष अभिप्रेत है और इसके अन्तर्गत भारतीय पत्तन अधिनियम, 1908 के अधीन कृत्यों का प्रयोग या निर्वहन करने के लिए उसके प्राधिकार के अधीन कार्य करने वाला कोई अन्य अधिकारी भी है।

(12) “डाक” से खिदिरपुर डा, नेताजी सुभाष डा, गाँवनीरौच जेटो, हल्दिया आयल जेटो, हल्दिया डाक और उससे अनुलग्न सभी भूमि मार्ग, घाट, बर्थ, ग्रेड, भण्डागार, रेल संकरी और अन्य चीजे अभिप्रेत हैं।

(13) “डाक मास्टर” से ऐसा अधिकारी अभिप्रेत है, जिसे बन्दरगाह मास्टर (पत्तन) के पर्यवेक्षण के अधीन हल्दिया डाक तथा हल्दिया आयल जेटोज को छोड़कर डाकों के अन्दर आने या बाहर जाने वाले सभी जलयानों के घाट पर लगाने वाले और लंगर डालने का भारसाधन ग्रहण करने के लिए न्यायियों द्वारा नियुक्त किया गया है।

(14) “सूखा डाक” से नेताजी सुभाष डाक में दो सूखे डाक और खिदिरपुर डाक में तीन सूखे डाक अभिप्रेत हैं।

(15) “केरीं स्टीमर” से हर वर्णन का अंतर्देशीय जलयान अभिप्रेत है जो पत्तन के भीतर या भागतः भीतर नियत मार्ग पर नियमित रूप से चलता है।

(16) “फ्लैट” से उक्त नौका अभिप्रेत है, जो केवल अंतर्देशीय जलयान द्वारा खींचा जा सकता है।

(17) “प्ररूप” से इन नियमों से उपाबंध प्ररूप अभिप्रेत है।

(18) “महा प्रबन्धक (प्रचालन)” से उपाध्यक्ष हल्दिया के नियंत्रणाधीन हल्दिया डाक काम्प्लेक्स का अधिकारी अभिप्रेत है जिसके पास अन्य बातों के साथ-साथ हल्दिया में नौ प्रचालन अनुभाग के प्रचालन का समग्र भारसाधन है।

(19) कलकत्ता आने वाले जलयानों की बाबन बन्दरगाह से पांचपाड़ा खम्बे से आगे का क्षेत्र अभिप्रेत है जिसके अन्तर्गत नेताजी सुभाष डाक खिदिरपुर डाक तथा नदी के गभी मूरिंग और लंगर डालना है। बज बज मूरिंग आने वाले जलयानों/वहाँ से निकलने वाले जलयानों के लिए बज बज रीच तथा बज बज में मूरिंग भी बन्दरगाह क्षेत्र के अन्तर्गत आएंगे।

हल्दिया आने वाले जलयानों की बन्दरगाह से हल्दी नदी और हुगली नदी के संगम से लेकर बलारी मीनार तक नदी के फैलाव का भाग अभिप्रेत है, जिसमें हल्दिया किनारा तथा नयाचरा का किनारा और हल्दिया डाक भी है।

(20) “बन्दरगाह मास्टर (पत्तन)” से ऐसा अधिकारी अभिप्रेत है जो पांचपाड़ा खम्बे से आगे के सभी जलयानों/यानों के बरिंग, मूरिंग और संचलन का भारसाधक है और इसके अन्तर्गत हल्दिया बर्थ और जेटो को छोड़कर कलकत्ता पत्तन के भीतर नेताजी सुभाष डाक खिदिरपुर डाक और सभी मूरिंग है।

(21) “बन्दरगाह मास्टर (नदी)” से यह अधिकारी अभिप्रेत है जो लोअर कालेज मैड बोया और मैड हैड्स के बीच सभी पायनटेज संचालन का भारसाधक है।

(22) “होवर क्राफ्ट/हायड्रोफायल/सी-प्लेन” से विशेष रूप से निर्मित विद्युत चालित यान अभिप्रेत है जो पानी की सतह पर से उठ कर चलता है अथवा पानी पर फिसलता हुआ आगे बढ़ता है।

(23) “अंतर्देशीय जलयान” से ऐसा कोई अंतर्देशीय जलयान अभिप्रेत है जो अंतर्देशीय वाण्य जलयान अधिनियम, 1917 के उपबंधों के अधीन है।

(24) “प्रबन्धक (नौ प्रचालन)” से ऐसा अधिकारी अभिप्रेत है जो हल्दिया में सैनान महाप्रबन्धक (प्रचालन) के नियंत्रणाधीन है और जो हल्दिया डाक के भीतर पोतों के संचलन का भारसाधक है, हल्दिया डाक के भीतर आने/बाहर जाने के लिए पोतों की आवाजाही तथा अन्य समुद्रा गत्यों का भारसाधक है।

(25) “मास्त्री” से ऐसा कोई व्यक्ति अभिप्रेत है जो किसी नौका/प्लेट का भारसाधक है।

(26) “मास्टर” शब्द का प्रयोग जब किसी जलयान के संबंध में प्रयोग किया जाता है तब उसमें जबर पायलट से भिन्न किसी ऐसा कोई व्यक्ति अभिप्रेत है जो उस जलयान का भारसाधक है या उस पर नियंत्रण रखता, जिसके नियंत्रणाधीन जलयान है।

(27) “नाट्य जल सारणी” से हुगली नदी का वह हिस्सा अभिप्रेत, जो समुद्रगामी जलयानों/सी-प्लेनों/हाइड्रोपायल द्वारा समय-समय पर प्रयोग किया जाता है तथा नाट्य चिन्हों और गोया द्वारा परिभाषित है।

(28) “यात्री नौका” से ऐसी नौका अभिप्रेत है, जो सामान्यतया मास्त्री या भारसाधक नाविक तथा कर्मियों के अतिरिक्त अन्य व्यक्तियों का वहन करती है।

(29) “पाइलट” से वह व्यक्ति अभिप्रेत है जो तत्समय जलयान को चलाने के लिए तत्समय प्राधिकृत किया गया है।

(30) “पत्तन” से कलकत्ता पत्तन तथा उस तक पहुँचती नाट्य नदियाँ और मार्ग अभिप्रेत है, जहाँ भारतीय पत्तन अधिनियम, 1988 तत्समय प्रवृत्त है।

(31) “समुद्रगामी जलयान” से ऐसे हर वर्णन का जलयान अभिप्रेत है, जिसका प्रयोग समुद्र नौवहन में किया जाता है या जिसे सक्षम प्राधिकारी द्वारा समुद्रगामी अधिसूचित किया गया है।

(32) “छोटा यान” से ऐसे हर वर्णन का जलयान अभिप्रेत है, जो समुद्रगामी जलयान या अंतर्देशीय जलयान नहीं है जिसका प्रयोग जलमार्ग द्वारा मानव या संपत्ति के परिवहन के लिए किया जाता है।

(33) “अधीक्षक नौका रजिस्ट्रीकरण” से ऐसा अधिकारी अभिप्रेत है, जिसे निदेशक नौ विभाग के पर्यवेक्षण के अधीन ऐसी सभी नौकाओं/प्लेटों के जो पत्तन के भीतर या भागतः भीतर चलने वाले अंतर्देशीय जलयान नहीं हैं रजिस्ट्रीकरण अनुज्ञापन सर्वेक्षण तथा सभी अन्य महत्वपूर्ण क्रियाकलापों का भारसाधक ग्रहण करने के लिए नियुक्त किया गया है।

(34) “अधीक्षक सूखा डाक” से ऐसा अधिकारी अभिप्रेत है, जिसे सूखे डाकों का भार ग्रहण करने के लिए नियुक्त किया गया है।

(35) “टन” से फ्रैट या नौकाओं के अनुज्ञापन और विनियमन के नियमों के सिवाय जहाँ टन से नियम 71 के उपबंधों द्वारा यथा अवधारित टन अभिप्रेत है, भारतीय पोतों के टनभार के मापमान को विनियमित करने के लिए तत्समय प्रवृत्त नियमों द्वारा अवधारित या अवधार्य टन अभिप्रेत है।

(36) “यातायात प्रबन्धक” से ऐसा अधिकारी अभिप्रेत है, जिसे यातायात विभाग का भारसाधन ग्रहण करने के लिए केन्द्रीय सरकार द्वारा नियुक्त किया गया है।

(37) “न्यासियों” से कलकत्ता पत्तन बोर्ड के सदस्य अभिप्रेत हैं।

(38) “जलयान” के अंतर्गत सी-प्लेन/हाइड्रोपायल/होवर-क्राफ्ट से भिन्न प्रत्येक वर्णन का वाटर क्राफ्ट भी है, जिसका उपयोग जल परिवहन के लिए किया जाता है या जो उस काम में उपयोग किए जाने के लिए उपयुक्त है।

(39) “कार्यरत जलयान” से ऐसा जलयान अभिप्रेत है जो लंगर पर या समुद्र तट या एग्राउंड में बंधा हुआ नहीं है।

3. लागू होना.— ये नियम जब तक कि अन्यथा उल्लिखित न हों कलकत्ता पत्तन के भीतर लागू होंगे।

समुद्रगामी जलयानों से संबंधित इन नियमों के उपबंध सी-प्लेन/हाइड्रोपायल पर भी लागू होंगे किन्तु जहाँ उनके विशेष मन्तिमार्ग के कारण सी-प्लेन/हाइड्रोपायल के लिए प्रकाश तथा आकार से संबंधित शर्तों का पूर्ण रूप से पालन करना संभव नहीं है वहाँ जहाँ तक संभव है, इनका पालन किया जाएगा। इन नियमों की किसी बात से निम्नलिखित उपबंधों पर कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा :—

(i) पेट्रोलियम अधिनियम, 1934 (1934 का 30) के अधीन कोई नियम।

(ii) नाव्य जल पथ बाधा अधिनियम, 1881 (1881 का 16) के अधीन बनाए गए नियम।

(iii) अंतर्देशीय वाष्प जलयान अधिनियम, 1917 (1917 का 1) के अधीन बनाए गए कोई नियम।

(iv) हावड़ा हेतु अधिनियम, 1926 (1926 का बंगाल अधिनियम, 4) के अधीन बनायी गयी कोई विधियाँ/विनियम/नियम।

(v) महापत्तनन्यास अधिनियम, 1963 (1963 का 38) के अधीन बनाई गयी कोई उपविधियाँ/विनियम।

(vi) पर्यावरण (संरक्षण) अधिनियम, 1986 (1986 का 29) के अधीन बनाए गए नियम/विधियाँ/उपविधियाँ।

अध्याय—2

समुद्रगामी जलयानों के लिए नियम

4. गतिविधि पर निर्वहन समुद्र में टकराव से बचाव :—

(1) निदेशक, नौ विभाग या यातायात प्रबन्धक या बन्दरगाह मास्टर (पत्तन) या महाप्रबन्धक (प्रचालन) या प्रबन्धक (नौ प्रचालन) द्वारा आदेश दिए जाने पर सभी जलयान पत्तन के किमी वर्ग, मूरिंग या एंकारेज सेवा की ओर हट जाएंगे परन्तु यह तब जबकि मार्टन हाऊस बिन्दु से नीचे सभी समुद्रगामी जलयान निदेशक, नौ विभाग या यातायात प्रबन्धक या बन्दरगाह मास्टर (नदी) के आदेश पर ही नदी पर आगे या पीछे बढ़ेंगे।

(2) हुगली नदी पर नौ यात्रा करने वाले सभी जलयान समुद्र में टकराव से बचने के लिए ऐसे अंतर्राष्ट्रीय नियमों द्वारा जो हुगली नदी में नौ यात्रा करने के लिए न्यासियों द्वारा विहित स्थानीय नियमों के अनुसार उपांतरित या जोड़े गए हों, शासित होंगे।

(3) उपनियम (2) में वर्णित नियमों की प्रतिलिपि के लिए कोई भी पोत स्वामी बन्दरगाह मास्टर (पत्तन) या बन्दरगाह मास्टर (नदी) को आवेदन कर सकेगा।

5. बर्थ और मूरिंग का विनियमन/पाइलट अथवा अन्य प्राधिकृत अधिकारी के बिना गतिविधि पर प्रतिबंध.—(1) सभी समुद्रगामी जलयान यातायात प्रबन्धक निदेशक नौ विभाग, बन्दरगाह मास्टर (पत्तन) या प्रबन्धक (नौ प्रचालन) द्वारा निर्धारित बर्थ या मूरिंग अथवा निर्धारित स्थान ग्रहण करेंगे तथा किसी बर्थ मूरिंग या स्थान से किसी अन्य बर्थ, मूरिंग या स्थान पर पत्तन के सम्यक् रूप से प्राधिकृत किसी अधिकारी के निदेश तथा भारमाधन में ही जाएंगे।

(2) कोई भी समुद्रगामी जलयान पाइलट या बर्थिंग मास्टर या सम्यक् रूप से प्राधिकृत अधिकारी को फलक पर लिए बिना डाक के अन्दर या बाहर या उसके भीतर अथवा एक से दूसरे जेट्टी/बर्थ/मूरिंग/गंकारेज पर नहीं जाएगा जब तक इसके लिए भारतीय पत्तन अधिनियम, 1908 की धारा 31 के उपबंधों के अधीन अभिमूर्ति नहीं दे दी जाती है।

(3) मूरिंग करने या मूरिंग खोलने, चलाने या हटाने के या उसकी स्थिति को विनियमित करने या उसके उपस्कर या गियर को समायोजित करने, उसके स्थोरा के लदान या उतारने के लिए उसकी सुरक्षा तथा वैसे ही अन्य प्रयोजनों के लिए जलयान का मास्टर अथवा स्वामी पत्तन के सम्यक् रूप से प्राधिकृत अधिकारी के सभी विधिपूर्ण निदेशों का पालन करेगा तथा उनके साथ पूर्ण सहयोग से कार्य करेगा।

6. सहायता के लिए आवेदन/जलयान की विनिष्टियां देना.—(1) डाक या मूरिंग में समुद्रगामी जलयानों को खींचने या अन्य किसी प्रकार की सहायता के लिए सभी आवेदन व्यक्तिगत रूप से या विहित प्ररूप में बन्दरगाह मास्टर (पत्तन) या प्रबन्धक (समुद्री प्रचालन) को किए जाएंगे। नदी मार्ग के लिए बन्दरगाह मास्टर (नदी) को अलग से आवेदन/बुकिंग की जाएगी।

(2) समुद्रगामी जलयानों को डाक में लाने या जेट्टी के साथ लगाने से पूर्व, मास्टर या स्वामी या अधिकर्ता विहित प्रयण में जलयान के विस्तार, ड्राफ्ट, टनभार और उपकरण के विशेष लक्षण या सज्जिर्माण संबंधी पूर्ण विनिष्टियां यातायात प्रबन्ध, बन्दरगाह मास्टर (पत्तन) या प्रबन्धक (नौ प्रचालन) या पत्तन के किसी अन्य सम्यक् रूप से प्राधिकृत अधिकारी को देगा।

7. टगों का प्रयोग/लंगरों का प्रयोग.—(1) समुद्रगामी प्रत्येक जलयान जो पत्तन के अन्दर या नदी की नाव्य

जलसारणियों में संचालित होना चाहता है, अपनी आवश्यक सुरक्षा के लिए उस प्रयोजनार्थ वैसे टग का प्रयोग करेगा जो बन्दरगाह मास्टर (पत्तन), बन्दरगाह मास्टर (नदी) या प्रबन्धक (नौ प्रचालन) या भारमाधक पाइलट को राय में आवश्यक हो।

(2) गार्डेनरीच त्रिन्दु पर जलयान का भार ग्रहण करने से पूर्व पाइलट अपना यह समाधान करेगा कि प्रयोग में आने वाले दो बाधर लंगर उपयोग के लिए तैयार हैं तथा तीसरा लंगर डेक पर इस स्थिति में होगा, जिसे आवश्यकता पड़ने पर उसे प्रयोग में लाया जा सके। पाइलट अपना यह भी समाधान कर लेगा कि प्रत्येक बाधर लंगर में पर्याप्त केवल लगा हुआ है।

8. जलयानों की शक्ति.—मूरिंग या डाक या जेट्टी बर्थ में अपनी शक्ति में प्रवेश करने या उसे छोड़ने/प्रस्थान करने वाले प्रत्येक समुद्रगामी जलयान का मास्टर, आवश्यकता-नुसार आगे जाने के लिए इंजनों को पूर्ण गति से कार्य करने के लिए पर्याप्त शक्ति के, रख-रखाव के लिए जिम्मेदार होगा।

9. मूरिंग का प्रयोग.—निदेशक, नौ विभाग या बन्दरगाह मास्टर (पत्तन) या प्रबन्धक (नौ प्रचालन) की अनुज्ञा के बिना कोई भी समुद्रगामी जलयान स्थिर या झूलते किसी मूरिंग का प्रयोग नहीं करेगा।

10. झूलते मूरिंग पर जलयान :—15 जून से लेकर 31 अक्तूबर तक झूलते मूरिंग पर प्रत्येक समुद्रगामी जलयान को अपने बाधर चेत के अतिरिक्त मूरिंग के रिंग के साथ एक अच्छे हाजर के किनारे से भी बांधना होगा।

11. नौ पर लंगर.—रास्ते में या धारा में रहते समय या मूरिंग से लगा हुआ प्रत्येक समुद्रगामी जलयान कम से कम नौ पर एक लंगर डाले रहेगा जिस पर एक केबल मुड़ा हुआ होगा, जिसे अन्य सूचना पर भी छोड़ा जा सके।

12. जलयानों का मूरिंग करना.—कोई भी व्यक्ति किसी भी समुद्रगामी जलयान का मूरिंग निदेशक, नौ विभाग या बन्दरगाह मास्टर (पत्तन) या प्रबन्धक (नौ प्रचालन) द्वारा विहित रीति में ही करेगा अन्यथा नहीं या अत्यधिक खिचाव को सहज करने या अपनी मूरिंग पर अत्यधिक ढीला होने से बचाव के प्रयोजन के सिवाय या ऐसे अधिकारियों की अनुज्ञा के बिना किसी भी समुद्रगामी जलयान की मूरिंग को परिवर्तित नहीं करेगा।

13. लंगर डालने पर प्रतिबंध.—पाइलट या बन्दरगाह पाइलट जलयान के फलक पर न होने से कोई भी समुद्रगामी जलयान निदेशक, नौ विभाग, या बन्दरगाह मास्टर (पत्तन) या बन्दरगाह मास्टर (नदी) या प्रबन्धक (नौ प्रचालन) के प्राधिकार के बिना पत्तन में लंगर नहीं डालेगा।

14. बोर टाइड के लिए सावधानियां : जब बोर टाइड आने की संभावना हो तब धारा के मूरिंग में लगा प्रत्येक समुद्रगामी जलयान :—

- (क) वह अपने श्रेष्ठ हाजर को फ्लड मूरिंग या मूरिंग के निकट अपनी जंजीर में बांध देगा और पर्याप्त खिन्नाव सहित उसे कस देगा जिससे बोर आने पर जंजीर तथा ब्रिड्ज को झटका न लगे।
- (ख) निदेशक, नौ विभाग या बन्दरगाह मास्टर (पत्तन) आवश्यकतानुसार बोर एंकर मूरिंग का कार्य ले लेगा।
- (ग) आपातकाल में तत्काल प्रयोग के लिए उसके मुख्य इंजन अभिचालन गोयर, बेलग-वरखा तथा विन्च में हमेशा विद्युत् प्रवाह तैयार रखेगा।
- (घ) बोर टाइड के बढ़ने की संभावना पर कोई भी व्यक्ति न पानटून पर आएगा और न ही वहां ठहरेगा।

15. पानटून की बगल में जलयानों का न रहना : माल को चढ़ाने और उतारने या यात्रियों के आगोहण या अवरोहण के प्रयोजन के सिवाय कोई भी जलयान पानटून के बगल में नहीं रहेगा।

16. इंजन की जांच: कोई भी समुद्रगामी जलयान जो डाक के मूरिंग में है या धारा में या डाक बर्थ में रुका है वह अपने नजदीकी सभी नौकाओं को पर्याप्त चेतावनी दिए बिना नौदक नहीं धुमाएगा। और जब तक कि पाईलट या बर्थिंग मास्टर इंजन की जांच के दौरान फलक पर न हो नौदक को प्रत्येक दिशा में अग्नि धीमी गति पर थोड़े समय के लिए चलाया जा सकता है। पाईलट या बर्थिंग मास्टर के निर्देशों के अधीन के सिवाय बहुत अल्प अवधि के लिए की गयी कोई भी जांच अग्नि धीमी गति में अधिक पर नहीं की जाएगी।

17. इंजन को विखंडित करना :— निदेशक, नौ विभाग या बन्दरगाह मास्टर (पत्तन) या यातायात प्रबन्धक या प्रबन्धक (नौ प्रचालन) की अनुज्ञा के बिना कोई भी समुद्रगामी जलयान अपने इंजन को विखंडित नहीं करेगा और न ही स्वयं को गतिविधि के अयोग्य प्रस्तुत करेगा।

18. तूफान सकेत : जब 15 स्टैंड रोड के न्यायी कार्यालय के ध्वजदण्ड पर खिदिरपुर डाक के प्रवेश में क्लाक टावर के ध्वजदण्ड पर, तथा बन्दरगाह पायलट के घर के ध्वजदण्ड पर अथवा बजवज के पाईलट या पत्तन के किसी प्राधिकृत स्थान पर VIII, IX अथवा X संख्या का तूफान संकेत लगाया जाएगा, सभी समुद्रगामी जलयानों के मास्टर तुरन्त अपने जलयानों को सुरक्षित तथा कसकर बांधने के लिए सभी सावधानियों को अपनाएंगे तथा विशेष रूप से जान के लिए एक दूसरा लगर तैयार रखेंगे।

19. जलयानों के लिए कर्मीदल: नियम 21, 22, 23, 24 और 25 के उपबंधों के अधीन रहते हुए पत्तन के सभी समुद्रगामी जलयानों के फलक पर अपनी सुरक्षा सामान्य गतिविधि और किसी आपात स्थिति के लिए किसी आवश्यक कार्य को करने के लिए पर्याप्त संख्या में कर्मीदल होंगे।

20. दोहरी बैकिंग : समुद्रगामी सभी जलयान जो डाक के बर्थ किए हुए हैं चाहे वह कबबर्थ के बगल में हों अथवा थोया में, अल्प सूचना पर भी अपने बगल में दूसरे जलयानों को ग्रहण करने के लिए तैयार रहना चाहिए।

जलयानों की सुरक्षा के लिए बर्थ में पहले से स्थिर जलयान आते हुए जलयान के लिए सभी सुविधाएं उपलब्ध करवाएगा।

21. न्यूनतम कर्मीदल के लिए अनुज्ञप्ति : जब भी कोई समुद्रगामी जलयान किसी बर्थ या मूरिंग पर ठहरा हो जो उसे विशेष रूप से उसी प्रयोजन के लिए आवंटित किया गया हो, तब न्यायियों के लिए अध्यक्ष द्वारा विधिसम्मत रूप में साक्षर से अनुसूची के प्ररूप "क" में निर्धारित अवधि के लिए अनुज्ञप्ति प्रदान करंगा विधिपूर्ण होगा। जिसमें जलयानों को अनुज्ञप्ति में विनिर्दिष्ट न्यूनतम कर्मीदल सहित बर्थ या मूरिंग में जलयानों को ठहरने के लिए प्राधिकृत किया जा सके।

22. अनुज्ञप्ति का प्रतिसंहरण : अनुसूची के प्ररूप "ख" में, प्ररूप "क" की उपरोक्त अनुज्ञप्ति को प्रति-संहृत करना भी अध्यक्ष के लिए विधिपूर्ण होगा और ऐसे प्रतिसंहरण के पश्चात जो ऐसे जलयान के किसी सहजदृश्य भाग पर उसकी प्रति चिपका कर किया जाएगा, नियम 19 के उपबंध वैसे ही लागू होंगे माना ऐसी कोई अनुज्ञप्ति कभी प्रदान ही न की गई हो।

23. कर्मीदल के बिना ठहरने की अनुज्ञप्ति : जब भी अध्यक्ष को यह प्रतीत हो कि कोई संकरी खाड़ी, नदी या डाक इस प्रकार स्थित है कि कर्मीदल के बिना समुद्रगामी जलयान पत्तन के किसी भाग में किसी जलयान को क्षति पहुंचाए बिना उस संकरी खाड़ी, नदी या डाक में तैरता हुआ रह सकता है तो अध्यक्ष के लिए यह विधिपूर्ण होगा कि वह अनुसूची के प्ररूप "ग" में नियम 19 के उपबंधों में ऐसे किसी जलयान को छूट देते हुए अनुज्ञप्ति जारी कर सकता है और यदि वह ठीक समझे तो पूर्वोक्त अनुज्ञप्ति को प्रति-संहृत कर सकता है या समय-समय पर उसका संशोधन कर सकता है।

24. धूम्रपान : कोई भी व्यक्ति समुद्रगामी जलयान के डेक के बीच या किसी बन्द जगह पर जहां भंडार, स्थोरा या ज्वलनशील पदार्थ रखा हो धूम्रपान नहीं करेगा और न ही किसी भी प्रकार खुली आग का प्रयोग करेगा।

25. प्रकाश निदेशक, नौ विभाग या महाप्रबन्धक (प्रचालन) की अनुज्ञा के बिना कोई भी समुद्रगामी जलयान

विद्युत प्रकाश से भिन्न अन्य किसी बत्ती का प्रयोग नहीं करेगा, परन्तु यह कि आपात नौ संचालन या राईडिंग रोशनी के लिए वह नियम लागू नहीं होगा।

26. आग : समुद्रगामी जलयान पर रसोई पर या ठीक से निमित्त अंगीठी में ही आग जलवाने की अनुमति होगी

27. अतिशबाजी : सभी समुद्रगामी जलयानों पर आतिशबाजी प्रतिनिषेध है।

28. अग्निशमन के उपाय : किसी जलयान पर आग लग जाने से, आसपास के बर्थ या मूरिंग के समुद्रगामी जलयान के मास्टर अपने सायबान खोल देंगे, अपने पम्प और हौज को प्रयोग के लिए तैयार रखेंगे तथा अपने केबल और हाजर को सरकाने के लिए तैयार रखेंगे।

29. जलयान से बहिर्वेशन : सभी समुद्रगामी जलयान डाक या जेट्टी में या उससे जाते हुए अपनी नौकाओं को अन्दर की तरफ रखेंगे और दीवार, पातधाट या जेट्टी या धाट उपस्कर से टकरा सकने वाले बहिर्वेशन को हटा लेंगे।

30. उपस्कर का बहिर्वेशन : गार्डन हाउस विन्दु के आगे कोई भी समुद्रगामी जलयान अपने बगल से लंगर भस्तूल या अन्य उपस्कर का बहिर्वेशन को हटा लेंगे/नहीं रखेंगे जो दूसरे जलयान को क्षतिकारित कर सकते हैं।

31. हानिकारक अपशिष्ट / गंधगी / कूड़ाकरकट का विसर्जन : कोई भी व्यक्ति (क) नदी या डाक में जानबूझकर पेट्रोलियम या अन्य ज्वलनशील द्रव को विसर्जित नहीं करेगा।

(ख) हानिकारक प्रकृति का कोई द्रव या कोई गन्दगी या कूड़ाकरकट जानबूझकर नदी के पानी या किसी डाक में नहीं फेंकेगा।

32. पर्यावरण की सुरक्षा : (1) कोई भी व्यक्ति (क) जो कंकड़/कूड़ाकरकट/स्थोरा/पदार्थ वस्तु द्रव जो पर्यावरण के लिए हानिकारक हो या नदी में गिरने के बाद नौबहन को क्षति पहुंचा सकता है किसी भी क्वे/पोतधाटा/जेट्टी/जलयान पर ऐसा कंकड़/कूड़ाकरकट/स्थोरा/माल/प्रदार्थ/वस्तु/द्रव इस प्रकार नहीं रखेगा जो पानी में गिर सकता है।

(ख) इस नियम में उपनियम (1) निर्दिष्ट कंकड़/कूड़ा करकट/स्थोरा/माल/पदार्थ/वस्तुओं को पोतधाट, धाट, जेट्टी या जलयान के डाक या नदी में गिराने/फेंकने की अनुज्ञा नहीं देगा।

(2) किसी ऐसे जलयान का मास्टर जिससे यथा-पूर्वोक्त कोई स्थोरा/माल/वस्तु/पदार्थ/बीज डाक या नदी में डाल दी या फेंक दी गयी है या गिर गयी है तो वह इस घटना की विशिष्टियों की पूर्ण रिपोर्ट यथास्थिति डाक मास्टर या बन्दरगाह मास्टर (पत्तन) या प्रबन्धक (नौ प्रचालन) को प्रस्तुत करेगा।

33. सीटी बजाना : कोई भी समुद्रगामी जलयान, हुगली नदी के लिए यथा उपांतरित समुद्र में टकराव से बचने के लिए अंतर्राष्ट्रीय नियमों के अनुसार ही सीटी या सायरन बजाएगा अन्यथा नहीं परन्तु कोई भी समुद्रगामी जलयान निरंतर सीटी या सायरन नहीं बजाएगा।

34. ब्लू पीटर : ऐसा प्रत्येक समुद्रगामी जलयान जो पत्तन छोड़ने वाला है मूरिंग छोड़ने के पहले दिन प्रातः छह बजे जलयान के सामने वाले भाग में ब्लू पीटर फहराएगा और जब तक पाईलट जलयान को समुद्र में ले जाने का कार्यभार नहीं ले लेता तब तक वह फहराया जाता रहेगा परन्तु यह नियम युद्ध की स्थिति में लागू नहीं होंगे।

35. अंतर्राष्ट्रीय कोड झंडा "ए" : प्रत्येक समुद्रगामी जलयान मूरिंग ३ प्रवेश करते समय या जेट्टी जाने समय अपने ट्राफिक ठहराव पर अंतर्राष्ट्रीय कोड झंडा "ए" फहराएगा और इसे तब तक फहराता रहेगा जब तक बन्दरगाह पाईलट या भारसाधक पाईलट को यह लगे कि अनर्देशीय जलयान या छोटे क्राफ्ट सुरक्षा पूर्वक बगल में आ सकते हैं और झंडा उतारने का आदेश न दे।

36. निजी संकेतों का निषेध : निदेशक, नौ विभाग या बन्दरगाह पाईलट या महाप्रबन्धक (प्रचालन) या भारसाधक पाईलट के प्राधिकार के बिना किसी समुद्रगामी जलयान द्वारा संकेतों के अंतर्राष्ट्रीय संकेत संहिता द्वारा प्राधिकृत संकेतों के अलावा कोई संकेत नहीं फहराए जाएंगे।

37. सांकेतिक प्रकाश : प्रत्येक समुद्रगामी जलयान समुद्र में टकराव से बचने के लिए अंतर्राष्ट्रीय नियमों की अपेक्षा नुसार अंधेरे और सूर्योदय के मध्य प्रकाश प्रदर्शित करेगा भारसाधक पाईलट के निदेशों के बिना अन्य कोई भी सांकेतिक प्रकाश प्रदर्शित नहीं किया जाएगा।

38. सर्व लाईट का प्रयोग : निदेशक, नौ विभाग बन्दरगाह मास्टर (पत्तन) या बन्दरगाह पाईलट या भारसाधक पाईलट या प्रबन्धक (नौ प्रचालन) के निदेशों के बिना पत्तन के अन्दर किसी समुद्रगामी जलयान द्वारा सर्व लाईट का प्रयोग प्रतिषिद्ध है।

39. खिंचने/धक्का देने समय प्रकाश का प्रदर्शन : समुद्रगामी जलयानों को खींचते/धक्का देने समय समुद्र में टकराव से बचने के लिए अंतर्राष्ट्रीय नियमों द्वारा जो प्रवृत्त हैं समय-समय पर संशोधित किए गए हैं, ऐसे जलयानों के लिए विहित प्रकाश/आकृति प्रदर्शित करेगा।

40. समुद्रगामी जलयान के प्रकाश से टगों के प्रकाश में हस्ताक्षेप न होना : प्रत्येक समुद्रगामी जलयान पत्तन में बगल के टग को खिंचने समय अपने प्रकाश वृत्ता देगे जिससे टगों द्वारा प्रदर्शित प्रकाश की दृश्यता में हस्ताक्षेप न करें।

41. खिंचाव के समय प्रकाश : पत्तन में समुद्रगामी जलयान अन्य समुद्रगामी जलयान द्वारा खिंचे जाते समय—

(क) सामने से खिंचते समुद्र में टक्कर से बचाव अंतर्राष्ट्रीय नियमों के अनुरूप विहित प्रकाश प्रदर्शित करेंगे,

(ख) अपने बगल में खिंचते समय खिचाव के दूसरे वाले तरफ के प्रकाश प्रदर्शित करेंगे।

42. पत्तन में टग के सहित खिंचे जाते समय समुद्रगामी जलयान नियम 41 के खण्ड (ख) में वर्णित अतिरिक्त मफेद प्रकाश वहन नहीं करेंगे।

43. भूयस्त जलयान और लंगर में जलयान के लिए प्रकाश—(1) पत्तन में भूयस्त जलयान या नदी को नाव्य जलसरणी में प्रत्येक समुद्रगामी जलयान समुद्र में टकराव से बचने के लिए अंतर्राष्ट्रीय नियमों के अनुसार जो प्रवृत्त है समय-समय पर संशोधित किए गए हैं। प्रकाश/श्राकृति प्रदर्शित करेंगे।

(2) एन्कर पर लगे जलयान द्वारा समुद्र में टकराव से बचने के लिए अंतर्राष्ट्रीय नियमों के अनुसार जिस काले बाल (ब्लैक बाल) को प्रदर्शित करना आवश्यक है, किसी भी जलयान द्वारा साउगर रोड्स या रविन्दर सेतु के बीच नहीं डोया जाएगा।

(3) तीव्र गति से जाते हुए भार लिए हुए प्रत्येक जलयान द्वारा अग्रिमस्तूल पर कालाबाल या संकेत याईमेन का सिरा दिखाया जाएगा। जलयान का इंजन जब कम गति में चल रहा है या जलयान जब युक्तियालन कर रहा हो तब काल आधी उंचाई तक प्रदर्शित किया जाएगा। सागर रोड्स तथा रवीन्द्र सेतु के बीच बाल का प्रयोग अनिवार्य है और साऊर रोड्स के बाद यह वैकल्पिक है।

44. दुर्घटना के लिए पूर्वावधानी प्रत्येक समुद्रगामी जलयान का मास्टर गार्ड लगाकर या अन्यथा सभी आवश्यक पूर्वावधानियां बरतेगा जिससे जलयान के किसी भी भाग से भाप, तेल या पानी निकलने से किसी व्यक्ति को चोट या संपत्ति को क्षति न पहुंचे।

45. फलका मुख तथा कड़ी को कसना—किसी समुद्रगामी जलयान के डेक पर या नीचे अपने फलका मुख से उसमें स्थोरा लादते या उनारते समय, देशांतरीय (आगे या पीछे) और आड़े कड़ी और फलका मुख के ढक्कन को कसकर बांधना चाहिए जिससे यह खार या जलयान पर न गिरे।

46. कर्मचारियों की सुरक्षा—समुद्रगामी जलयान का मास्टर जिने निल, बायलर या दोहरे पेंछे में कार्य करवाने की आवश्यकता हो तो वहां कर्मकार भोजन से पूर्व वहां की कार्य परिस्थिति की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए सभी पूर्वावधानियां बरतेंगा।

अध्याय : 3

अंतर्देशीय जलयानों के नियम

47. व्यापक नियम—नियम 9, 10, 11, 24, 25, 26, 27, 28, 33, 41 और 43 के उपबंध अंतर्देशीय जलयानों पर उसी प्रकार लागू होंगे जैसे वे समुद्रगामी जलयानों के संबंध में लागू होते हैं।

48. नाव्य जलसरणी—प्रत्येक अंतर्देशीय जलयान का नौ परिवहन इस प्रकार किया जाएगा जिससे कि नाव्य जलसरणी समुद्रगामी जलयानों के लिए खली रहे।

49. बर्थ और मूरिंग का विनियमन—प्रत्येक अंतर्देशीय जलयान, पत्तन के सम्यकतः प्राधिकृत अधिकारी द्वारा ऐसी निदेश दिए जाने पर, किसी बर्थ, मूरिंग या स्थान पर रुकना या एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाएगा।

50. लंगर डालना—कोई भी अंतर्देशीय जलयान ऐसी स्थिति में या ऐसी रीति में लंगर नहीं डालेगा जिससे कि नाव्य जलसरणी में किसी समुद्रगामी जलयान को बाधा उत्पन्न हो।

51. संचलन पर निर्वन्धन—जब अंतर्राष्ट्रीय कोड फ्लेग “ए” किसी समुद्रगामी जलयान के द्वारा टाएटिक स्टे पर फहरा रहा हो, जब कोई अंतर्देशीय जलयान किसी प्रयोजन के लिए किसी समुद्रगामी जलयान के साथ-साथ अग्रसर नहीं होगा।

52. मार्गी का विनियमन—झाली पर विवेकानन्द पुल के नीचे से गुजरने वाला प्रत्येक अंतर्देशीय जलयान, उत्तर से दक्षिण की ओर जाते समय, स्तंभ संख्या—2 तथा 3 के बीच से जाएगा और दक्षिण से उत्तर की ओर जाते समय स्तंभ संख्या—3 और 4 के बीच से जाएगा।

53. प्रतिपिद्ध लंगर डालना—कोई भी अंतर्देशीय जलयान निम्नलिखित में लंगर नहीं डालेगा :—

(क) लोअर कालेज मैड बोया तथा अपर पंच पारा फलैट बोया के बीच गार्डन रीच में; या

(ख) फोर्ड ग्लोस्टर बोया और कलकत्ता पत्तन के दक्षिणी सीमा स्तंभों के बीच बज बज रीच में;

(ग) हल्दिया नदी और बलारी टायर के बीच हल्दिया रीच में;

(घ) प्राण नाथ राय चौधरी घाट के उत्तर में खीची रेखा से दाएं किनारे के 250 फुट उत्तर में चुन्नी मल खेदी घाट और बाएं तट पर काशीपुर गन गुंड ग्रेन फैक्ट्री के उत्तरी छोर से खीची गयी रेखा से दाएं तट पर 700 फीट दक्षिण में गार्डनर हाउस के बीच कौमीपुर से बाली के क्षेत्र में;

(ङ) जगन्नाथ घाट के उत्तर में 950 फीट से बाएं तट पर टीटागढ़ जूट मिल के घाट से 125 फीट उत्तर तक खीची गयी रेखा और दाएं तट के जगन्नाथ घाट के दक्षिण में 700 फीट से बाएं तट पर खड़दाह जूट मिल की उत्तरी जैट्टी के उत्तर में 300 फीट बिन्दु तक खीची गयी रेखा के बीच खड़दाह से बैरकपुर क्षेत्र में;

(च) दाएं तट पर द्वारगामनी घाट के 350 फीट दक्षिण से बाएं तट पर गस्तीटोला घाट के 1200 फीट उत्तर बिन्दु तक खींची गई रेखा और दाएं तट पर चरबिंदी घाट के 350 फीट उत्तर से बाएं तट पर हरीश बशु घाट,

श्याम नगर के 850 फीट उत्तर तक खींची गयी रेखा के बीच ईचापुर से श्याम नगर क्षेत्र में;

54. अबाध मार्ग छोड़ना—लंगर में या मार्ग में प्रत्येक अंतर्देशीय जलयान हर समय प्रस्तुतों जैटियों, माल उतराई स्थानों, घाटों, बोया, डाकों का और मूरिंगों के लिए पर्याप्त खुला अबाध मार्ग छोड़ेगा।

55. नौ परिवहन नियम हुगली नदी में नौ परिवहन करने वाले अंतर्देशीय जलयान सभी समय पर निम्नलिखित रूप में नौ परिवहन करेंगे।

(क) कालेज सैंड के छोर पर खिदिरपुर डाक नेताजी मुभाप डाक के, बीच, परन्तु ऐसा कोई अंतर्देशीय जलयान जो किसी फलेट या फलेटों को खींच रहा हो, जब सूर्यास्त और सूर्योदय के बीच किसी चढ़ती ज्वार पर आ रहा हो नेताजी मुभाप डाक के ऊपर तब तक अग्रसर नहीं होगा जब तक ज्वार उतर न जाए ;

(ख) नेताजी मुभाप डाक और राजाबागान फेरी स्टेशन के बीच या तो दाएं तट के निकट या नदी के बाएं तट के निकट मूरिंगों की वाह्य रेखा तक : परन्तु स्टर्न वहीलर, लांच, टग या फेरी स्टीमर से भिन्न प्रत्येक अंतर्देशीय जलयान जो किसी अन्य फ्राफ्ट को नहीं खींच रहा हो जब समुद्रगामी जलयान मार्ग में हो और कालेज सैंड पर या तो चढ़ती ज्वार पर या उतरती ज्वार पर मुड़ने वाला हो, यदि वह समुद्रगामी जलयान से ऊपर है और यूनिथन साउथ जूट मिल से दूर है, यदि वह उनके नीचे है तब उस समय तक जब तक समुद्रगामी जलयानों में घूमने का अव्यय पूरा न कर लिया हो;

(ग) संत्राल सैंड के छोर पर राजाबागान फेरी स्टेशन और अकरा सेमाफोर के बीच ;

(घ) मूर्तीखाली सैंड के छोर पर अकरा सेमाफोर और पीर सरांग मकबरे के बीच ;

(ङ) कोफ़ी सैंड के छोर पर पीर से रांग मकबरे और बज बज के उत्तरी सिरे के बीच ;

(च) बज बज सैंड के छोर पर नदी के दाएं किनारे के निकट बज बज के उत्तरी सिरे और प्रेमचंद जूट मिल के बीच, परन्तु फोर्ट ग्लोस्टर फलेट बोया और लोयियान जूट मिल के बीच, स्टर्न वहीलर, लांच टग या फेरी स्टीमर से भिन्न कोई अंतर्देशीय जलयान जो किसी अन्य फ्राफ्ट को नहीं खींच रहा हो, जल सरणी में उस समय नौपरिवहन नहीं करेगा जब समुद्रगामी जलयान या तो चढ़ते ज्वार या उतरते ज्वार पर मुड़ रहे हों या मुड़ने वाले हों।

(छ) अछीपुर सैंड के छोर पर, प्रेमचंद जूट मिल और मोयापुर बार के उपरी सिरे के बीच,

(ज) मोयापुर बार पर, उथला मार्ग,

(झ) रोयापुर सैंड के छोर पर रोयापुर रीच में,

(ञ) रोयापुर बार पर, उथला मार्ग,

(ट) बुल सैंड के छोर पर बुल रीच में ,

(ठ) पुल्टा सैंड के छोर पर फिशरमैन और फुल्टा रीचों में ,

(ड) शिपगंगेसैंड के छोर पर नीनान रीच में ,

(ढ) तुरपुर रीच और जेम्स एंड मेरी, पश्चिमी तट के परिमुर में, परन्तु 15 अगस्त और 1 दिसम्बर के बीच व उतरते ज्वार के दौरान पूर्वी तट में नौ परिवहन कर सकेंगे।

(ण) हुगली बिन्दु से अस्पताल बिन्दु तक, हुगली सैंड के उपर नदी का बोया तट,

(न) अस्पताल बिन्दु से सिल्वर टी बिन्दु तक, नदी का बायां तट,

56. रबीन्द्र सेतु से नीचे लफ प्वाइंट तक और उसे सम्मिलित करते हुए अंतर्देशीय जलयान, जो नाव्य जन सरणी के एक और से दूसरी ओर पार करने हैं या पार करने का आशय रखते हैं, किसी ऐसे समुद्रगामी जलयान के मार्ग में बाधा नहीं डालेगा या दुर्घटना का जोखिम पैदा नहीं करेंगे जो उस समय पार पथ का प्रयोग कर रहे हों, अपितु वे अपनी गति कम करेंगे, रुकेंगे या पीछे की ओर जाएंगे और यदि आवश्यक हुआ तो मुड़ जाएंगे।

57. गति पर निर्बंधन—(1) बाहर जाने वाले जलयान बज बज और कोफ़ी रीच में मधुचक्र मार्ग के निकट आने पर अपनी गति को पानी में छह नाट तक घटा देंगे और यह गति जलयान के बज बज पर लॉन्गर फिनिंग मार्क से गुजरने तक बढ़ाई नहीं जाएगी।

अन्दर आने वाले जलयान बज बज रीच में ऊपर बज बज सैंड बोया के निकट आने पर पानी में अपनी गति छह नाट तक घटा लेंगे और अपनी गति तब तक नहीं बढ़ाएंगे जब तक वे फोर्ड ग्लोस्टर कालम से गुजर न जाएं।

परन्तु, तथापि, यदि छह नाट पर वह जलयान प्रक्षाल करता है जिसे कि बज बज मूरिंग में अन्य जलयानों को अपने मूरिंग केवलों पर रुकना पड़ता है तो गति को और कम किया जाएगा।

(2) कोई भी जलयान बज बज तेल मूरिंग के बाहर किसी अन्य जलयान के आगे नहीं निकलेगा।

(3) कोई जलयान हल्दिया तेल जेट्टी से छह नाट से अधिक की गति पर या ऐसी गति पर जिससे कि हल्दिया तेल जेट्टी के साथ जलयान को रुकना पड़े, नहीं गुजरेगा।

58. नदीपुर के दौरान लंगर खोलना — रबीन्द्र सेतु के ऊपर अंतर्देशीय जलयान 15 जून से 31 अक्टूबर, तक ज्वार उतराई की अंतिम चौथाई के दौरान मूरिंग से बाहर नहीं जाएंगे।

59. तूफान संकेत—जब न्यासी कार्यालय 15, स्ट्रैंड रोड पर ध्वज दंड पर खिद्रपुर डाक के प्रवेश में क्लक टावर के ध्वज दंड पर और बज-बज के हारबर पाईलट हाउस के ध्वज दंड पर या पलतन के अन्य प्राधिकृत स्थानों पर तूफान संकेत दिया जाता है तब सभी अंतर्देशीय जलयानों के मास्टर अपने जलयानों के सुरक्षित और कमकर बांधने के लिए अपनी जक्ति के भीतर तुरन्त सभी पूर्वावधानियां अपनाएंगे।

60. अंतर्देशीय जलयान और ज्वार मित्ति :—जब कोई ज्वार मित्ति बन रही हो तब कोई अंतर्देशीय जलयान किसी प्रवाह पटून के साथ-साथ नहीं रहेगा। जब ज्वार मित्ति आने वाली हो तब प्रवाह मय पटून के साथ के किसी अंतर्देशीय जलयान को हटा लिया जाएगा और वह तब तक जलधारा में पड़ा रहेगा जब तक ज्वार मित्ति गुजर न जाए और तब वह, यदि ऐसा अपेक्षित हो, साथ-साथ पुनः अग्रसर हो सकता है।

61. जलयानों के लिए कर्मीदल :—प्रत्येक अंतर्देशीय जलयान के बोर्ड पर पर्याप्त संख्या में कर्मीदल ऐसे कर्तव्यों का पालन करने के लिए होगा जो आपात काल में उसकी सुरक्षा या संचलन के लिए आवश्यक हो जाए।

62. विहित प्रकाश :—प्रत्येक अंतर्देशीय जलयान अंतर्देशीय वाष्प जलयान अधिनियम, 1917 (1917 का 1) के अधीन बनाए गए नियमों में विहित प्रकाश प्रदर्शित करेगा।

63. सर्वलाईट :—अंतर्देशीय जलयान नौपरिवहन, प्रयोजनों के लिए सर्वलाईटों का उपयोग करने के लिए अनुज्ञात है : परन्तु कोई सर्वलाईट किसी भी परिस्थिति में उस दिशा में नहीं होगी जिससे कि मार्ग में आते हुए किसी जलयान के नौपरिवहन में हस्तक्षेप हो।

64. अग्निशमन उपकरण :—प्रत्येक अंतर्देशीय जलयान, अंतर्देशीय वाष्प जलयान अधिनियम, 1917 (1917 का 1) के अधीन बनाए गए नियमों में विहित अग्निशमन उपकरणों को साथ रखेगा।

अध्याय 4

फ्लैटों और नौकाओं के लिए नियम

65. व्यापक नियम :—नियम 9, 10, 11, 27 और 43 के उपबन्ध फ्लैटों और नौकाओं के संबंध में उसी प्रकार लागू होंगे जिस प्रकार वे समुद्रगामी जलयानों के संबंध में लागू होते हैं और नियम 48, 49, 50, 51, नियम 53 का खंड (ग), (घ) और (ङ) नियम 54, 59 और 60

के उपबन्ध फ्लैटों और नौकाओं के संबंध में उसी प्रकार लागू होंगे जिस प्रकार वे अंतर्देशीय जलयानों के संबंध में लागू होते हैं।

66. नौका रजिस्ट्रीकरण और अनुज्ञापन :—कोई भी फ्लैट या नौका पलतन के भीतर या पलतन के भीतर भागत : नियमित रूप से या कभी-कभी चलाई नहीं जाएगी जब तक कि वह विहित फीस का संदाय करने पर रजिस्ट्रीकृत और अनुज्ञापित नहीं की गई है। नौका सर्वेक्षक रजिस्ट्रीकरण के समय उस फ्लैट या नौका पर अपना रजिस्ट्रीकरण संख्यांक और टन भार अंकित करेगा : परन्तु बजरा रजिस्ट्रीकरण नियम, 1952 के अधीन रजिस्ट्रीकरण के लिए अपेक्षित कोई फ्लैट या नौका न्यासी द्वारा तब तक रजिस्ट्रीकृत और अनुज्ञापित नहीं की जाएगी जब तक कि फ्लैट या नौका को रजिस्ट्रीकरण प्राधिकारी, पश्चिमी बंगाल सरकार द्वारा रजिस्ट्रीकृत न किया गया हो और उस पर उक्त बजरा रजिस्ट्रीकरण नियम, 1952 के उपबन्धों के अनुसार रजिस्ट्रीकरण संख्यांक अंकित न कर दिया गया हो और ऐसे फ्लैट या नौका पर न्यासी नौका सर्वेक्षक द्वारा कोई संख्या अंकित नहीं की जाएगी।

67. रजिस्ट्रीकरण के लिए आवेदन :—फ्लैट/नौका के रजिस्ट्रीकरण के लिए प्रत्येक आवेदन लिखित रूप में न्यासी नौका सर्वेक्षण को अनुमूची के प्ररूप "घ" में किया जाएगा जिसके साथ शपथ पत्र और फोटो प्रमाणपत्र होगा और उसमें निम्नलिखित विशिष्टियां होंगी :—

(क) स्वामी का नाम और पता, या कलकत्ता में उसके सम्यकतः प्राधिकृत अभिकर्ता का नाम और पता,

(ख) फ्लैट या नौका का वर्णन, और

(ग) धारित या अपेक्षित अनुज्ञापित स्थोरा या यात्री की प्रकृति।

68. रजिस्ट्रीकरण की रीति :—रजिस्ट्रीकरण के लिए अपेक्षित प्रत्येक फ्लैट या नौका, यदि वह फ्लैट है तो सुविधा-जनक मूरिंग पर रखा जाएगा अथवा यदि वह नौका है तो आउट्रिम घाट में विशेष अनुज्ञापन बोया को नियम 70 के अधीन न्यासी नौका सर्वेक्षण द्वारा मापने के लिए भेजा जाएगा जो अपने द्वारा रखे जाने वाले रजिस्टर में नियम 67 में वर्णित विशिष्टियों को, नियम 70 के अधीन लिए गए सभी सुसंगत मापों के साथ प्रविष्ट करेगा।

रजिस्ट्रीकरण के लिए अपेक्षित प्रत्येक फ्लैट नौका का अनुज्ञापन बोधा पर या किसी सुविधाजनक स्थान पर रजिस्ट्रि निरीक्षण के लिए रखा जाएगा जो कि न्यासी सर्वेक्षक द्वारा विहित फीस का संदाय करने पर किया जाएगा। परन्तु किसी फ्लैट नौका का सर्वेक्षण, विहित फीस का संदाय करने पर, स्वामी की कर्मशाला में किया जा सकेगा।

69. रजिस्ट्रीकरण का रद्दकरण : फ्लैट/नौका का रजिस्ट्रीकरण संख्यांक उस फ्लैट नौका के सम्पूर्ण कार्यकारी जीवन के दौरान अपने पहचान संख्यांक के रूप में प्रवृत्त रहेगा, जब तक कि—

- (क) वह फ्लैट/नौका तीन वर्ष की अवधि के लिए अनुज्ञापित न रहे,
- (ख) फ्लैट/नौका न्यासी नौका सर्वेक्षक द्वारा आगे किसी सेवा के अयोग्य न ठहरा दी जाए,
- (ग) फ्लैट/नौका पर अंकित संख्यांक मिट जाता है और अन्यथा खोजा नहीं जा सकता, और
- (घ) फ्लैट/नौका के आकार में परिवर्तन किया जाता है।

70. मापने की विधि : इन नियमों के प्रयोजन के लिए प्रत्येक फ्लैट नौका—

(i) घन क्षमता के लिए एल × बी × डी × के = घन क्षमता के फार्मूले से मापे जाएंगे, जहां :

एल. स्टेम पोस्ट के अंदर से स्टन पोस्ट के अंदर तक मापी गई मीटरों में लम्बाई है,

बी. सीलिंग पट्टे के भीतर की ओर एक तरफ से दूसरी तरफ तक अथवा प्रेम के अंदर के हिस्से का माप करने पर मीटरों में सर्वाधिक चौड़ाई है,

डी. यह उस रेखा से जो सबसे ऊपर के चालू स्ट्रेक के दोनों ओर एक तरफ से दूसरी तरफ से होकर फर्श सीलिंग फ्लक के ऊपरी भाग तल या फर्श के ऊपरी भाग तक, जो भी कम हो, फैली हुई है, मीटर में मापी जाने वाली अधिकतम गहराई है।

के. फ्लैट नौका के टाइप के आधार पर अविवरित अवलम्बित है तथा निम्नलिखित मापणी से लिया जाता है:—

वर्ग I :—

- (क) फ्लम डेक वाला, वर्गीकार निर्मित तथा खुली हुई नौकाएं और फ्लैट—के = 0.9
- (ख) बाजार नौकाएं जहां सामने तथा पीछे त्रेक 23 सें. मी. से ज्यादा न हो—के = 0.8
- (ग) बाजार नौकाएं जहां सामने तथा पीछे त्रेक 23 सें. मी. से अधिक हो —के = 0.7

वर्ग II

खुली देशी नौकाएं जो निम्नलिखित रूप में ज्ञात हैं—

- (क) जौली नौकाएं अथवा पोकोस के = 0.9
- (ख) होलाहैक्स के = 0.83
- (ग) लस तथा पोन्मबेस के = 0.8
- (घ) डिग्बी, बोलीह तथा ग्रीन नौकाएं के = 0.64
- (ङ) छोट्स के = 0.63

परन्तु मूद्रा नौकाओं के लिए घन क्षमता इसी फार्मूले से मापी जाएगी जहां एल तथा के को उपरोक्तानुसार लिया जाएगा, और

बी. मीटरों में मापी जाने वाली वह चौड़ाई है जिसे सीलिंग फ्लक या फ्रेम के भीतर से, जो भी माप कम हो, पोतों के मध्य डेक बीम के नीचे से मापा जाए।

डी. मीटर में मापे जाने वाली गहराई है जिसे पोतों के मध्य डेकबीज के नीचे से फर्श सीलिंग फ्लक के ऊपरी हिस्से तक या कीवमन के ऊपरी हिस्से तक, जो भी कम हो, मापा जाए,

(ii) फी बोर्ड के लिए—

(क) यदि वह लीह या इस्पात का डैक वाला या खुला फ्लैट या नौका है तो यथास्थिति, निम्नलिखित मापणी के अनुसार जलयान की गहराई (डी) के समरूपी “एफ” 1 या एफ-2, शीर्ष के स्तंभ में अंकों को लेकर, मुधार (सी) का प्रयोग वहां होता है जब लम्बाई (एल) गहराई के समरूप नहीं है।

डी मी.	एल मी.	एफ ₁ सें.मी.	एफ ₂ सें.मी.	सी सें.मी.
1	2	3	4	5
1.68	16.76	22	30	1.905
1.83	18.29	24	32	1.905
1.98	19.81	27	36	1.905
2.13	21.34	29	39	1.905
2.29	22.86	32	43	1.905
2.44	24.38	35	46	1.905
2.59	25.91	37	49	2.223
2.74	27.43	40	53	2.223
2.90	28.96	42	56	2.223
3.05	30.48	45	59	2.223
3.20	32.00	47	63	2.223
3.35	33.53	50	66	2.223

1	2	3	4	5
3.51	35.05	53	71	2.540
3.66	36.53	57	76	2.540
3.81	38.10	60	80	2.540
3.96	39.62	64	84	2.540
4.11	41.15	68	90	2.540
4.27	42.67	70	93	2.540

डी = गहराई,

एन = लम्बाई,

एफ₁ = लोह या इस्पात की डेकवाली फ्लैट या नौकाओं के लिए फ्री बोर्ड।

बाउंड

एफ₂ = लोह या इस्पात की खुली फ्लैट या नौकाओं के लिए फ्री बोर्ड।

सी = लम्बाई में प्रत्येक 3.05 मीटर के अंतर के लिए फ्री बोर्ड पर प्रयोज्य सुधार :

(ख) यदि यह लकड़ी की वर्गाकार या देशी व विभिन्न नौका हो, या मिश्रित प्रकार की नौका हो, होल्ड की गहराई के प्रत्येक 30 में. मी. के लिए 8 में. मी. लेने हुए, जैसा कि उपर खंड (i) के अधीन मापा गया है।

(iii) यात्रियों के लिए, डेक स्थान के वर्ग मीटर में उस ऊपरी क्षेत्र को जो यात्रियों के लिए उपलब्ध है, 0.5574 से भाग करते हुए तथा यदि वहन कर रहा हो तो 12 वर्ष से नीचे के दो बच्चों को या 74, 64 कि. ग्र. भार के सामान को एक यात्री के समतुल्य माना जाएगा :

परन्तु उन नौकाओं के लिए जो प्राइवेट फसों या कंपनियों की हैं तथा केवल अपने कर्मचारियों के वहन के लिए उपयोग में लाई जाती हैं, मात्रक 0.5574 के स्थान पर 0.3710 होगा।

(iv) उपर खंड (i) तथा खंड (ii) के अधीन यात्रियों और स्थोरा के लिए।

71. अनुज्ञप्ति के लिए आवेदन : फ्लैट/नौका की अनुज्ञप्ति के लिए प्रत्येक आवेदन लिखित रूप में न्यासी नौका सर्वेक्षक को अनुसूची के प्ररूप "ड" में किया जाएगा और उसमें निम्नलिखित विषयवस्तु होंगी :—

(क) स्वामी का नाम और पता, या

(ख) कलकत्ता में उसके सम्पत्ति प्राधिकृत अधिकृत का नाम और पता,

(ग) फ्लैट या नौका का वर्णन,

(घ) न्यासी नौका सर्वेक्षक द्वारा फ्लैट/नौका पर अंतिम रजिस्ट्रीकरण संख्यांक अथवा बजरा रजिस्ट्रीकरण नियम, 1952 के उपबंधों के अनुसार विहित रजिस्ट्रीकरण संख्यांक, और

(ङ) फ्लैट/नौका के भारमाधक मांझी का नाम।

72. अनुज्ञापन रीति : प्रत्येक फ्लैट का नौका, जिसे अनुज्ञप्ति दी जानी है, यदि वह फ्लैट है तो सुविधाजनक स्थान पर रखा जाएगा अथवा यदि वह नौका है तो आउट्रिग घाट में विशेष अनुज्ञापन बोरा को, न्यासी नौका सर्वेक्षक द्वारा सर्वेक्षण के लिए, भेजा जाएगा जो विहित फीम का संदाय होने पर।

(क) अनुज्ञप्ति जारी करेगा यदि फ्लैट/नौका अच्छी स्थिति में पाया जाता है और उस प्रयोजन के लिए जिसके लिए वह आर्थायित है उपयुक्त पाई जाती है, या

(ख) यदि फ्लैट/नौका अच्छी स्थिति में नहीं है तो उन मरम्मतों या परिवर्तनों को उपदर्शित करेगा जो अनुज्ञप्ति देने के पूर्व आवश्यक हैं :

परन्तु किसी फ्लैट/नौका का, हित फीम का संदाय करने पर, स्वामी की कर्मशालाओं में सर्वेक्षण किया जा सकेगा।

बजरा रजिस्ट्रीकरण नियम, 1952 के अधीन रजिस्ट्रीकरण के लिए अप्रदित फ्लैट नौका से भिन्न, इस प्रकार अनुज्ञप्ति प्रत्येक फ्लैट/नौका का अंकों में अपना रजिस्ट्रीकरण संख्यांक होगा जो न्यासी नौका सर्वेक्षक द्वारा दोनों "बाउ" पर कम से कम 15 से. मी. की ऊंचाई पर रंग से लिखा/छापा/किया/उत्कीर्ण किया जाएगा।

73. मांझी की अनुज्ञप्ति.—कोई भी फ्लैट/नौका पत्तन में चलाने के लिए तब तक अनुज्ञापन नहीं होगी जब तक वह न्यासियों द्वारा अनुज्ञप्ति मांझी के भारमाधन में न हो। मांझी अनुज्ञप्ति पुस्तिका जो अन्तरणीय नहीं है में मांझी को दी गई सभी अनुज्ञप्तियां होंगी और ऐसी अनुज्ञप्तियां सामूली तौर पर उगी समय दी जाएंगी जिस समय फ्लैट नौका की अनुज्ञप्ति दी गई हो। नए नियुक्त मांझी को, जिसके पास अपने नाम में इससे पूर्व कोई मांझी अनुज्ञप्ति नहीं है, तीन मास कार्य करने के पश्चात् जिसके लिए अनुज्ञप्ति दी गई हो, परीक्षा के लिए नौका सर्वेक्षक के समक्ष उपस्थित होना होगा। किसी फ्लैट नौका के भारमाधक के रूप में लगाया गया नया मांझी न्यासी नौका सर्वेक्षक को स्वयं अनुज्ञप्ति के लिए आवेदन करेगा और उस फ्लैट/नौका की अनुज्ञप्ति प्राप्त करेगा जिसमें उसका नाम उक्त सर्वेक्षक द्वारा प्रविष्ट किया जाएगा।

मांझी की अनुज्ञप्ति को संबंधित मांझी द्वारा अनुज्ञप्ति की किसी शर्त अथवा इन नियमों को भंग करने की दशा में प्रतिसंहत किया जा सकेगा।

मांझी, उसे दी गई अनुज्ञप्ति के अवमान पर परीक्षा के लिए न्यासी नौका सर्वेक्षक के समक्ष उपस्थित न होने पर तात्कालिक पश्चातवर्ती अनुज्ञापन के लिए प्रत्येक ऐसे अवसर पर दुबारा मांझी अनुज्ञप्ति फीस का प्रभार देने के दायित्वाधीन होगा।

74. मांझी अनुज्ञप्ति पुस्तिका.—मांझी अनुज्ञप्ति पुस्तिका, नौका रजिस्ट्रीकरण कार्यालय से विहित फीस का संशय करने पर उपलब्ध है।

75. स्थोरा नौका कर्मचिदल.—(1) प्रत्येक फ्लैट या स्थोरा नौका, जो पत्तन में चलती है के साथ निम्नलिखित होगा —

(क) एक अनुमोदित लाइफ-बूय अथवा कोई अनुमोदित उपयुक्त प्रतिस्थानी जिसके साथ उपयुक्त लाइफ लाइन लगा हो जो कम से कम एक इंच परिधि का तथा 10 फीदम लम्बा हो,

(ख) रास्ते में खींचते समय अथवा खिदपुर दा नेताजी सुभाष डाक के प्रवेश के बाहर प्रतीक्षा करते समय उपनियम (2) में अधिकथित कर्मचिदल

(ग) उपनियम (2) में अधिकथित कर्मचिदल का 50 प्रतिशत जो खड़े होने पर कम से कम दो हो। इस प्रयोजन के लिए आणिक अंकों को विशेष मामले में निकटतम निम्न पूर्ण संख्यांक तक पूर्णांकित किया जाएगा। तथापि जब कोई फ्लैट या स्थोरा नौका विवेकानंद पुल के आगे स्थलों रुकी हो तो कम से कम एक कर्मचिदल। चौकीदार आवश्यक होगा।

(2) किसी फ्लैट या स्थोरा नौका का कर्मचिदल निम्न-लिखित रूप में होगा —

फ्लैट या नौका का प्रवर्ग	संचालन मापमान
(i) 60 रजिस्ट्रीकृत मीट्रिक टन तक	1 मांझी
(ii) 60 रजिस्ट्रीकृत मीट्रिक टन से अधिक किन्तु 90 रजिस्ट्रीकृत मीट्रिक टन से अनधिक	1 मांझी 3 दांडी
(iii) 90 रजिस्ट्रीकृत मीट्रिक टन से अधिक किन्तु 115 रजिस्ट्रीकृत मीट्रिक टन से अनधिक	1 मांझी 4 दांडी
(iv) 115 रजिस्ट्रीकृत मीट्रिक टन से अधिक किन्तु 160 रजिस्ट्रीकृत मीट्रिक टन से अनधिक	1 मांझी 5 दांडी
(v) 160 रजिस्ट्रीकृत मीट्रिक टन से अधिक	1 मांझी 6 दांडी

76. यात्री नौका कर्मचिदल.—पत्तन में चलने वाली प्रत्येक यात्री नौका के साथ निम्नलिखित होगा :—

(क) कम से कम दो अनुमोदित लाइफ बूय या उपयुक्त अनुमोदित प्रतिस्थानी जिसके साथ कम से कम एक इंच परिधि का तथा 10 फीदम लम्बाई का उपयुक्त लाइफ लाइन लगा हो और यदि वह 40 यात्रियों से अधिक यात्रियों को ले जाने के लिए अनुज्ञापित है तो प्रत्येक 20 अनिश्चित यात्री अथवा उनके भाग के लिए एक अतिरिक्त अनुमोदित लाइफ बूय या उपयुक्त अनुमोदित प्रतिस्थानी जिसके साथ उपयुक्त लाइफ लाइन लगा हो

(ख) जब रास्ते में हो या भाड़े पर चल रही हो तब यदि वह—

10 यात्रियों से अनधिक के लिए अनुज्ञापित है तो	2 दांडी 1 मांझी
15 यात्रियों से अनधिक के लिए अनुज्ञापित है तो	3 दांडी 1 मांझी
20 यात्रियों से अनधिक के लिए अनुज्ञापित है तो	4 दांडी 1 मांझी
25 यात्रियों से अनधिक के लिए अनुज्ञापित है तो	5 दांडी 1 मांझी
30 यात्रियों से अनधिक के लिए अनुज्ञापित है तो	6 दांडी 1 मांझी
35 यात्रियों से अनधिक के लिए अनुज्ञापित है तो	7 दांडी 1 मांझी

(ग) जब वह रात के लिए रुका हो अथवा लंगर पर ठहरा हो तब यदि वह—

15 यात्रियों से अनधिक के लिए अनुज्ञापित है तो कर्मचिदल	1 पुरुष
20 यात्रियों से अनधिक के लिए अनुज्ञापित है तो कर्मचिदल	2 पुरुष
30 यात्रियों से अनधिक के लिए अनुज्ञापित है तो कर्मचिदल	3 पुरुष
30 से अधिक यात्रियों के लिए कर्मचिदल	4 पुरुष

77. भार रेखा.—28 घन मीटर के रजिस्ट्रीकृत माप से अधिक के प्रत्येक फ्लैट नौका में उसकी भार रेखा होगी जो किसी भी समय पानी में डूबी नहीं रहेगी, यह पेटा में सहजदृश्य कटे हुए चिह्न से उपदर्शित होगी और गहरे रंग पर सफेद से पेंट की जाएगी। यह चिह्न न्यासी नौका सर्वेक्षक द्वारा रजिस्ट्रीकरण के समय बनाया जाएगा।

78. यात्री प्लेट का प्रदर्शन.—यात्रियों को ले जाने के लिए अनुज्ञापित प्रत्येक नौका एक यात्री प्लेट प्रदर्शित करेगी जिस पर अंग्रेजी और बंगला में नौका का रजिस्ट्रीकरण संख्यांक अनुज्ञापित संख्यांक उन यात्रियों की संख्या जिन्हें ले जाने के लिए वह प्राधिकृत हैं उसके कर्मचिदल की संख्या और उसकी अनुज्ञापित की समाप्ति की तारीख दर्शित होगी।

79. अनुज्ञप्ति का निरीक्षण.—पत्तन में चल रहे फ्लैट या नौका का भार साधक प्रत्येक मांझी स्वयं अपनी अनुज्ञप्ति तथा अपने फ्लैट नौका की अनुज्ञप्ति साथ रखेगा जिसे प्रत्येक को उस समय प्रस्तुत किया जाएगा जब पत्तन पुलिस द्वारा या न्यामियों द्वारा सम्बन्धित प्राधिकृत अधिकारी/कर्मचारीवृन्द द्वारा उसकी अपेक्षा की जाए।

यात्री नौका की अनुज्ञप्ति भी किसी यात्री की प्रार्थना पर निरीक्षण के लिए प्रस्तुत की जाएगी।

80. अनुज्ञप्ति का अभिग्रहण.—फ्लैट या नौका के स्वामी या अभिकर्ता अथवा भांजी द्वारा इन नियमों का या अनुज्ञप्ति की किन्हीं शर्तों का भंग किए जाने की दशा में वह फ्लैट/नौका पत्तन पुलिस द्वारा या न्यामियों द्वारा प्राधिकृत किसी अधिकारी/कर्मचारीवृन्द द्वारा अभिगृहीत की जा सकेगी और विवाद के तब होने तक पुलिस अभिरक्षा में रखी जा सकेगी।

ऐसी नौकाएं/फ्लैट जो अनुज्ञप्ति के बिना या समाप्त अनुज्ञप्ति पर या अनुज्ञापित भांजी के बिना या ऐसे भांजी द्वारा जिसके पास समाप्त भांजी अनुज्ञप्ति है, चलाई जा रही है, नदी यातायात पुलिस द्वारा अभिगृहीत की जा सकेगी और अधीक्षक, नौका रजिस्ट्रीकरण द्वारा यथास्थिति, रजिस्ट्रीकरण के लिए और अनुज्ञापन के लिए अनुज्ञापन बोया में रखी जा सकेगी। ऐसी अभिगृहीत नौकाओं/फ्लैटों की अनुज्ञप्तियां विहित प्रभारों की बमूली के लिए अधीक्षक नौका रजिस्ट्रीकरण को निर्दिष्ट की जाएंगी।

81. अनुज्ञप्ति की अस्तित्वावधि इन नियमों के शीर्षक की गई प्रत्येक अनुज्ञप्ति प्रायः उस तारीख से, जिसको वह दी जाती है, जब तक कि उसका प्रतिसंहरण न किया जाए एक वर्ष के लिए प्रयुक्त बनी रहेगी। यह अनुज्ञप्ति किसी नौका/फ्लैट को एक वर्ष से कम की निर्बन्धित अवधि के लिए भी, यदि वह आवश्यक समझी जाए तो दी जा सकेगी। खोई हुई या आस्थायित अनुज्ञप्ति के लिए अनुज्ञप्ति की दूसरी प्रति जारी की जा सकती है।

प्रत्येक समाप्त या प्रतिसंहृत अनुज्ञप्ति न्यासी नौका सर्वेक्षक को अविलंब अभ्यापित की जाएगी।

82. अनुज्ञप्ति की अवधि का विस्तार.—अनुज्ञप्ति की अवधि का विस्तार कलकत्ता पत्तन न्यास मापमान दरों में विहित दर पर तीन मास में अनधिक अवधि के लिए किया जा सकेगा :

परन्तु ऐसा कोई विस्तार तब तक मंजूर नहीं किया जाएगा जब तक उस फ्लैट/नौका का सर्वेक्षण न कर लिया गया हो और वह अच्छी स्थिति में तथा उस प्रयोजन के लिए जिगके लिए वह आशयित है उपयुक्त न पाई जाए।

इस नियम में किसी शान के होने हुए भी, तीन माह से अनधिक अवधि के लिए अनुज्ञप्ति का विस्तार सर्वेक्षण के बिना उस दशा में किया जा सकेगा जब कोई नौका कलकत्ता पत्तन और उसकी नाव्य नदी तथा जल मरणी के बाहर रुकी पड़ी हो।

83. कतिपय परिस्थितियों में अनुज्ञप्ति का नवीकरण या विस्तार.—(1) पत्तन के भीतर चल रही नौकाओं और फ्लैटों के स्वामी ऐसे जलयानों के लिए दी गई अनुज्ञप्तियों के नवीकरण या विस्तारण के लिए ऐसी अनुज्ञप्तियों की अवधि की समाप्ति पर तुरन्त उत्तरदायी होंगे जब तक कि वे जलयान गरम्मत के लिए पूरी तरह बैठा न दिया गया हो और उस समय पत्तन में चल न रहा हो। जब अनुज्ञप्ति के नवीकरण या विस्तारण के समय नौकाएं या फ्लैट वस्तुतः चलाए नहीं जा रहे हों तब उसके स्वामी उसके एक सप्ताह के भीतर विहित प्रारूप में न्यासी अधीक्षक नौका रजिस्ट्रीकरण को सूचित करेंगे।

(2) इस उपबंध का अनुपालन न करने पर, न्यामियों के अन्य अधिकारों पर प्रतिकूल प्रभाव डाले बिना, स्वामी अनुज्ञप्ति की समाप्ति की तारीख से (समाप्त अवधि के लिए) दुगुनी दर पर या ऐसी बड़ी हुई दरों पर, जो कि न्यामियों द्वारा समय-समय पर अधिकांश की जाए, अनुज्ञप्ति फीस प्रभारित किए जाने के वायित्वाधीन होंगे।

84. अनुज्ञप्ति की निरन्तरता.—(1) अनुज्ञप्ति की निरन्तरता कायम रखी जाएगी यदि नौका/फ्लैट की समाप्त अनुज्ञप्ति के नवीकरण/विस्तारण के लिए आवेदन कर दिया जाए और ऐसी नौका/फ्लैट को अनुज्ञप्ति की समाप्ति के मात दिन के भीतर प्रस्तुत कर दिया जाए।

(2) अनुज्ञप्तियों की निरन्तरता में व्यवधान की मंजूरी ऐसी नौकाओं के बारे में अनुज्ञात की जाएगी जो केवल गरम्मत के लिए रुकी है। स्वामियों को ऐसी गरम्मत का स्थान, कार्य की प्रकृति और समयावधि कथित करनी चाहिए और नौका/फ्लैट के रोकने के लिए आवेदन करना चाहिए। अनुज्ञप्ति की निरन्तरता न रहना केवल तभी अनुज्ञात किया जाएगा यदि रोकने की अवधि छह सप्ताह से अधिक है और न्यासी अधीक्षक, नौका रजिस्ट्रीकरण को नौका के स्वामी द्वारा अनुज्ञप्ति की समाप्ति के पूर्व लिखित रूप में पूर्व सूचना दे दी गई हो।

(3) यदि किसी नौका/फ्लैट की अनुज्ञप्ति की विधि-मान्यता की समाप्ति उस समय होती है जब वह नौका/फ्लैट डॉक के भीतर है और उस पर स्थोरा लक्ष हुआ है तथा वह निकलने का इंतजार कर रही है तब स्वामी को ऐसी अनुज्ञप्ति की समाप्ति के कम से कम एक सप्ताह पूर्व अधीक्षक, नौका रजिस्ट्रीकरण को सूचित करना चाहिए और ऊपर कथित कारणों के आधार पर सर्वेक्षण के पश्चात् विस्तारण प्रमाणपत्र या अस्थायी अनुज्ञप्ति अभिप्राप्त करनी चाहिए और यथास्थिति विहित फीस जमा करनी चाहिए।

अधीक्षक, नौका रजिस्ट्रीकरण का समाधान हो जाने पर वह उनकी अनुज्ञप्तियों पर मुद्रा लगाएगा और यह कथन करेगा कि ऐसी नौकाओं/फ्लैटों पर पुनः माल न लादा जाए और उन्हें स्थोरा के उतारने का कार्य पूरा होने पर डॉक के बाहर सर्वेक्षण के लिए रखा जाए। उपरोक्त उपबंधों का अनुपालन न करने की दशा में सामान्य दण्डिक प्रभार उद्ग्रहीत किए जाएंगे।

85. अनुज्ञप्ति की नामजुरी:—इन नियमों में किसी बात के होते हुए भी, न्यासियों को अधिकार है कि वे अनुज्ञप्ति जारी करने या उसका विस्तारण करने के किसी आवेदन को नामजूर कर सकेंगे।

86. पुनः मापना:—किसी ऐसे फ्लैट या नौका का स्वामी या अभिकर्ता, जिसका अनुज्ञप्ति के चालू रहने के दौरान आकार में परिवर्तन किया गया है, उसे तुरन्त पुनः मापन के लिए न्यासी नौका सर्वेक्षक को भेजेगा।

87. पुनः सर्वेक्षण:—न्यासी किसी अनुज्ञप्ति फ्लैट या नौका के, किसी फीस के संदाय के बिना, पुनः सर्वेक्षण के लिए किसी भी समय निदेश दे सकेंगे।

88. स्वामित्व का अंतरण:—फ्लैट/नौकाओं के स्वामित्व का अंतरण विहित प्ररूप को सम्पूक्त: भर कर तथा स्टाम्प लगाकर धन रसीद प्रस्तुत करके और फ्लैट/नौका के कब्जे का परिदान करके किया जा सकेगा। अंतरक को अभिलेख के लिए अंतरिती से, जो कि उस फ्लैट/नौका का विधिपूर्ण स्वामी है, न्यासी बोर्ड को संबोधित एक पत्र ले लेना चाहिए कि उस फ्लैट/नौका का अंतरण किया गया है जिसमें अंतरण काढंग उपदर्शित हो तथा यह कथन हो कि अंतरक का उसमें अब कोई अन्य हित नहीं है।

क्रेता के खर्च पर एक गणमान्य समाचारपत्र में एक विज्ञापन फ्लैट/नौका का विक्रय अधिसूचित करते हुए तथा फ्लैट/नौका के व्योरे देते हुए जैसे कि ब्रेड, रजिस्ट्रीकृत टन भार, विक्रय की तारीख, क्रेता और विक्रेता का नाम आदि, जारी किया जाएगा। ऐसा विज्ञापन अधीक्षक, नौका रजिस्ट्रीकरण, कलकत्ता पत्तन न्यास द्वारा जारी किया जाएगा जिसमें साधारण जनता को पन्द्रह दिन की समयसीमा दी जाएगी कि वे लिखित रूप में अपने आक्षेप दस्तावेजी सबूत के साथ, यदि कोई हों संबंधित प्राधिकारियों को अधिसूचित करें और यदि अनुबद्ध समय सीमा के भीतर कोई आक्षेप प्राप्त न हो तो उस संव्यवहार को अंतिम माना जाएगा और वह फ्लैट/नौका क्रेता के नाम में अंतरित हो जाएगी।

89. नौका की हानि:—यदि कोई फ्लैट/नौका टूट जाती है या खो जाती है तो स्वामी या अभिकर्ता रजिस्ट्री प्रमाणपत्र और अनुज्ञप्ति को रद्द किए जाने के लिए नौका सर्वेक्षक को अविलम्ब लौटाएगा।

90. स्थोरा सहित अनुज्ञप्त नौका:—(1) ऐसा प्रत्येक फ्लैट या नौका, जो अनुज्ञप्ति के बिना या ऐसी अनुज्ञप्ति के

साथ जो समाप्त हो गई है पत्तन में आती है और स्थोरा उतारना चाहती है, निकटतम अंतरद्वितीय घाट महसूल कार्यालय में माल उतारने के अनुज्ञा पत्र के लिए तुरन्त आवेदन करेगी और खजांची के पास, एक वर्ष में फ्लैट/नौका के लिए देश अधिकतम अनुज्ञप्ति फीस की दर से दुगुना प्रभार जमा करेगी।

(2) इस नियम के अधीन स्थोरा उतारने वाला कोई फ्लैट/नौका, पत्तन में प्रवेश की तारीख से पन्द्रह दिन के भीतर अथवा यदि वह स्ट्रा नौका है तो तीस दिन के भीतर, आउट्रम घाट के अनुज्ञापन बोया पर सर्वेक्षण और अनुज्ञप्ति के लिए अग्रसर होगी। अनुज्ञप्ति के लिए विहित फीस के संदाय के पश्चात् वचे निषेध का कोई अतिगौर संबंधित पक्षकार को लौटा दिया जाएगा।

(3) इस नियम के अधीन निक्षिप्त कोई रकम उस दशा में प्रतिदेय नहीं है यदि मरम्मत के लिए भेजी गई या निर्बंधित अवधि के लिए अनुज्ञापित नौका/फ्लैट का समय के भीतर सर्वेक्षण नहीं किया जाता या पत्तन नियमों के अधीन औपचारिकताओं का पालन नहीं किया जाता।

91. यात्रियों का वहन:—ऐसी अनुज्ञप्ति यात्री नौका का भार साधक कोई व्यक्ति जो पत्तन में भाड़े पर चलती है किसी अच्छे कारण के बिना ऐसी नौका में किसी ऐसे यात्री को ले जाने से इंकार नहीं करेगा जो उचित भाड़ा दे रहा हो।

92. नौकाओं को नियंत्रणाधीन रखना: पत्तन के भीतर मार्ग में सभी नौकाएं स्वयं पर्याप्त नियंत्रण रखेंगी अथवा पर्याप्त शक्ति के जलयान द्वारा खोजी जाएंगी जिससे कि वे समुद्र गामी जलयानों के लिए ओक्षित नाव्य जनसंरणों को खुली रख सकें।

93. समुद्रगामी जलयानों के लिए रिक्त क्षेत्र: समुद्र-गामी जलयानों के अभ्यास के लिए लोअर कालेज सैंड बोया और अपर पांचपाड़ा फ्लैट बोया के बीच तथा फोर्ड ग्लोस्टर फ्लैट बोया और कलकत्ता पत्तन के दक्षिणी सीमा स्तम्भों के बीच की नाव्य जनसंरणी सभी समय पर खुली रखी जाएगी।

नौकाएं गार्डन रीव के दाएं तट पर किनारे की ओर उहर सकती हैं किन्तु वे नहर में कोई भी लंगर या मूरिंग नहीं बांधेंगी।

94. नौपरिवहन नियमों: (क) (1) पत्तन के भीतर फ्लैट या नौकाएं सभी समय पर निम्नलिखित रूप में नौपरिवहन करेंगे:—

(क) खिद्रपुर डाक तथा नेताजी सुभाष डाक के बीच, नदी के दाएं तट और कानेज सैंड का किनारा चिन्हित करती हुई बोयाओं की रेखा के बीच,

(ख) नेताजी सुभाष डाक तथा राजाबागान फ़ैरी स्टेशन के बीच नदी के दाएं तट के निकट से अथवा बाएं तट पर मूरिंग बोया के बाहरी रेखा से,

- (ग) राजाबागान फौरी स्टेशन और सांकशाल सैड के किनारे पर आकरा सेमाफोर के बीच,
- (घ) आकरा सेमा फोर और मुनीखाली सैड के किनारे पर पीर सेरांग भकवरे के बीच,
- (ङ) पीर सेरांग मकबरा और कोफरी सैड के किनारे पर बज बज के उत्तरी किनारे के बीच,
- (च) बज बज के उत्तरी किनारे और नदी के दाएं तट पर पत्तन की दक्षिणी सीमा के बीच ।

(2) रवीन्द्र सेतु से लफ बिन्दु तक और उसको सम्मिलित करते हुए, पारपथ के निकट नौपरिवहन करता हुआ प्रत्येक फ्लैट या नौका सावधानी से अग्रसर होगी और यदि आवश्यक हुआ तो नाव्य जलसरणी के बाहर लंगर डालेगा जिससे कि समुद्रगामी जलयान अबाध रूप से निकल सके ।

94. संचलन पर निर्बंधन:—(ख) कोई नौका, मूरिंग में प्रवेश करने वाले या जेट्टी बर्थ की ओर जाने वाले किसी समुद्रगामी जलयान के साथ उस समय अग्रसर नहीं होगी जब दिन के समय अंतराष्ट्रीय कोड फ्लैग “ए” जलयान के ट्रिप-टिक स्ट्रे पर फहरा रहा हो अथवा रात के समय दो बत्तियां लम्बाकार प्रदर्शित की जाएं अर्थात् क्षितिज में चारों ओर छह फुट की दूरी पर एक सफेद बत्ती के ऊपर एक लाल बत्ती दृष्टव्य हो ।

95. मूरिंग में समुद्रगामी जलयानों के साथ स्थोरा नौकाएं:—निम्नलिखित मूरिंग की बाह्य बर्थ पर जलयानों के बाहर पंक्तिबद्ध रूप से खड़ी स्थोरा नौकाओं की अधिकतम अनुज्ञात संख्या इस प्रकार होगी :—

सं. 1 कलकत्ता मूरिंगों में,	1 फ्लैट या दो नौकाएं
सं. 4 एस्प्लेनेड मूरिंगों में,	1 फ्लैट या 4 नौकाएं
सं. 3 एस्प्लेनेड मूरिंगों में,	1 फ्लैट या 4 नौकाएं
सं. 2 एस्प्लेनेड मूरिंगों में,	1 फ्लैट या 5 नौकाएं
सं. 1 एस्प्लेनेड मूरिंगों में	1 फ्लैट या 5 नौकाएं
सं. 1 प्रिसेप्स मूरिंगों में,	1 फ्लैट या 4 नौकाएं
सं. 3 हेस्टिंग्स मूरिंगों में,	1 फ्लैट या 5 नौकाएं
सं. 2 हेस्टिंग्स मूरिंगों में,	1 फ्लैट या 5 नौकाएं

96. आई. बी. घाट :—कोई फ्लैट/नौका किसी ऐसे जलयान से, जो समुद्रगामी जलयान नहीं है, माल प्राप्त करने, उसमें माल उतारने या उसमें माल लादने के लिए किसी अंतर्देशीय जलयान तट पर या उसके साथ-साथ उस दशा के सिवाए खड़ा नहीं किया जाएगा जब ऐसा फ्लैट/नौका माल को उतार या लाद रहा हो ।

97. मछली पकड़ने की नौकाएं:—मछली पकड़ने की नौकाओं की रजिस्ट्रीकरण और अनुज्ञापन से छूट प्राप्त है । तथापि ये नौकाएं उन सभी नियमों का पालन करेंगी जो नौकाओं को लागू होते हैं : परन्तु दिन निकलने और अंधेरा होने के बीच कोई भी मछली पकड़ने की नौका कुलुबेरिया रीव के दक्षिणी किनारे और फुल्टा प्वाइंट के बीच नाव्य जलसरणी में लंगर नहीं डालेगी ।

98. लकड़ी की ढिंगी :—यात्रियों और सामग्रियों को जलयान तथा डाक के तट के बीच पार उतारने के लिए किसी लकड़ी की ढिंगी को डाक मास्टर से विहित फीस का संदाय करने पर चालन अनुज्ञा पत्र प्राप्त करना चाहिए, ऐसे चालन अनुज्ञा-पत्र की विधिमाम्यता अधीक्षक, नौका रजिस्ट्रीकरण द्वारा जारी यात्री अनुज्ञापत्र/प्रमाणपत्र के अनुकूल होनी चाहिए ।

99. प्रकाश का प्रदर्शन:—प्रत्येक नौका, चाहे वह लंगर में हो या मार्ग में हो, अंधेरा होने और दिन निकलने के बीच डाक के ऊपर कम से कम 1.83 मीटर की ऊंचाई पर मौसम सङ्घ लालटेन में सफेद प्रकाश प्रदर्शित करेंगी । लालटेन इस प्रकार सन्निहित होगी जिससे पर्याप्त क्षमता में एक रूप और निरंतर प्रकाश कम से कम 1.61 किलोमीटर की दूरी पर संपूर्ण क्षितिज में दृष्टिगोचर हो ।

100. डम्ब बजरा :—पत्तन में समुद्रगामी जलयान द्वारा खींचे जाने वाला प्रत्येक डम्ब बजरा, लाइटर, या फ्लैट ।

(क) यदि बगल से खींचा जा रहा हो तो रात्रि में जलयान के बाह्य छोर पर उचित रूप से निर्मित लालटेन में और डाक पर किसी प्रकार की बाधा के कम से कम 91 सें. मी. ऊपर की ऊंचाई पर एक सफेद प्रकाश प्रदर्शित करेगा जो स्पष्ट, एक रूप और निरंतर होगा तथा वह कम से कम 3.23 कि.मी. की दूरी पर संपूर्ण क्षितिज से दृष्टिगोचर होगा ।

(ख) यदि पिछले भाग से खींचा जा रहा हो तो समरूप सफेद प्रकाश डाक के ऊपर कम से कम 1.83 मीटर की ऊंचाई पर पीछे की ओर प्रदर्शित करेगा ।

101. अग्नि स्थान :—किसी फ्लैट/नौका में अग्नि, सही प्रकार से निर्मित ऐसी लौहे की अंगीठी या अग्नि स्थान के सिवाय, जो डाक पर या फ्लैट/नौका के ऐसे अन्य भाग पर रखी जाएगी जिसे न्यासी नौका सर्वेक्षक निर्दिष्ट करे, नहीं जलाई जाएगी ।

102. खोई संपत्ति :—जब किसी यात्री की कोई सम्पत्ति नौका में छूट जाती है तो वह तुरन्त नौका के भारसाधक व्यक्ति द्वारा निकटतम पुलिस थाने के भारसाधक अधिकारी को भेजी जाएगी ।

103. दुर्घटना की रिपोर्ट : जब कभी कोई दुर्घटना किसी प्लेट/नौका को घटित होती है, तब ऐसी प्लेट/नौका का स्वामी, अधिकारी या भारसाधक व्यक्ति तुरन्त निकटतम पत्तन पुलिस थाने में जायगा और भारसाधक अधिकारी को दुर्घटना से संबंधित परिस्थितियों के बारे में रिपोर्ट करेगा।

104. दुर्घटना के पश्चात् प्रमाण-पत्र का जारी किया जाना : (1) पट्टेला या नौका का स्वामी, अधिकारी या भारसाधक व्यक्ति, नियम 103 के उपबंधों का अनुपालन करने के पश्चात्, न्यासी अधीक्षक की दुर्घटना की प्रकृति और उन मरम्मतों के, जिनका किया जाना अपेक्षित है, व्योरो को कथित करने हुए पट्टेला, नौका की अनुज्ञप्ति सहित नौका रजिस्ट्रीकरण के संबंध में लिखित में एक रिपोर्ट प्रस्तुत करेगा।

(2) रिपोर्ट के प्राप्त होने पर, अधीक्षक पट्टेला, नौका की जांच कराएगा और की जाने वाली मरम्मतों को लिखित रूप में विनिर्दिष्ट करेगा।

(3) उपनियम (2) के अधीन इस प्रकार विनिर्दिष्ट मरम्मतों को सम्पूर्ण रूप में किए जाने के पश्चात्, पट्टेला, नौका को अधीक्षक के समक्ष पुनः पेश किया जाएगा।

(4) मरम्मतों के बारे में समाधान हो जाने पर, अधीक्षक, उपनियम (1) में निर्दिष्ट पट्टेला, नौका की अनुज्ञप्ति संलग्न करने हुए उस प्राणय का लिखित रूप में प्रमाणपत्र जारी करेगा, जिसके आधार पर ही पट्टेला, नौका को नदी में चलाने के लिए अनुज्ञात किया जा सकेगा।

105. स्वामी या मांझी के उत्तरदायित्व : किसी नौका का स्वामी या भारसाधक व्यक्ति, इन नियमों के अधीन उसकी अन्य उत्तरदायित्वों को प्रभावित किए बिना, विशिष्टतया, निम्नलिखित के लिए उत्तरदायी होगा :—

(क) नौका में कर्मियों की संख्या और इन नियमों द्वारा अपेक्षित प्राणरक्षक साधनों की व्यवस्था की गई है,

(ख) नौका को पूर्णतः साफ रखा जाता है,

(ग) रजिस्ट्रीकृत संख्यांक इन नियमों द्वारा विहित रीति से दोनों ओर स्पष्ट रूप से लिखा गया है,

(घ) विधिमाल्य अनुज्ञप्तियों नौका और मांझी दोनों के लिए ले जाई जाती हैं,

(ङ) अनुज्ञप्ति में विनिर्दिष्ट गियर, नौकीपरण और प्राणरक्षक साधनों की व्यवस्था की गई है और उन्हें अच्छी चालू हालत में बनाए रखा जाता है,

(च) भार रेखा को स्पष्ट रूप से चिह्नित किया जाता है और वह किसी भी समय अलमग्न नहीं होती है,

(छ) यदि यात्री ले जाने वाली नौका है तो उसमें उस संख्या में अधिक व्यक्ति नहीं है जिसके लिए अनुज्ञप्ति दी गई है,

(ज) नौका सब समय चाली रहती है जिससे कि समदुर्गामी अवधानों के लिए नाव्य जल मार्गों को अवधि रखा जा सके,

(झ) नौका या पट्टेला को किन्हीं भी परिस्थितियों में नदी या डाकों में पोत के संचलन में बिघ्न या पोत के कार्य में बाधा नहीं डालना चाहिए,

(ञ) नौका या पट्टेला को डाकों या नदी में कर्मियों रहित नहीं रखा जाना चाहिए।

(ट) नौका या पट्टेला को किसी भी प्रकार में चोरी, तस्करी, भ्रमण, आदि जैसे क्रियाकलापों में अन्तर्बलित नहीं होना चाहिए।

106. अनुज्ञप्ति का प्रतिसंहरण : किसी पट्टेला, नौका को अनुदक्ष अनुज्ञप्ति को प्रतिसंहरित किया जा सकेगा :

(क) यदि पट्टेला नौका की बाबत या उसमें किसी भी प्रकार में संबंधित किसी लेख में न्यायियों को संदेय शोध्य या प्रभार, जो कुछ हो, उसकी मांग की तारीख से तीन सप्ताह की अवधि तक असंदक्ष रह जाने हैं,

(ख) जब कभी न्यायियों की राय में पट्टेला, नौका उस प्रयोजन के लिए, जिसके लिए उसे अनुज्ञप्ति दी है, अयोग्य है,

(ग) जब कभी अनुज्ञप्ति की या इन नियमों की शर्तों का कोई भंग स्वामी या उसके अधिकारी या पट्टेला, नौका के भारसाधक माफी द्वारा किया गया है,

(घ) जब कभी न्यासी ठीक समझें।

परन्तु यह और कि खंड (क), खंड (ख) और खंड (ग) के अधीन किसी अनुज्ञप्ति के प्रतिसंहरण से उद्भूत किसी विवाद की दशा में, अध्यक्ष, उपाध्यक्ष अंतिम प्राधिकारी होगा।

अध्याय 5

सूखे डाकों के विनियमन के लिए नियम

107. सूखे डाक में ले जाने के लिए आवेदन : किसी सूखे डाक में कोई जलयान रखने के लिए आवेदन किसी भी समय मुख्य यांत्रिक इंजीनियर को किया जा सकेगा, किन्तु, विनियमन की कोई निश्चित तारीख जलयान को तब तक आवंटित नहीं की जाएगी जब तक कि आवेदन हममें उपाध्यक्ष अनुसूची के विहित प्रारूप "ब" में, जो मुख्य यांत्रिक इंजीनियर के कार्यालय में प्राप्त किया जा सकेगा, किया गया है।

108. सूखे ढाँकों का विनियमन : विहित प्ररूप में किदरपुर या नेवाजी सुभाष सूखे ढाँकों के लिए आवेदन अधिमान उल्लिखित करते हुए उसके प्राप्त होने पर, जलयान को प्रवेश सूची में रखा जाएगा और उसके विनियमन की विशिष्टियाँ देने हुए सूचना इससे उपावद्ध अनुसूची विहित प्ररूप "छ" में आवेदक को भेजी जाएगी।

कोई भी जलयान पूर्व विनियमन के बिना किसी सूखे डाँक में प्रवेश करने के लिए अनुज्ञात नहीं किया गया जाएगा और कोई भी आवेदन तब तक स्वीकार किया गया नहीं समझा जाएगा जब तक कि विहित प्ररूप "छ" में विनियमन की सूचना नहीं भेजी गई है।

109. ले जाने का आदेश : नियम 110 के अधीन उपबंधित सूखे ढाँकों से भिन्न सूखे डाँक में स्वीकृत जलयानों को उसी क्रम में डाँक में लाया जाएगा जिसमें वे प्रवेश सूची में हैं, परन्तु :—

(क) यदि वह जलयान, जो अपनी बूक की गई तारीख को या उस तारीख को, जिसको सूखा डाँक खाली है, तैयार नहीं है, दोनों में से जो भी पश्चात्पूर्ती हो, तो वह सूची में का एक स्थान खो देगा।

(ख) किसी ऐसे जलयान को, जिसकी बीमा या बनावट विहित प्ररूप "च" में दी गई वर्णनात्मक विशिष्टियों से उस विस्तार तक अंतर पाया जाता है जो अधीक्षक, सूखे डाँक की राय में जलयान के गुरुभित डाँक में लाने में बाधा उत्पन्न करे, डाँक में प्रवेश करने में इंकार कर दिया जाएगा।

(ग) सूखे डाँक बुकिंग की प्ररूप "घ" के अनुसार डाँक में लाने की नियत तारीख से 48 घंटे पूर्व लिखित रूप में पुष्टि कर लेनी चाहिए।

(घ) यदि बुकिंग की पुष्टि/रद्दकरण नहीं की गई/किया गया तो नियत वर के अनुसार रद्दकरण प्रभार इस तथ्य को विचार में लाए बिना उद्गृहीत किया जाएगा कि संबंधित सूखा डाँक खाली है या नहीं।

110. सूखे डाँक में लाने में जलयान : किसी सूखे डाँक में प्रवेश को विनियमित करने में निम्नलिखित को अधिमान दिया जाएगा :—

(क) सभी छोटे जलयानों की बजाए कोई ऐसा जलयान जिसका सकल टनभार 3,000 टन से कम नहीं है,

(ख) किसी लम्बी अवधि के लिए विनियमित सभी छोटे-छोटे जलयानों और सभी छोटे-छोटे जलयानों की बजाए कोई ऐसा जलयान जिसका सकल टनभार 3,000 टन से कम नहीं है, जिसके लिए 24 घंटे से अनधिक अवधि के लिए डाँक की अपेक्षा है,

(ग) किसी लम्बी अवधि के लिए विनियमित सभी समरूप जलयानों और सभी छोटे-छोटे जलयानों के बजाए कोई ऐसा जलयान जिसका समल टन भार 3,000 टन से कम नहीं है, जिसके लिए 72 घंटे से अनधिक अवधि के लिए डाँक की अपेक्षा है।

111. क्षतिग्रस्त जलयान को अधिमान : अध्यक्ष, अपने विवेकानुसार, किसी जलयान को किसी सूखे डाँक में प्रवेश करने के लिए प्रवेश सूची में के सभी अन्य जलयानों के ऊपर अध्यारोही अधिमान देते हुए अनुज्ञात कर सकेगा, यदि उसके द्वारा किसी सूखे डाँक में ऐसे तुरन्त प्रवेश करना आवश्यक समझा जाता है।

112. सूखे डाँक में लाने से पूर्व व्यवस्था : किसी जलयान का मास्टर, किसी सूखे डाँक में उसके प्रवेश के समय से पूर्व निम्नलिखित व्यवस्था करेगा :—

(क) जलयान सीधा हो और उसका फालर या पिच्छल लम्बों के बीच उसकी लम्बाई के प्रत्येक 100 फीट के लिए एक फुट से अधिक न हो, परन्तु मुख्य यांत्रिक इंजीनियर अपने विवेक पर, किसी ऐसे जलयान को, जो इस सीमा के भीतर कतित नहीं किया जा सकता, ऐसी शर्तों के अधीन रहते हुए जो वह ठीक संपने, सूखे डाँक में लाने की अनुज्ञा दे सकेगा।

(ख) स्थिरक टंकियां पूर्ण रूप से दबाई गई हों या या पूर्ण रूप से पम्प द्वारा सुखा दी गई हों और दरवाजे लगे हुए हों तथा उचित रूप से बंद हों।

(ग) प्रत्येक ओर, अग्र और पश्च, उपयुक्त लोहे के मोटे तार और उत्तोलन लाइनें तैयार हों तथा मस्तूल शीर्ष लटकने अधीक्षक, सूखे डाँक, के निदेशों के अनुसार चालित हों।

(घ) सभी निचल पूर्णतः सूखे हों।

(ङ) जब जलयान सूखे डाँक में जल पर हो और जलयान के ब्लाकों पर आगे और पीछे होने के तुरन्त पश्चात् स्थिरक टंक के गंभीरता-माप का पाठ्यांक लिया गया हो।

(च) ऊपर खंड (ङ) के अधीन लिए गए पाठ्यांकों की प्रतियां तुरन्त अधीक्षक, सूखे डाँक, को परिदल की जाती हैं।

113. फलक पर स्थौरा सहित डाँक में लाया जाना : किसी जलयान को फलक पर स्थौरा या अतिरिक्त बंकरों सहित सूखे डाँक में लाने के इच्छुक स्वामी का मास्टर मुख्य यांत्रिक इंजीनियर को एक विशेष आवेदन प्रस्तुत कर सकेगा जिसमें परिस्थितियों को स्पष्ट करेगा और प्ररूप "च" के

अनुसार अपेक्षित जानकारी देने के अतिरिक्त स्थीरा की प्रकृति और भरण की पूर्ण विनिष्टियां देगा।

114. प्रवेश से इंकार किया : किसी ऐसे जलयान को, जिसके लिए उसके मास्टर ने नियम 109 के अधीन अपेक्षित इंतजाम नहीं किया है, मुख्य यांत्रिक इंजीनियर के विवेकानुसार सूखे डॉक में प्रवेश करने की अनुज्ञा देने से इंकार किया जा सकेगा।

115. सहायता और अतिरिक्त कर्मचारी : किसी जलयान का मास्टर ऐसा इंतजाम करेगा कि कर्मचिल उस समय प्रत्येक सहायता कर सके जब जलयान को डॉक में लाया या उसे ले जाया जाता हो और अतिरिक्त कर्मचारी भी प्रदान करेगा जो अधीक्षक, सूखा डॉक की राय में इन सक्रियाओं के दौरान फलक पर अपेक्षित हो।

116. टेकबंदी के दौरान सहयोग : उस समय से जब डॉक रज्जू जलयान में बांधे जाते हैं, उस समय तक जब उसे ब्लाकों पर बांधा जाता है, मास्टर यह सुनिश्चित करने के लिए प्रत्येक प्रयास करेगा कि उसके कर्मचिल और सूखे डॉक कर्मचारिकुन्द के बीच जलयान को टेकबंदी करने में पूर्णतः सहयोग हो और यह सुनिश्चित करेगा कि फलक पर सभी अन्य कार्य समाप्त हो जाएं जिससे कि उसके कर्मचिल अधीक्षक, सूखे डॉक द्वारा अपेक्षित किसी कार्य के लिए उपलब्ध हो सके।

117. स्थिरक टंकियों में परिवर्तन : जब कोई जलयान किसी सूखे डॉक में हो तब उसकी स्थिरक टंकियों की स्थिति में अधीक्षक, सूखे डॉक, की अनुज्ञा के बिना कोई परिवर्तन नहीं किया जाएगा। अधीक्षक, सूखा डॉक, सूखे डॉक की तब तक जलप्लावित नहीं करेगा जब तक कि उसका यह समाधान नहीं हो जाता है कि परिवर्तन के पहले विद्यमान मूल स्थिति मास्टर द्वारा बहाल नहीं कर दी गई है। किसी ऐसे जलयान के मास्टर को, जो स्थिरक टंकियों की मूल स्थिति अमम्यक बिलंब के बिना बहाल नहीं कर सकना, सभी आवश्यक व्यौरों सहित एक आवेदन तुरन्त अधीक्षक, सूखे डॉक, को अर्पित करना चाहिए।

118. भार का स्थानान्तरण : जब कोई जलयान किसी सूखे डॉक में हो, तब कोई वंकर, स्थीरा या भारी वजन अधीक्षक, सूखा डॉक की लिखित अनुज्ञा के बिना फलक पर न तो स्थानान्तरित करेगा न जाएगा और न ही उतारेगा।

119. फलक को बाहर कोई कार्य न किया जाना : किसी जलयान को डॉक में लाने या उसे ले जाने के दौरान फलक के बाहर कोई भी कार्य नहीं किया जाएगा।

120. ठहराव का बढ़ाया जाना : कोई भी जलयान किसी सूखे डॉक में उस समय से अधिक समय तक नहीं रहेगा जिस तक उसे विनियमित किया गया है, परन्तु मुख्य यांत्रिक इंजीनियर, अपने विवेक पर, विनियमन के समय की समाप्ति के पूर्व आवेदन की प्राप्ति पर और अपने समाधान के अधीन रहते हुए कि ऐसी परिस्थितियां हैं

जिनके बारे में उस समय जानकारी नहीं थी जब जलयान को विनियमित किया गया था या जो कार्य के लिए लगे हुए दलों के नियंत्रण के बाहर हैं और जो ऐसे कार्य को जो केवल सूखे डॉक में किया जा सकता है, विनियमन की मूल अवधि के भीतर पूरा करने को निवारित करेंगे, और विनियमन अनुज्ञात कर सकेगा।

121. जलयान का हटाया जाना : जब तक कि विनियमन की अवधि को बढ़ाया नहीं जाता है तो मास्टर या स्वामी उस अवधि के, जिसके लिए जलयान को विनियमित किया गया था, समाप्त होने पर जलयान को सूखे डॉक से बाहर ले जाने के लिए सभी आवश्यक इंतजाम करेगा, परन्तु यदि मास्टर या स्वामी ऐसे इंतजाम करने में सफल हो जाता है तो मुख्य यांत्रिक इंजीनियर जलयान को हटाने के लिए सभी आवश्यक कदम उठाएगा।

122. डॉक से बाहर ले जाने के पूर्व पूर्वावधानियां : मास्टर स्वयं का यह समाधान करेगा कि डॉक से बाहर ले जाने के समय सूखे डॉक में कोई जल जाने देने से पूर्व सभी नलियां, निचलछिद्र और जलयान के तल में अन्य मुराखों को कम कर बंद कर दिया गया है।

123. व्यवस्था किया गया उपस्कर : पत्तन जलयान के डॉक में सुरक्षापूर्वक लाने के लिए आवश्यक सभी क्लार्कों, पटरी और निचल टेपों, जलयान को धोने, खुरचने तथा पेंट करने के लिए पर्याप्त प्लवमान मंचों और चलती-फिरती मंचिकाओं तथा माधारण प्रणोदक कार्य और छांटी-मांटी मरम्मतों के लिए पर्याप्त मंचिकाओं और मंचों की व्यवस्था करेगा।

व्यापक मरम्मतों के लिए सभी मंचों और आधारों की मरम्मत करने वाले मास्टर या स्वामी या ठेकेदार द्वारा व्यवस्था की जानी चाहिए।

124. ठेकेदारों की नियुक्ति : न्यासी, सूखे डॉकों में जलयानों के संबंध में कार्य करने के लिए वर्षानुवर्ष कतिपय अनुमोदित फर्मों या व्यष्टियों को प्राधिकृत करेगा। किसी भी व्यक्ति, फर्म को कोई ऐसा कार्य तब तक नहीं करने दिया जाएगा जब तक कि उसे अव्यक्त द्वारा इस प्रकार प्राधिकृत न किया गया हो।

125. पत्तन संपत्ति का संरक्षण : पत्तन के किसी भी ब्लाक, टेक, मंच, खंबा, रज्जू, या अन्य वस्तु को अधीक्षक सूखा डॉक, की लिखित अनुज्ञा के बिना सूखे डॉक परिसर में नहीं हटाया जाएगा।

126. सूखे डॉकों की क्षति : सूखे डॉकों की किसी वस्तु को न तो नष्ट किया जाएगा न काटा जाएगा न ही अन्यथा क्षति पहुंचायी जाएगी या इधर-उधर बहने दिया जाएगा और न ही काष्ठ या अन्य भारी सामग्रियों मोड़ियों और प्रस्तर निर्माण पर फेंकी जानी चाहिए या सूखे डॉकों में उन साधनों से अन्यथा लाने या ले जाने दिया जाएगा

जिनकी इस प्रयोजन के लिए व्यवस्था की गई है और जिन्हें तैयार किया गया है।

अध्याय 6

पोत विघटन के लिए नियम

127. क्रेनों का प्रयोग : सूखे डॉकों में क्रेनों को ब्रुक करने के लिए, आवेदन, अधीक्षक सूखे डॉक को, किया जाना है जो उपलब्धता, जरूरत और पूर्विता के अधीन रहते हुए, जैसा वह ठीक समझे ईतजाम करेगा।

128. निस्सन्दित दल और विद्युत : सूखे डॉकों में लाने के पूर्व निस्सन्दित जल और विद्युत के लिए, अलग से मांग की जानी चाहिए।

129. ब्लाकों का विशेष विन्यास : ब्लाकों का विशेष विन्यास करने के लिए, अभिकर्ता, मास्टर, स्वामी को कम से कम तीन दिन पहले डॉकिंग योजना प्रस्तुत कर देनी चाहिए।

130. टंक गंभीरता माप प्ररूप में गलत घोषणा : यदि जलयान डॉक में लाने के समय मास्टर द्वारा टंकी गंभीरता माप के बारे में की गई घोषणा के प्रतिकूल व्यवहार करता है, तो अधीक्षक सूखे डॉक द्वारा डॉकिंग रद्द किया जा सकेगा या यदि उस स्थिति में समायोजित करने के लिए जलयान को ब्लाकों को पुनः तैयार करने के लिए बाहर ले जाना आवश्यक है तो, दैनिक सूखे डॉक भाड़े के आधार पर ऐसे सभी प्रभार उदगृहीत किए जा सकेंगे। यदि जलयान डॉक से ले जाने समय टंकी गंभीरता माप प्ररूप में मास्टर की घोषणा के प्रतिकूल ब्लाक व्यवस्थाओं को भंग करता है तो, ब्लाकों को पुनः तैयार करने का कुल खर्च पोतस्वामी, अभिकर्ता द्वारा वहन किया जाना चाहिए।

131. अपशिष्ट का निस्सारण : यदि कोई जलयान सूखे डॉक में तेल या कोई अव्यक्तित सामग्री, कूड़ा करकट, आदि निस्सारित करता है तो, स्वामी, मास्टर से यह अपेक्षा की जाएगी कि वह डाक से ले जाने के पहले उन्हें साफ करे और उसके कारण सूखे डॉक की मशीनरी को हुई किसी क्षति के लिए मरम्मत का खर्चा स्वामी, अभिकर्ता, द्वारा वहन किया जाना चाहिए।

132. स्वामी द्वारा अपेक्षित किसी भी कारण से किसी जलयान को पुनः ले जाने के लिए सूखे डॉक भाड़े से अन्यथा अनिश्चित प्रभार दर सूची के अनुसार उदगृहीत किए जा सकेंगे।

133. कैप्शन का उपयोग : विद्युत जलीय, जलीय कैप्शन के उपयोग के लिए, पारी अनुसार प्रत्येक कैप्शन के लिए वैयक्तिक बुकिंग अधीक्षक सूखे डॉक, को करना चाहिए जो उसकी उपलब्धता जरूरत और पूर्विता, जो वह ठीक समझे के अधीन रहते हुए व्यवस्था करेगा।

134. जल के नीचे पेटा या किन्हीं फिटिंगों के रूप में व्यापक कार्य की दशा में, ऐसे काम के लिए ब्लाकों का खाली कराए जाने वाला अवस्थान डाक में लाने के पूर्व तदनुसार ब्लाकों की तैयार करने के लिए उपदेशित दिया जाना चाहिए।

135. पोत विघटन के लिए आवेदन : स्ट्रैप के लिए किसी जलयान को खोलने या किसी जलयान को विघटित करने की अपेक्षा करने वाला स्वामी, निदेशक, नौ विभाग, को लिखित रूप में आवेदन करेगा और उसके निरीक्षण के लिए पोत परिवहन महानिदेशक भारतीय सीमाशुल्क और यथा लागू विक्रय कर प्राधिकारियों द्वारा दिया गया शनापति और ऐसे अन्य दस्तावेज भी, जो निदेशक, नौ विभाग द्वारा अपेक्षित हों, पेश करेगा यथा लागू अपेक्षित दस्तावेजों के पेश किए जाने से समाधान होने पर निदेशक, नौ विभाग कलकत्ता डाक प्रणाली के भीतर जलयान को खोलने के लिए कोई उपयुक्त लंगरगाह आवंटित कर सकेगा।

136. पोत विघटन से संबंधित करार : मामले की परिस्थितियों की और संबंधित जलयान के खोलने, विघटित करने या नष्ट करने में अंतर्बलित जोखिम की मात्रा को ध्यान में रखते हुए जब ऐसा अपेक्षित हो, स्वामी ऐसे निबंधनों और शर्तों पर, जो निदेशक नौ विभाग द्वारा अधिकथित की जाए प्रसूची करार करेगा।

137. प्रभारों का संदाय : स्वामी न्यायियों द्वारा विहित सभी प्रभार निदेशक, नौ विभाग द्वारा जब भी फाट भाड़े, मूरिंग, लंगरगाह भाड़े, सूखे डाक, समुद्र तट प्रभारों भूमि भाटक प्रभारों, क्रेन भाड़ा प्रभारों और यथा लागू किन्हीं अन्य प्रभारों के रूप में ऐसी सेवाओं को किए जाने के पहले मांग की जाए, मांग की जाने पर तुरन्त संदत्त करेगा।

138. पोत विघटन के लिए किसी अनुसूचित बैंक से बैंक गारंटी यदि ऐसा करने के लिए कहा जाए तो स्वामी किसी ऐसे अनुसूचित बैंक से, जिसका प्रधान कार्यालय या शाखा कार्यालय कलकत्ता में हो और जो न्यासी वित्त मलाहकार और मुख्य लेखा अधिकारी द्वारा अनुमोदित हो, निदेशक नौ विभाग द्वारा विहित प्ररूप में एक बैंक गारण्टी भी देगा जिसमें यह जलयान के पूर्णतः या भागतः डूब जाने या उसका ध्वंस हो जाने की दशा में निदेशक नौ विभाग द्वारा की जाने वाली उद्धारण संक्रियाओं के खर्च का संदाय करने, पत्तन की सुरक्षा, अन्य जलयानों की सुरक्षा सुनिश्चित करने और या नोम्प सारणियों को खाली रखने के लिए जिम्मा लेगा ऐसा बैंक गारण्टी के रकम और अन्य निबंधनों का विनिश्चय करने में निदेशक, नौ विभाग का विनिश्चय अंतिम होगा।

139. तत्परता के बिना पोत विघटन : यदि स्वामी निदेशक, नौ विभाग द्वारा यथा अपेक्षित सम्यक तत्परता से विघटन या खोलने का काम करने में असफल है तो न्यासी, अपने अन्य किन्हीं अधिकारों पर प्रतिकूल प्रभाव डाले बिना

स्वामी या अन्य अधिकारियों की मारफत स्वामी के खर्चों और व्यय पर जलयान को विधित्त किए गए जलयान के भागों का विक्रय कर सकेगा और, या उन्हें हटा सकेगा।

141. पोत विघटन संबंधी—इन नियमों के निर्वाचन या कार्यकरण के बारे में किसी विवाद की दशा में, अध्यक्ष का विनिश्चय अंतिम और आबद्धकर होगा।

अध्याय 7

पोत सम्पत्ति को हुई क्षति के लिए नियम

142. जलयानों के मास्टर और स्वामी किसी भी प्रकार की किसी क्षति के लिए दावी होंगे जो उनके जलयानों या सेवकों द्वारा न्यासियों के किन्हीं निर्माणों या सम्पत्ति को होगी और न्यासी उसके जलयान को डाँक के विरुद्ध करने का अधिकार तब तक आरक्षित रखता है जब तक हुई क्षति की रकम के लिए प्रतिभूति नहीं दे दी गई है।

परन्तु बोर्ड के किन्हीं अधिकारों पर प्रतिकूल प्रभाव डाले बिना अध्यक्ष या उपाध्यक्ष, जलयान या जलयानों को स्वामी, मास्टर द्वारा क्षति हानि की प्राक्कलित लागत को पूरे करने के लिए पर्याप्त प्रतिभूति दे दी जाने पर पत्तन छोड़ने के लिए अनुज्ञात कर सकेगा।

अध्याय 8

पेट्रोलियम वहन करने वाले जलयानों के लिए नियम

143. परिभाषाएं—इस अध्याय में जब तक कि संदर्भ से अन्यथा अपेक्षित न हो,—

- (1) “प्रपुंज तेल जलयान” से प्रपुंज में पेट्रोलियम सहित कोई पेट्रोलियम जलयान अभिप्रेत है,
- (2) “पेट्टी तेल जलयान” से पेट्टियों, पीपाओं, ट्रकों या अन्य पात्रों में पेट्रोलियम सहित कोई पेट्रोलियम जलयान अभिप्रेत है,
- (3) “खाली किया गया जलयान” से कोई ऐसा जलयान अभिप्रेत है जिसने अपने पेट्रोलियम की उतराई का काम पूरा कर लिया है,
- (4) “अपवर्जित पेट्रोलियम” ऐसा पेट्रोलियम अभिप्रेत है जिसका प्रज्वलन तन्पाक 930 सी (या 200 एफ) से कम नहीं है जिसको ये नियम लागू नहीं होने हैं,
- (5) किसी पेट्रोलियम के संबंध में “प्रज्वलन तन्पाक” से निम्नतर तापमान अभिप्रेत है जिस पर वह वाष्प उत्पन्न करता है जो प्रज्वलित किए जाने पर क्षणिक चमक पैदा करेगा और जो पेट्रोलियम अधिनियम, 1934 (1934 का 30) और उसके अधीन बनाए गए नियमों के उपबंधों के अनुसार अवधारित है,

(6) “गैस मुक्त प्रमाणपत्र” से केन्द्रीय सरकार द्वारा इस निमित्त नियुक्त किसी अधिकारी द्वारा इस आणय का अनुदान प्रमाणपत्र अभिप्रेत है कि जलयान को पूर्णतः साफ कर दिया गया है और पेट्रोलियम तथा ज्वलनशील वाष्प से मुक्त कर दिया गया है।

(7) “पेट्रोलियम” से अभिप्रेत है कोई द्रव्य हाइड्रोकार्बन या हाइड्रोकार्बन और किसी ज्वलनशील मिश्रण (द्रव विस्कास या टोस) का मिश्रण, जिसमें कोई द्रव हाइड्रोकार्बन अंतर्विष्ट है,

(8) “पेट्रोलियम वर्ग “क” से ऐसा पेट्रोलियम अभिप्रेत है जिसका प्रज्वलन तापांक 23°सी (या 73°एफ) से कम है।

(9) “पेट्रोलियम वर्ग “ख” से ऐसा पेट्रोलियम अभिप्रेत है जिसका प्रज्वलन तापांक 65.5 सी (या 150 एफ) से कम है किंतु 23सी (या 73 एफ) से कम नहीं है,

(10) “पेट्रोलियम वर्ग “ग” से ऐसा पेट्रोलियम अभिप्रेत है जिसका प्रज्वलन तापांक 65.6 सी (या 150 एफ) से कम नहीं है,

(11) “प्रपुंज में पेट्रोलियम” से क्षमता में 1000 लीटर से अधिक किसी पात्र में रखा गया पेट्रोलियम अभिप्रेत है,

(12) “पेट्रोलियम जलयान” में अभिप्रेत है कोई ऐसा जलयान जो पेट्रोलियम वर्ग के का 5000 लीटर या 5 मीटरी टन से या पेट्रोलियम वर्ग ख पर किसी अन्य पदार्थ, जिसका वही प्रज्वलन तापांक है जो पेट्रोलियम वर्ग “क” या पेट्रोलियम वर्ग “ख” का है, के 5000 लीटर या 50 मीटरी टन से अधिक का वहन कर रहा है;

“परिवहन करना” से पेट्रोलियम को पत्तन के भीतर एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाना अभिप्रेत है।

144. पेट्रोलियम जलयानों का विनियमन—कोई भी पेट्रोलियम जलयान बालूसिरी के ऊपर तब तक अग्रसर नहीं होगा जब तक कि उसे कलकत्ता पत्तन में कोई लंगरगाह आवंटित न किया गया हो।

145. संवलन पर निर्वन्धन—कोई भी पेट्रोलियम जलयान निम्नलिखित के साथ बज वज के ऊपर नहीं जाएगा—

(क) पेट्रोलियम वर्ग “क”,

(ख) पेट्रोलियम वर्ग “ख”, जो नेताजी सुभाष डाँक में पेट्रोलियम पेट्रोलियम लंगरगाह पर उतारे जाने के लिए आशयित नहीं है;

परन्तु यह नियम निम्नलिखित को लागू नहीं होगा।

- (1) कोई मान्यता प्राप्त वैगन फेरी,
- (2) नियम 160 के अधीन अनुज्ञप्त कोई जलयान जो निदेशक समुद्री विभाग द्वारा अनुमोदित किसी मार्ग का अनुसरण करता है,
- (3) नियम 165 के अन्सार सूखे शक में जाने वाला कोई जलयान।

146. पेट्रोलियम वहन करने वाले पोतों के मास्टर द्वारा या पोत के अभिकर्ता द्वारा घोषणा और पेट्रोलियम या ज्वलनशील पदार्थों, की, जिसके अंतर्गत पेट्रों और बानिणों जैसे पदार्थ हैं, उतराई या लदाई—(1) पेट्रोलियम या कोई अन्य ऐसा पदार्थ जिसका प्रज्वलन तापंक 65.5° सी (50° एफ) से कम है वहन करने वाले प्रत्येक पोत का मास्टर कलकत्ता के पत्तन में प्रवेश करने में पूर्व, पाइलट को, इन नियमों की अनुसूची में विनिर्दिष्ट प्ररूप 2 में अपने हस्ताक्षर सहित, एक लिखित घोषणा परिदत्त करेगा।

परन्तु यदि पोत के पहुंचने की संभावना में ऐसे पोत का अभिकर्ता निदेशक, पत्तन का नौ विभाग, को अपने हस्ताक्षर सहित यथापूर्ववत् लिखित घोषणा परिदत्त कर देता है तो पोत के मास्टर द्वारा ऐसी घोषणा करने की आवश्यकता नहीं है।

(2) अभिकर्ता पूर्ण विधिष्टियों सहित सभी परिसंकट-ग्रस्त स्थोरा की सूची निदेशक, नौ विभाग और पत्तन के यातायात प्रबंधक को देगा।

(3) पोत का मास्टर सभी सुसंगत नियमों, विनियमों और समय-समय पर जारी किए गए अनुदेशों का अनुपालन करने के लिए उत्तरदायी होगा।

(4) उपनियम (3) में किसी बान के होते हुए भी, जब परिस्थितियों से ऐसा समर्थित हो, निदेशक, नौ विभाग, पेट्रोलियम या किन्हीं अन्य ऐसे पदार्थों की, जिनका प्रज्वलन तापंक 65.5° सी (या 150° एफ) से कम है, मात्रा के संबंध में, कलकत्ता के पत्तन पर डाकों और जेटियों पर उतारन या लदने के लिए लाई जाएं, निम्नलिखित शर्तों के अनुपालन करने के अधीन रहते हुए छूट प्रदान कर सकेगा—

- (i) जलयान का ऊंचे ज्वारों की अवधि तक बजबज मूरिंग में नहीं ले जाया जा सकता,
- (ii) स्थोरा को जलयान से सीधे समनुदेशिती को प्रदत्त करना है या जलयान के पहुंचने पर न्यासी परिसंकटमय गोदाम में तुरन्त हटाया जाना है या लदाई की दशा में, स्थोरा को जलयान के जाने के केवल एक दिन या दो दिन पहले लादा जाना चाहिए।
- (iii) उपयुक्त मक्रिया केवल दिन के समय की जाएगी,
- (iv) “धूपान निषेध” का कड़ाई में पालन किया जाना चाहिए और लदाई, उतराई के समय अग्नि के प्रारम्भ के निम्नलिखित पूर्वविधितयों बरती जायां चाहिए,

(v) 23° सी (73° एफ) से कम प्रज्वलन तापंक वाले ज्वलनशील द्रव की दशा से घाट सीमा में एक समय में ऐसे स्थोरा के पांच टन में अनधिक हथाला जाना चाहिए और उगे पत्तन परिसर में तुरन्त हटा लेना चाहिए।

(vi) स्थोरा को उतराई के समय पत्तन अग्नि सेवा कामिक को उपस्थित रहना चाहिए और पत्तन के अग्निशमक माधितों को भी स्थोरा के भंडार-करण क्षेत्र के निकट तैयार रखा जाना चाहिए,

(vii) उतराई और लदाई मक्रियाएं स्टीमर अभिकर्ताओं और समनुदेशिती से नाम निर्देशित उत्तरदायी व्यक्तियों के सीधे पर्यवेक्षण में की जानी है और वे किसी दुर्घटना के लिए जवाबदार होंगे:

परन्तु कोई ऐसी छूट निम्नलिखित में अधिक मात्राओं के लिए नहीं दी जाएगी।

- (क) पेट्रोलियम वर्ग क या अन्य पदार्थ, जिनका प्रज्वलन तापंक 23° सी (या 73° एफ) से कम है, के संबंध में 20 टन है,
- (ख) 23° सी (या 73° एफ) से कम प्रज्वलन तापंक वाले पेट्रों और बानिणों जैसे विनिर्मित उत्पादों की दशा में 20 टन।
- (ग) “पेट्रोलियम वर्ग “ख”, जिसका प्रज्वलन तापंक 65.5° सी (या 150° एफ) है, के संबंध में 100 टन,
- (घ) 230° सी (या 73° एफ) से अधिक किंतु 65.5° सी (या 150° एफ) से कम प्रज्वलन तापंक वाले पेट्रों और बानिणों जैसे विनिर्मित उत्पादों की दशा में 150 टन।

147. कर्षनीका का होना: पेट्रोलियम वर्ग क या ख सहित कोई भी पेट्रोलियम जलयान और सभी टंकियों के लिए गैस मुक्त प्रमाणपत्र के बिना कोई भी खाली जलयान गार्डन रिच और नेताजी सुभाष डाँक के बीच तब तक परिवहन नहीं किया जाएगा जब तक कि उसके पास कर्षनीका न हो।

148. प्रपुंज में पेट्रोलियम की उतराई और प्रपुंज में पेट्रोलियम या ज्वलनशील द्रव की लदाई: पेट्रोलियम जलयान निम्नलिखित उतारेंगे, लादेगे।

(क) प्रपुंज में पेट्रोलियम वर्ग “क” या ज्वलनशील द्रव, जिनका प्रज्वलन तापंक 23° सी (73° एफ) से कम है, हल्दिया, बजबज में आयातकर्ताओं, निर्यातकर्ताओं की भंडार-करण टंकियों में से सीधे उतारे जा सकेंगे, लादे जा सकेंगे।

(ख) पेट्रोलियम वर्ग “ख” वर्ग “ग” या ज्वलनशील द्रव जिनका प्रज्वलन तापंक 23° सी और अधिक है, हल्दिया, बजबज में आयात सुभाष डाँकों में आयात-कर्ताओं, निर्यातकर्ताओं का भंडार-करण टंकियों, में से सीधे उतारे जा सकेंगे, लादे जा सकेंगे।

149. पेट्री तेल जलयानों की उतराई या लदाई : प्रत्येक पेट्री तेल जलयान अपने पेट्रोलियम या जलवनशील द्रव पेट्रोलियम डिपो बजबज में उतारेगा या लादेगा किंतु ऐसा जलयान तब तक उतारता या लादता प्रारंभ नहीं करेगा जब तक कि निदेशक नौ विभाग का यह समाधान नहीं हो जाता है कि —

- (क) सीमाणुलक कलक्टर ने यथा स्थिति उसका पेट्रोलियम या जलवनशील द्रव उतारने या लादने के लिए अनुज्ञात किया है
- (ख) रिसने वाले पीपों ड्रमों या अन्य पात्रों के अथयन के लिए समुचित इंतजाम किए गए हैं।
- (ग) पात्र पेट्रोलियम नियम 1976 की अपेक्षाओं को पूरा करते हैं।

150. लाइटरो में उतारना : (1) कोई भी पेट्री तेल जलयान पूर्वगामी नियमों के अधीन कोई पेट्रोलियम किसी लाइटरो में सब तक नहीं उतारेगा जब तक कि ऐसा लाइटरो सूर्योदय और सूर्यास्त के बीच बजबज में किसी भंडारकरण क्षेत्र में खाली करने और उतारने में सक्षम न हो।

परन्तु ऐसा प्रत्येक लाइटरो इस प्रयोजन के लिए व्यापारी नौका सर्वेक्षक द्वारा सम्यक रूप से अनुज्ञात होगा :

परन्तु यह और कि पेट्रोलियम से लदा कोई भी लाइटरो बजबज में रात भर रुका नहीं रहेगा जब तक कि उस आशय का लिखित रूप में विनिर्दिष्ट अनुज्ञा पहले ही निदेशक नौ विभाग से अभिप्राय नहीं कर ली जाती है।

- (2) इस नियम के उपबंध द्रव हाइड्रोकार्बन सहित या रफ़्त गभी जलवनशील स्थोरा के संबंध में भी लागू होंगे।

151. अग्नि : पेटियों, ड्रमों या अन्य पात्रों में पेट्रोलियम वहन करने वाले किसी नौका पर अग्नि या अनावृत बत्ती और धूम्रपान अनुज्ञात नहीं किया जाएगा।

152. उतराई के लिए अपर्याप्त सुविधाएं : यदि सीमाणुलक कलक्टर किसी भी समय यह घोषणा करता है कि किसी पेट्रोलियम जलयान द्वारा पेट्रोलियम की उतराई के लिए स्थान सुविधा अनुपयुक्त है तो निदेशक नौ विभाग, यह निदेश दे सकेगा कि जलयान को डायमंड बन्दरगाह में या पत्तन के भीतर अन्यत्र हटा लिया जाए।

153. स्वयं के विद्युत् में उतराई या लदाई : कोई भी जलयान निदेशक नौ विभाग के लिखित रूप में अनुज्ञा के बिना प्रपूज में पेट्रोलियम वर्ग "क" या पेट्रोलियम वर्ग "ख" स्वयं उत्पादित विद्युत् द्वारा न तो उतारेगा न लादेगा।

154. कम मात्रा में पेट्रोलियम या जलवनशील द्रव : पांच टन (पांच हजार लीटर) से अनधिक पेट्रोलियम वर्ग "क" या जलवनशील द्रव अथवा पञ्चाम टन (पञ्चाम हजार लीटर) से अनधिक पेट्रोलियम वर्ग "ख" या जलवनशील द्रव की प्रपूज में मात्रा से अन्यथा मात्रा वहन करने वाला कोई जलयान निम्नलिखित शर्तों के अधीन रखने हुए डॉकों या जैटियों में उमे उतार सकेगा :

- (i) पेट्रोलियम वर्ग "क" पेट्रोलियम नियम, 1976 के अधीन अनुदत्त आयात अनुज्ञति ले अनिवार्य आता है,
- (ii) प्रत्येक ऐसा परेषिनि जो 300 लीटर से अधिक मात्रा में पेट्रोलियम वर्ग "क" का आयात करता है पेट्रोलियम नियम, 1976 के प्रख 2 में भंडारकरण स्थान-सुविधा का अरने या अपने अधिकर्ता द्वारा हस्ताक्षरित प्रमाणपत्र पेश करता है :

परन्तु 5 टन (5000 लीटर) पेट्रोलियम वर्ग "क" से अनधिक मात्रा या 50 टन (50,000 लीटर) पेट्रोलियम वर्ग "ख" से अनधिक मात्रा निदेशक समुद्रो विभाग के पूर्व अनुमोदन से, खंड (i) और खंड (ii) में विनिर्दिष्ट शर्तों का अनुपालन के अधीन रहने हुए लाइटरो या नौकाओं में उतारा जा सकेगा और पेट्रोलियम को निम्नलिखित घाटों में नौकाओं या लाइटरो से उतारा नहीं जाता हो, अर्थात् :—

- (क) हावड़ा की तरफ काबो घाट स्पर के उत्तर में बिचली घाट, या
- (ख) कलकत्ता की तरफ जगन्नाथ घाट, साहिब बाजार घाट, रथदोवा घाट या आगवजार घाट :

परन्तु यह और कि प्रपूज से अन्यथा पेट्रोलियम वर्ग "ग" को किसी भी मात्रा में डॉकों और जैटियों में उतारा जा सकेगा या नौकाओं का लाइटरो में एक ओर उतारा जा सकेगा।

155. सफाई : प्रत्येक खाली किया गया जलयान, जब तक कि वह सीप्रे समुद्र में न जा रहा हो, अविनम्ब नियत मूरिंग पर जायेगा। जिन पर वह बन्दरगाह मास्टर (पत्तन) के किसी भी निदेश के अधीन रहने हुए, तक रहेगा जब तक कि उसको सफाई नहीं कर ली जाती और उसे पेट्रोलियम और जलवनशील बाष्प से रहित नहीं कर दिया जाता :

परन्तु यदि बन्दरगाह मास्टर (पत्तन) का यह समाधान हो जाता है कि किसी घाट या किसी डॉक या मरिता में तेल, तेलीय जल या कचड़ा के निस्कारण को रोकने के लिये सम्यक पूर्वाविधानियां बरती गई हैं तो वह उसे उस बंगरगाह के समीप, जहां वह खाली किया गया है, अपना सफाई संक्रियाएं करने के लिये अनुज्ञात कर सकेगा।

156. डॉकों के भीतर पूर्वावधानी : (1) पेट्रोलियम वर्ग "ख" उतारने वाले प्रत्येक जलयान में छिद्र सहित दोनों ओर फिट किया गया 10 सें. मी. तार लटकन प्रत्येक छोर में लगा होगा और तार का भीतर छोर निकटतम उपलब्ध पोत के डैक के खम्भों में लगाया जायेगा तथा बाहरी छोर जन को पहुँच के भीतर लटका रहेगा।

(2) प्रत्येक ऐसे लटकर की लंबाई 15 फीट होनी और उसे शलाकाओं में हल्के से फंसा दिया जायेगा।

157. पेट्रोलियम भरना : कोई भी जलयान सूर्यास्त और सूर्योदय के बीच किसी नौका या बजरी से पेट्रोलियम नहीं भरेगा। सूर्योदय और सूर्यास्त के बीच नौका या बजरी से पेट्रोलियम को जलयान में भरना —

(क) सरिता में मूर्गियों पर ;

(ख) जैटियों में, और

(ग) डॉकों में यदि डॉक मास्टर का समाधान हो जाना है कि पेट्रोलियम का प्रचलन तापंक 60.5° सी या 150° एफ से कम है, अनुज्ञात किया जायेगा।

158. भराई के दौरान पूर्वावधानियाँ : बंकरों के लिये पेट्रोलियम की लदाई करने वाला प्रत्येक जलयान, निम्न-लिखित शर्तों का पालन करेगा :—

(क) जलयान का मास्टर या प्रथम मैट फलक पर रहेगा और यह सुनिश्चित करने के लिये उत्तरदायी होगा कि भराई नियमों का पालन किया जाता है और सुरक्षा के लिये सभी उचित पूर्वावधानियाँ ली जाती हैं।

(ख) जलयान का कोई अधिकारी निगरानी करेगा और एक परिचर नमनीय संयोजक पाईप पर तैनात किया जायेगा।

(ग) धूम्रपान, खाना बनाना, अनावृत बत्तियाँ या भट्ठियाँ नमनीय और प्रवेशिका पाईप के 30.48 मीटर के भीतर अनुज्ञात नहीं की जायेंगी।

(घ) नदी या डाक में पेट्रोलियम टपकने से रोकने के लिये संयोजक पाईप के नीचे एक उपयुक्त परनाला या अन्य प्रयुक्ति की व्यवस्था की जायेगी।

(ङ) एक परिवर ईंधन प्रदाय करने वाले जलयान के पम्प पर सदैव ड्यूटी पर रहेगा।

159. यान का बगल में अनुज्ञात न किया जाना : कोई भी अन्तर्देशीय जलयान या छोटा यान—

(i) प्रवृज में भराई करने या उतराई करने वाले किसी पेट्रोलियम जलयान;

(ii) किसी खाली किये गये जलयान, जब तक कि सभी उनके मुख बंद नहीं कर दिये जाते हैं, के 30.48 के भीतर नहीं आयेगा।

160. नौकाओं या बजरियों का प्रमाणन : कोई भी नौका या बजरी पत्तन के भीतर प्रवृज में पेट्रोलियम का परिवहन नहीं करेगी जब तक कि उसे न्यासी नौका सर्वेक्षक द्वारा और पेट्रोलियम नियम, 1976 के अनुसार समुचित प्राधिकारी द्वारा भी अनुज्ञात नहीं दे दी गई है

परन्तु यह नियम किसी मान्यता प्राप्त बगन फेरी को लागू नहीं होगा।

161. रात्रि-कार्य का निर्बन्धन—कोई भी जलयान सूर्यास्त और सूर्योदय के बीच कलकत्ता के पत्तन के भीतर पेट्रोलियम वर्ग "क" को न तो लावेगा और न उतारेगा, न ही परिवहन करेगा :

परन्तु यह नियम पेट्रोलियम नियम, 1976 के उपबन्धों के अनुसार पेट्रोलियम डिपो, बजबज और हल्दिया स्थित तेल जैटियों में उतारने वाले प्रवृज तेल जलयानों को लागू नहीं होगा।

162. भारी पेट्रोलियम का पोतांतरण : कोई जलयान, बंदरगाह मास्टर (पत्तन) की लिखित रूप में सहमति से प्रवृज में पेट्रोलियम वर्ग "ग" का किसी अन्य जलयान में पोतांतरित कर सकेगा।

163. नौकाओं या बजरियों की सफाई : पेट्रोलियम का बहन करने के लिये प्रयुक्त कोई नौका या बजरी—

(क) डॉकों में,

(ख) किसी कर्पनौका या प्रवृज तेल जलयान के समीप। गंधा पानी नहीं निकालेगी।

164. पुआल ले जाने वाली नौकाओं पर निर्बन्धन : बजबज पेट्रोलियम डिपो के उच्चस्वार सीमा के 155 मीटर के भीतर पुआल ले जाने वाले किसी जलयान पर अग्नि या धूम्रपान या अनावृत बत्तियाँ अनुज्ञात नहीं की जायेंगी।

165. प्रवृज तेल जलयान के लिये गैस युक्त प्रमाणपत्र : (1) कोई भी प्रवृज तेल जलयान अन्य पोतों के बीच तब तक नहीं ले जाया जायेगा जब तक कि जलयान किसी तेल लंगरगाह को (या केवल ईंधन तेल ले जाने वाले किसी जलयान की दशा में डॉक में) न जा रहा हो या विस्फोटक नियंत्रक, पूर्वी सकिल, कलकत्ता से इस आशय का प्रमाणपत्र प्रस्तुत नहीं किया जाना है कि उसने टैंकियों, पाफी-डैम्पों, पंपकक्षों और ऐसे अन्य भागों की, जो आवश्यक समझा गया, वाष्प परीक्षण यंत्र की सहायता से जांच की है और उसके द्वारा लिखित रूप में यह प्रमाणित न किया गया हो कि जलयान

(2) सूखे डाँक में जाने वाले सभी प्रपुंज तैल जलधानों का मास्टर उपनियम (1) में निर्दिष्ट प्रमाण-पत्र प्रस्तुत करेगा।

(3) किसी पेट्रोलियम टैंकर के किसी भाग या फिटिंग पर बोट भी मरम्मत कार्य सूखे डाँक में या गीले डाँक में तब तक नहीं किया जाएगा जब तक कि ऐसे भाग या फिटिंग की विस्फोटक नियंत्रक पूर्वी सफल, कलकत्ता द्वारा जांच न की गई हो और पेट्रोलियम वाष्प या पेट्रोलियम से मुक्त होने के बारे में लिखित रूप में उसके द्वारा प्रमाणित न किया गया हो।

(4) इस नियम में निर्दिष्ट प्रमाणपत्र अनुवर्त करने के दौरान विस्फोटक नियंत्रक पूर्वी सफल, कलकत्ता, वह अवधि जिस तक और वे शर्तें जिनके अधीन ऐसा प्रमाणपत्र विधिमानी रहेगा, उस पर विनिर्दिष्ट करेगा :

परन्तु कोई ऐसा प्रपुंज तेल जलधान जिस पर गत गैसमुक्त प्रमाणपत्र अनुवर्त किए जाने से 150' एफ से कम प्रज्वलन तापंक का पेट्रोलियम वह नहीं किया गया है और जो केवल पेटा पेटिंग और जांच के प्रयोजन के लिए किसी सूखे डाँक में प्रवेश कर रहा है, जलधान के मास्टर द्वारा जारी किए गए प्रमाणपत्र पर, जिसमें यह कथित हो कि टैंकियों की उचित रूप से सफाई की गई है, सूखे डाँक में आने दिया जाएगा। यदि सूखे डाँक में प्रवेश के पश्चात् यह प्रकट हो कि जलधान में अधिक व्यापक मरम्मतों की आवश्यकता है तो ऐसी मरम्मतें करने के पूर्व एक गैसमुक्त प्रमाणपत्र प्रस्तुत करेगा।

166. किसी कक्ष को मरम्मत के लिए पृथक् प्रमाण-पत्र : गैस मुक्त प्रमाणपत्र सहित पत्तन में प्रवेश करने वाला प्रत्येक प्रपुंज तेल जलधान, ऐसी मरम्मतें, जिनमें किसी कक्ष में अनावृत वस्तुओं का उपयोग अंतर्बलित है, करने से पहले उस कक्ष के लिए एक और प्रमाणपत्र अभिप्राप्त करेगा।

167. कनिष्ठ मामलों में गैस मुक्त प्रमाणपत्र आवश्यक : पत्तन में प्रत्येक ऐसा जलधान जो ईंधन के रूप में तेल का प्रयोग करता है बंकरों में कोई मरम्मत करने के पूर्व विस्फोटक निरीक्षक या विस्फोटक सहायक निरीक्षक, पूर्वी सफल, कलकत्ता से एक गैस मुक्त प्रमाणपत्र अभिप्राप्त करेगा।

168. फंलक का अधिकारी : उस समय जब कोई पेट्रोलियम जलधान पत्तन में है एक जिम्मेदार डाँक अधिकारी और इंजीनियर अधिकारी इन नियमों के उपबंधों की क्रिया निवृत्त और प्रभावी करने के लिए फंलक पर रहेगा।

उस समय जब कोई पेट्रोलियम जलधान, पेट्रोलियम की लदाई या उतराई कर रहा हो या उसकी लदाई या उतराई की तैयारी कर रहा हो, मास्टर या प्रथम मेट और मुख्य या द्वितीय इंजीनियर फंलक पर रहेंगे और यह देखेंगे कि जलधान या उसके स्थोरा की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए प्रत्येक पूर्वावधानी ली जाती है और निश्चिततया यह कि टायलरों और मशीनरी को चालू हालत में बनाए रखा जाता है जिससे कि जलधान अविनम्य आगे बढ़ सके यदि बंदरगाह मास्टर (पत्तन) द्वारा ऐसी अपेक्षा की जाएगी।

[फा० सं० पीआर-16012/4/93-पीजी]

अशोक जोशी, संपुष्ट सचिव

अनुसूची

प्रकार "क"

(नियम 21 देखिए)

कलकत्ता पत्तन न्याम

मैं अध्यक्ष, कलकत्ता पत्तन न्याम, कलकत्ता पत्तन न्याम नियम, 1993 के नियम 21 के अधीन, एस०एम०एम०सी० को, जिसका मास्टर है, उक्त पत्तन में, जिसके फंलक पर नीचे विनिर्दिष्ट कर्मचारी होगा, उसके वर्तमान मूरिंगों में, रहने के लिए अनुज्ञप्ति देता हूँ : परन्तु यह सदैव कि उक्त नियम के नियम 22 के अधीन उसके प्रतिबंधों पर या इसके नीचे लिखित शर्तों में से किसी के अंग पर यह अनुज्ञप्ति पूर्ण रूप से समाप्त और पर्य-वर्तित हो जाएगी।

अनुज्ञप्ति की शर्तें

जलधान को उक्त पत्तन के भीतर में या उन अन्य मूरिंगों में अवस्थित रहना चाहिए जो उस निमित्त न्यामियों द्वारा सम्यक् रूप से प्राधिकृत किया अधिकारी द्वारा से तक की अवधि के लिए आवंटित किए गए हैं। कर्मचाल में काम की गई संख्या अवश्य हो।

तारीख :

(अनुज्ञापन प्राधिकारी के हस्ताक्षर)

पदनाम

अध्यक्ष

स्थान :

कलकत्ता

प्रारूप "ख"

(नियम 22 देखिए)

कलकत्ता पत्तन न्यास

मैं अध्यक्ष, कलकत्ता पत्तन न्यास, एस०एस० एम०वी० को, अनुज्ञप्ति में विनिर्दिष्ट कमीदल में कम की गई संख्या सहित उक्त पत्तन में रहने के लिए अनुदत्त प्रारूप "क" में अनुज्ञप्ति की प्रतिसंहत करता हूँ।

तारीख :

.....

(अनुज्ञापन प्राधिकारी के हस्ताक्षर)

पदनाम :

अध्यक्ष

स्थान :

कलकत्ता

प्रारूप "ग"

(नियम 23 देखिए)

कलकत्ता पत्तन न्यास

मैं अध्यक्ष, कलकत्ता पत्तन न्यास, कलकत्ता पत्तन (नौ प्रचालन) नियम के नियम 23 के अधीन अनुज्ञप्ति अनुदत्त करता हूँ कि एस०एस०, एम०वी० को जिसका मास्टर है और जो निम्नलिखित क्रीक, नदी या डॉक में बंधा है से तक की अवधि के लिए उक्त नियम के नियम 19 के उपबंधों से छूट प्राप्त होगी :

परन्तु यह तब जब कि वह इस अवधि के दौरान उक्त क्रीक, नदी या डॉक में रहे।

तारीख :

.....

(अनुज्ञापन प्राधिकारी के हस्ताक्षर)

पदनाम

अध्यक्ष

स्थान :

कलकत्ता

प्रारूप "घ"

(नियम 67 देखिए)

स्वामी का नाम और पता

.....

अभिकर्ता का नाम और पता

.....

पटेला, नौका का वर्णन अनुज्ञप्ति की प्रकृति, स्थीरा या
यात्री, धारित या अपेक्षित

.....
.....

उपर वर्णित पटेला, नौका या अधोहस्ताक्षरित स्वामी, अभिकर्ता यह निवेदन करता है कि इसे कलकत्ता पत्तन के नियम 68 के अनुसार रजिस्ट्रीकृत किया जाए।

स्वामी, अभिकर्ता के हस्ताक्षर

निवास

तारीख :

प्ररूप "ड"

(नियम 71 देखिए)

प्रत्येक पट्टेला, नौका की अनुज्ञप्ति के लिए आवेदन

ग्रेड	नौका और वर्ग का वर्णन	टन भार	निम्नलिखित की सं०		मांझी		
संख्यांक			चप्पू	कमींदल	नाम	आयु	लम्बाई

यात्रियों की संख्या

ऊपर वर्णित पट्टेला, नौका का अधोहस्ताक्षरित स्वामी, अभिकर्ता यह निवेदन करता है कि पट्टेला, नौका के रूप में चलाने के लिए कलकत्ता पत्तन न्यास नियम, 1993 के अनुसार अनुज्ञप्ति दी जाए।

तारीख :

स्वामी, अभिकर्ता के हस्ताक्षर

निवास

प्ररूप "च"

(नियम 107 देखिए)

सूखे डाँकों के विनियमन के लिए आवेदन

मुख्य यांत्रिक इंजीनियर,
8, गार्डनरीच रोड,
कलकत्ता-70043

महोदय,

हमने यह निवेदन किया है कि कृपया एम०वी० को, जिसके बारे में हम निम्नलिखित वर्णात्मक विशिष्टियां प्रमाणित करते हैं, सूखे डाँक में ले जाने की व्यवस्था करें:

लम्बाई
बीम
गढ़ी हुई गहराई
कुल टन भार
ड्राफ्ट अगला
ड्राफ्ट पिछला
कथित ड्राफ्ट में जलयान का विस्थापन भार
जलयान के तल की बनावट का स्टाइल
उसका नौतल निम्नलिखित है:—	
(क) एक कोप-प्लेट	
(ख) एक डब्ड-नीतल	
(ग) एक स्लैड-नीतल	
(घ) एक नलिका-नीतल	

उसमें :

- (ङ) एक निकास है
- (च) उसके ताल में एक उभार है
- (छ) अन्य विशेष विशेषण, अर्थात् :

बनावट का विशेष स्टाइल दर्शित करने हुए संलग्न रेखांक संख्यांकित और दिनांकित हैं। तारीख और समय जब जलयान डाक में जाने के लिए तैयार होगा
 डेकेदार का नाम और पता
 दिनों की संख्या जिसके लिए डाँक का उपयोग अपेक्षित होगा

भवदीय,

हस्ताक्षर

बन्दरगाह मास्टर (पत्तन), सी०पी०टी० के द्वारा कार्बन प्रति—बन्दरगाह मास्टर (पत्तन) सी०पी०टी० कार्बन प्रति—
 अधीक्षक, सूखा डाँक, एन०एम०डी०

तारीख : एम०वी० का स्वामी, मास्टर

प्ररूप "छ"

(नियम 108 देखिए)

कलकत्ता पत्तन न्यास

विनियमन की सूचना

सेवा में

स्वामी, मास्टर,

एस०एम०, एम०वी०

महोदय,

एस०एम०, एम०वी० के किशरपुर, नेता जी सुभाष सूखे डाँकों में तारीख
 को बजे प्रवेश के लिए आपके विनियमन संबंधित आवेदन, तारीख के अनुसरण से
 इंतजाम कर दिए गए हैं।

विनियमन की अवधि तारीख को बजे समाप्त होगी।

नथापि, आपसे बन्दरगाह मास्टर (पत्तन) को उस ठीक समय की सूचना देना अपेक्षित है जिस समय आपका जलयान डाक में जाने के लिए तैयार होगा जिससे कि वह अपने इंतजाम कर सकें।

भवदीय,

मुख्य यांत्रिक इंजीनियर

कलकत्ता

प्ररूप "ज"

(नियम 146 देखिए)

पेट्रोलियम ले जाने वाले पोत के मास्टर द्वारा या पोत के अधिकर्ताओं द्वारा पत्तन में प्रवेश करने से पूर्व की जाने वाली घोषणा।

पेट्रोलियम की प्रकृति	पोत में वहन की गई कुल मात्रा	पोत का नाम, भारत में (पत्तन का नाम) उतारी जाने वाली पेट्रोलियम की मात्रा	टिप्पणियां
(1)	(2)	(3)	(4)
(क) पेट्रोलियम वर्ग के जिसका उपयोग अंतर्वहन इंजन में किया जा सकता है।			
(ख) अन्य पदार्थ जिनका प्रज्वलन तर्पांक 23° सी (73° एन) से कम है।			
(ग) 23° सी (73° एफ) और 65.5° सी (150° एफ) से कम के बीच प्रज्वलन तर्पांक वाला पदार्थ			

योग :

एम०वी० का

स्वामी और मास्टर

MINISTRY OF SURFACE TRANSPORT

(Ports Wing)

NOTIFICATION

New Delhi, the 9th March, 1994

G.S.R. 306(E).—The following draft of Calcutta Port Rules which the Central Government proposes to make, in exercise of the powers conferred by sub-section (1) of Section 6 of the Indian Ports Act (15 of 1908) and in supersession of Calcutta Port Rules, 1944 is hereby published as required by sub-section (2) of the said section, for the information of all persons likely to be affected hereby and notice is hereby given that the said draft rules will be taken into consideration on or after the expiry of 45 days from the date of publication of this notification in the Official Gazette.

2. Any objections or suggestions which may be received from any person with respect to the said draft before the expiry of the period so specified will be considered by the Central Government.

DRAFT RULES

CHAPTER—I

GENERAL

1. Short Title.—(1) These rules may be called the "Calcutta Port Rules, 1993".

(2) Commencement.—They shall come into force on the date of the final publication of the Notification in the Official Gazette.

2. Definitions.—In these Rules unless the context otherwise requires,

(1) "Board" in relation to Calcutta Port means the Board of Trustees for the Port of Calcutta as constituted under the Major Port Trusts Act, 1963.

(2) "boat" means every kind of small craft by whatever name described not mechanically propelled, used for conveyance of passengers and or cargo and also includes pontoons in tow.

- (3) "Boat Surveyor" means the officer appointed by the Trustees to have charge under the supervision of the Superintendent, Boat Registration, of survey of boats requiring registration and licensing.
- (4) "Cargo boat" means which ordinarily carries all kinds of moveable or personal property, including animals.
- (5) "Chairman" means the Chairman of the Board and includes the person appointed to act in his place under section 14 of the Major Port Trusts Act, 1963.
- (6) "Chief Mechanical Engineer" means the officer appointed by the Central Government to have charge inter alia of the Dry Docks.
- (7) "dark" means half an hour after sunset.
- (8) "day break" means half an hour before sunrise.
- (9) "Deputy Chairman, Calcutta" means the Deputy Chairman of the Board and having charge of the Calcutta Dock System under the control of the Chairman, Calcutta Port Trust and includes the person appointed to act in his place under section 14 of the Major Port Trusts Act, 1963.
- (10) "Deputy Chairman, Haldia" means the Deputy Chairman of the Board and having charge of the Haldia Dock Complex under the control of the Chairman, Calcutta Port Trust and also includes a person appointed to act in his place under Section 14 of the Major Port Trusts Act, 1963.
- (11) "Director Marine Department" means the Head of the Marine Department appointed by the Central Government as such for the Port of Calcutta and Port approaches, and includes any other officer acting under his authority to exercise or perform the functions under the Indian Ports Act, 1908.
- (12) "Docks" means the Kidderpore Docks, Netaji Subhash Dock, Garden Reach Jetties, Haldia Oil Jetties, Haldia Docks, and all lands, roads, quays, berths, sheds, warehouses, railway works and other things appertaining thereto.
- (13) "Dock Master" means the officer appointed by the Trustees to have charge, under the supervision of the Harbour Master (Ports), of the berthing and mooring of all vessels in, and the moving of all vessels into, in or out of the docks except at Haldia Dock and Haldia Oil Jetties.
- (14) "Dry Docks" means the two dry docks in Netaji Subhash Dock and three dry docks in Kidderpore Docks.
- (15) "ferry steamer" means every description of inland vessel which regularly plies on a fixed route within or partly within the port.
- (16) "flat" means a decked-in boat which can ply only in tow of an inland vessel.
- (17) "form" means form annexed to these Rules.
- (18) "General Manager (Operations)" means the officer of Haldia Dock Complex under the control of the Deputy Chairman Haldia having overall charge of operations inter alia of the Marine Operations Division at Haldia.
- (19) "Harbour" in respect of vessels bound for Calcutta means the area above Panchpara pillar and inclusive of Netaji Subhas Dock, Kidderpore Docks and all moorings in the river and anchorage.
In respect of vessels bound for hauling out of Baj Baj moorings, the Baj Baj reach and moorings at Baj Baj shall also fall under the Harbour area.
In respect of vessels bound for Haldia, "Harbour" means part of the stretch of river between confluence of River Haldia and River Hooghly to Balari Tower including the Haldia banks and Navachara bank as also Haldia Dock.
- (20) "Harbour Master (Port)" means the officer in charge of the berthing, mooring and movement of all vessels/crafts above Panchpara pillar and inclusive of Netaji Subhas Dock, Kidderpore Docks and all moorings within the Port of Calcutta except at Haldia berths and jetties.
- (21) "Harbour Master (River)" means the officer in charge of all pilotage movements between Lower College Sand Buoy and Sandheads.
- (22) "Hover craft/Hydrofoil/Sea-plane" means a power-driven craft of special construction which raises herself off the water surface or skids forward when underway.
- (23) "Inland vessel" means any vessel which is subject to the provision of the Inland Steam Vessels Act, 1917.
- (24) "Master (Marine Operations)" means the officer under the control of the General Manager (Operations) posted at Haldia in charge of movement of ships within Haldia Dock, ingress and egress of ships in/out of Haldia Dock and other marine activities there.
- (25) "Manji" means any person in charge of a boat/flat.
- (26) "Master" when used in relation to any vessel, means any person other than a pilot being in charge or control of the vessel.
- (27) "navigable channel" means that portion of the river Hooghly used from time to time by sea-going vessels/sea-planes/hydrofoils and defined by navigational marks and buoys.
- (28) "passenger boat" means any boat which ordinarily carries other persons in addition to the manji or boatman in charge and the crew.
- (29) "pilot" means a person for the time being authorised to pilot vessels.
- (30) "Port" means the Port of Calcutta and the navigable rivers and channels leading to it in which the Indian Ports Act, 1908 is for the time being in force.
- (31) "sea-going vessel" means every description of vessel used in sea-navigation or notified as sea-going by the competent authority.
- (32) "small craft" means every description of vessel not being a sea-going vessel or an inland vessel, which is used for the conveyance by water of human beings or of property.
- (33) "Superintendent, Boat Registration" means the officer appointed to have charge, under the supervision of the Director, Marine Department, of registration licensing survey and all other allied activities of all boats/flats, not being inland vessels plying within or partly within the Port.
- (34) "Superintendent, Dry Docks" means the officer appointed to have charge of the Dry Docks.
- (35) "Tonne" means a tonne as determined or determinable by the rules for the time being in force for regulating the measurement of the tonnage of Indian ships except in the Rules for licensing and regulating flats or boats where tonne means a tonne as determined by the provisions of Rule 71.
- (36) "Traffic Manager" means the officer appointed by the Central Government to have charge of the Traffic Department.
- (37) "Trustees" means the members of the Board of Trustees for the Port of Calcutta.
- (38) "Vessel" includes every description of water craft, other than a sea-plane/hydrofoil/hovercraft on water, used or capable of being used as a means of transport on water.
- (39) "vessel under way" means a vessel not at anchor or made fast to the shore or a ground.

3. Application.—These Rules, unless it is otherwise stated, be applicable within the Port of Calcutta.

The provisions of these Rules relating to sea-going vessels shall also apply to sea-planes/hydrofoils, but where as a result of their special construction it is not possible for sea-planes/hydrofoils to comply fully with the provisions specifying the carrying the lights and shapes they shall be complied with as far as circumstances permit. Nothing contained in these Rules shall affect the provisions of :

- (i) any Rules under the Petroleum Act, 1934 (XXX of 1934);
- (ii) any Rules made under the Obstruction in Fairways Act, 1881 (XVI of 1881);
- (iii) any Rules made under Inland Steam Vessels Act, 1917 (1 of 1917);
- (iv) any Bye-laws/Regulations/Rules made under the Howrah Bridge Act, 1926 (Bengal Act IV of 1926);
- (v) any Bye-laws/Regulations made under the Major Port Trusts Act, 1963 (38 of 1963);
- (vi) any Rules/Regulations/Bye-laws made under the Environment (Protection) Act, 1986 (29 of 1986).

CHAPTER II

RULES FOR SEA-GOING VESSELS

4. Restriction on movement. Prevention of collisions at sea.—(1) Every vessel shall as and when ordered by the Director, Marine Department or Traffic Manager or Harbour Master (Port) or General Manager (Operations) or Manager (Marine Operations) move to or from any berth, mooring or anchorage in the Port :

Provided that below Garden House Point all sea-going vessels shall proceed up or down the river on the orders of the Director, Marine Department or Traffic Manager or Harbour Master (River).

(2) Every vessel navigating the River Hooghly shall be governed by International Rules for preventing Collision at Sea, as modified or supplemented by local rules prescribed by the Trustees for navigation in the River Hooghly.

(3) Any shipowner may apply to the Harbour Master (Port) or the Harbour Master (River) for a copy of the rules mentioned in sub-rule (2).

5. Regulations of Berths and Moorings, Restriction on movement without pilot or other authorised officer.—(1) All sea-going vessels shall take up the berths or moorings or occupy the places appointed for them by the Traffic Manager, Director, Marine Department, Harbour Master (Port) or Manager (Marine Operations) and move from any berth, mooring or places to any other berth, mooring or places at the direction and under the charge of any duly authorised Officer of the Port.

(2) No sea-going vessel shall move into or out of, or within the Docks, or to or from a jetty/berth/mooring/anchorage, without having a Pilot, or Berthing Master or a duly authorised officer on board, unless a dispensation for the same is given under the provision of section 31 of the Indian Ports Act, 1908.

(3) The master or the owner shall obey every lawful direction or, and act in full cooperation with all duly authorised officers of the Port for the purpose of mooring or unmoorings, moving or removing a sea-going vessel or of regulating her position or of adjusting her equipment and gear, for the loading or discharging of her cargo for her safety or similar other purposes.

6. Application for assistance. Furnishing of vessels particulars.—(1) All applications for sea-going vessels to be hauled out from Docks, moorings or for any other assistance shall be made either personally or in prescribed form to the Harbour Master (Port) or Manager (Marine Operations). For river passage, separate applications/booking shall be made with Harbour Master (River).

(2) Before a sea-going vessel is brought into the Docks or placed alongside the jetties, the master or owner or agents shall furnish to the Traffic Manager or Harbour Master (Port) or Manager (Marine Operations) or other duly authorised officer of the Port full particulars of the vessels' dimensions, draft, tonnage and special features of equipment or construction in the prescribed form.

7. Use of tugs. Use of anchors.—(1) Every sea-going vessel wishing to move within the port or in the navigable channels of the river shall employ such tugs for the purpose as are in the opinion of the Harbour Master (Port), Harbour Master (River) or Manager (Marine Operations) or the Pilot in charge, necessary for her safety.

(2) Before taking over charge of a vessel at Garden Reach Point, a Pilot shall satisfy himself that two serviceable bower anchors are ready for use and a third anchor is in such a position on deck that it can be brought into use in case of necessity. A Pilot shall also satisfy himself that sufficient cable is attached to each of the bower anchors.

8. Power of vessels.—The master of every sea-going vessel entering or leaving any mooring or any dock or Jetty berth under her own power shall be responsible for the maintenance of sufficient power to work her engines at full speed, ahead as may be required.

9. Use of moorings.—No sea-going vessel shall make fast to, or use any mooring fixed or swinging, without the permission of the Director, Marine Department or Harbour Master (Port) or Manager (Marine Operations).

10. Vessels at swinging moorings.—Every sea-going vessel lying at a swinging mooring shall, from the 15th June to the 31st October have, in addition to her bower chain, the end of a good however made-fast to the ring of the mooring.

11. Anchors at bow.—Every sea-going vessel under way, or lying in the stream or at a mooring shall at all times have at least one anchor at the bow with a cable bent ready for letting go at short notice.

12. Mooring of vessels.—No person shall moor any sea-going vessel in any manner other than that prescribed by the Director, Marine Department or Harbour Master (Port) or Manager (Marine Operations) or alter without the permission of such officers, the mooring of any sea-going vessel save for the purpose of easing undue strain or of taking up undue slack on her moorings.

13. Prohibition of anchoring.—Unless a Pilot or Harbour Pilot is on board, no sea-going vessel shall lie at anchor in the port without the authority of the Director, Marine Department or Harbour Master (Port) or Harbour Master (River) or Manager (Marine Operations).

14. Precaution against bore tides.—When bore tides are expected every sea-going vessel lying at moorings in the stream—

- (a) shall have her best hawsers made fast to the flood moorings or to her own chains close to the moorings and have taut with sufficient strain to relieve the jerk on the chains and bitts when the bore makes;
- (b) shall take up bore anchor moorings whenever required to do so by the Director, Marine Department or Harbour Master (Port);
- (c) shall have power ready on her main engines, steering gear, windless and winches for immediate use in an emergency.
- (d) No person shall come or be upon any pontoon while a bore tide is expected or in progress.

15. Vessels not to remain alongside pontoon.—No vessel shall remain alongside any pontoon except for the purpose of landing or shipping goods or of disembarking or embarking passengers.

16. Trial of engines.—No sea-going vessel occupying moorings in the docks or in the stream or lying at a dock berth

should turn her propellers without giving sufficient warning to all boats in the vicinity and unless a pilot or Berthing Master is on board, during engine trials, propellers may only be turned at dead slow speed for short periods, in each direction. No trial over the power of dead-slow for a very short period shall be made, except under the direction of a Pilot or Berthing Master.

17. Dismantling of engine.—No sea-going vessel shall, without the permission of the Director, Marine Department or Harbour Master (Port) or Traffic Manager or Manager (Marine Operations) dismantle her engines or otherwise render herself incapable of movement.

18. Storm signals.—When storm signal No. VIII, IX or X is hoisted on the flag staff at the Trustees' Office, at 15, Strand Road, the flag staff on the clock tower at the entrance to Kidderpore Docks and the flagstaff on the house of the Harbour Pilot or Pilot at Baj Baj or other authorised position in the port, the Masters of all sea-going vessels shall immediately take every precaution in their power to make their vessels snug and secure and in particular shall keep a second anchor ready for letting go.

19. Crews for vessels.—Subject to the provisions of rules 21, 22, 23, 24 and 25, all sea-going vessels in the Port shall have on board a sufficient number of crew to perform any duty which may become necessary for their safety or normal movement and in any emergency.

20. Double banking.—All sea-going vessels berthed in the docks either alongside the quay berth or at the buoys must be prepared to receive other vessels alongside them at short notice. The vessel stationary in the berth shall provide all the facilities to the vessel approaching to be berthed alongside in the interest of safety of both the vessels.

21. Licence of minimum crew.—Whenever any sea-going vessel is laid up in any berth or mooring specially allotted to her for that purpose, it shall be lawful for the Trustees by the hand of their Chairman to grant for a stated period a licence, in Form A of the Schedule authorising the vessel to remain at her berth or mooring with the minimum crew specified in that licence.

22. Revocation of licence.—It shall also be lawful for Chairman, in Form B of the Schedule to revoke the aforesaid licence in Form A, and on and after the publication of such revocation, which shall be effected by posting a copy thereof upon some conspicuous part of such vessel, the provisions of rule 19 shall apply to the vessel as if no such licence had ever been granted.

23. Licence to lie without crew.—Whenever it will appear to the Chairman that any creek, river or dock is so situated that sea-going vessels without any crew therein may remain afloat in such creek, river or dock without danger to any vessel in any part of the port, it shall be lawful for the Chairman in Form C of the Schedule to issue a licence exempting any such vessel from the provisions of rule 19 and if he thinks fit to revoke, or from time to time amend the aforesaid licence.

24. Smoking.—No person shall smoke or use naked lights of any description in a hold or between decks of a sea-going vessel or in any enclosed space in such vessel containing stores, cargo, or inflammable materials.

25. Lights.—No sea-going vessel shall without the permission of the Director, Marine Department or General Manager (Operations) use any lights other than electric lights, provided that this rule shall not apply to emergency navigation or riding lights.

26. Fires.—Lighting of fires on sea-going vessel shall be permitted only in galleys or properly constructed fire-places.

27. Fire works.—The discharge of fire-works is prohibited on all sea-going vessels.

28. Measures during fires.—When a fire has broken out in any vessel, the masters of all sea-going vessels in neighbouring berths or moorings shall furl their awnings, get their force pumps and hoses ready for use and prepare to slip their cables or hawsers.

29. Projection from vessels.—All sea-going vessels proceeding to or from the docks or jetties shall turn in all boats and remove all projections likely to collide with any wall, pier or jetty or quay equipment.

30. Projecting equipment.—No sea-going vessel lying above Garden House Point shall have projecting from her side any anchor, spar or other equipment likely to cause damage to other vessels.

31. Discharge of noxious wastes/filth/rubbish.—No person shall (a) wilfully discharge into the river or any dock, any petroleum or other inflammable liquid.

(b) wilfully throw any liquid of a noxious character or any filth or rubbish into the waters of the river or of any dock.

32. Protection of environment.—(1) No person shall,—(a) lay or place any ballast/rubbish/cargo/goods/articles/substance on any quay/pier/jetty/vessel in such a position that the same or any part of the same will be likely to fall into the water, if such ballast/rubbish/cargo goods/articles/substances likely to be detrimental to environment or cause damage to shipping after falling into the river.

(b) cast/throw or permit or suffer any ballast rubbish/cargo/goods/articles as referred to in sub-rule (1) of this rule to fall into the docks or the river from any pier, quay, jetty or vessel.

(2) The Master of any vessel from which any such cargo/goods/articles/substance/thing as aforesaid have been cast or thrown or have fallen into the docks or the river shall forthwith report full particulars of the occurrence to the Dock Master or the Harbour Master (Port) or Manager (Marine Operations) as the case may be.

33. Sounding of whistles.—No sea-going vessel shall sound her whistle or siren except in accordance with the International Rules for Preventing Collisions at Sea as modified for the River Hooghly:

Provided that no sea-going vessel shall continuously sound a whistle or siren.

34. Blue Peter.—Every sea-going vessel about to leave the Port shall hoist the Blue Peter at the fore at 6 A.M. on the day prior to that on which she breaks moorings, and shall keep it hoisted until the pilot assumes charge to take her to sea; Provided that this rule shall not apply in time of War.

35. International Code: Flag 'A'.—Every sea-going vessel entering moorings or proceeding to a jetty shall hoist International Code Flag 'A' on the triatic stay and shall keep it so hoisted until the Harbour Pilot or Pilot in charge, when he considers it safe for inland vessels and small craft to come alongside orders it to be lowered.

36. Prohibition of private signals.—No signals excepting those authorised by the International Code of Signals shall be hoisted by a sea-going vessel without the authority of the Director, Marine Department or Harbour Pilot or the General Manager (Operations) or Pilot in charge.

37. Signal lights.—Every sea-going vessel shall between dark and day break exhibit the lights required by the International Rules for Preventing Collisions at Sea. No other signal lights shall be exhibited except by direction of the Pilot in charge.

38. Use of search lights.—The use of search-lights by any sea-going vessel within the port is prohibited except by the direction of the Director, Marine Department, Harbour Master (Ports) or Harbour Pilot or the Pilot in charge or Manager (Marine Operations).

39. Display of lights while towing/pushing.—Every sea-going vessel when being towed/pushed shall display lights/shapes as prescribed for such vessels by the International Rules for Preventing Collisions at Sea as may be in force/ amended from time to time.

40. Lights of the sea-going vessel not to interfere with the lights of tugs.—Every sea-going vessel in the port in two of tugs lashed alongside shall extinguish all lights which interfere with the visibility of the lights exhibited by the tugs.

41. Towing lights.—A sea-going vessel towing another sea-going vessel in the Port shall—

- (a) when towing ahead exhibit lights prescribed by the International Rules for Preventing collisions at Sea;
- (b) when towing alongside exhibit side lights only on the side away from the tow.

42. The additional white light mentioned in clause (b) of rule 41 shall not be carried by a sea-going vessel going in tow in the port with tug/tugs alongside.

43. Lights for vessels aground and vessels at anchor.—(1) Every sea-going vessel aground in the Port or the navigable channel of the river shall exhibit lights/shapes in accordance with the International Rules for Preventing collisions at sea as may be in force/amended from time to time.

(2) The black ball required to be exhibited by vessels at anchor as prescribed in the International Rules for preventing collision at sea shall not be carried by any vessel between Saugar Roads and Rabindra Setu.

(3) A black ball at the foremast or at the Signal Yardarm on the foremast shall be shown by every vessel under weigh when going full speed. The ball is to be lowered down halfway when the engine of the vessel are running at reduced speed or when the vessel is manoeuvring. The use of the ball is compulsory between Saugar Roads and Rabindra Setu and optional below Saugar Roads.

44. Precaution against accidents.—The master of every sea-going vessel shall take all necessary precautions by placing guards or otherwise to prevent injury to persons or damage to property through the discharge of steam, oil or water from any part of his vessel.

45. Securing beams and hatchway.—When cargo is being loaded into or unloaded from a sea-going vessel through any of her hatchways, whether on deck or below, the longitudinal (fore and after) and athwartship beams and hatchway covers of such hatchways shall be secured in such a manner as will effectually prevent them from falling into the hold or overboard.

46. Safety of workmen.—The Master of any sea-going vessel requiring work to be done in bilges, boilers or double bottoms shall take all precautions to ensure that working conditions in such places are made safe before any person is sent into them.

CHAPTER III

RULES OR INLAND VESSELS

47. Comprehensive Rules.—The provisions of Rules 9, 10, 11, 24, 25, 26, 27, 28, 33, 41 and 43 shall apply in relation to inland vessels as they apply in relation to sea-going vessels.

48. Navigable channel.—Every inland vessel shall be so navigated as to keep free the navigable channel required by sea-going vessels.

49. Regulation of berths and moorings.—Every inland vessel shall take up, or move to or from, any berth, mooring or place when directed to do so by a duly authorised officer of the Port.

50. Anchoring.—No inland vessel shall anchor in such a position or in such a manner as to offer obstruction to any sea-going vessel in the navigable channel.

51. Restriction on movement.—No inland vessel shall proceed alongside any sea-going vessel for any purpose while International Code Flag "A" is flying on the triatic stay of the latter.

52. Regulation of Routes.—Every inland vessel passing under the Vivekananda Bridge at Bally shall, when proceeding from North to South, pass between piers Nos. 2 and 3, and when proceeding from South to North piers Nos. 2, 3 and 4.

53. Prohibited anchorage.—No inland vessel shall anchor—

- (a) in Garden Reach between the Lower College Sand buoy and the Upper Panchpara Flat buoy; or
- (b) in Baj Baj Reach between the Fort Gloster buoy and the southern boundary pillars of the Port of Calcutta;
- (c) in Haldia Reach between Haldia River and Balari Tower;
- (d) in the area Cossipore to Bally—between a line drawn north of Pran Nuth Roy Chowdhuri's Ghat to a point 250 feet North of Chum Mull Khettri's Ghat on the right bank and a line drawn from the north end of the Cossipore Gun and Shell Factory on the left bank to a point 700 feet south of Gardener's House on the right bank;
- (e) in the area Khardah to Barrackpore—between a line drawn 950 feet north of Jagannath Ghat to a point 125 feet north of a ghat at Titaghar Jute Mill on the left bank and a line drawn 700 feet south of Jagannath Ghat on the right bank to a point 300 feet north of the northern jetty of the Khardah Jute Mill on the left bank;
- (f) in the area Ichapur to Shamnagar between a line drawn 350 feet south of Durgamoni Ghat on the right bank to a point 1,200 feet north of Shastitola Ghat on the left bank and a line drawn 350 feet north of Cherbindi Ghat on the right bank to a point 850 feet north of Harish Basu's Ghat Shamnagar, on the left bank.

54. Free passage.—Every inland vessels at anchor or under way, shall at all times afford free passages of sufficient width to piers, jetties, landing places, wharves, quays, docks and moorings.

55. Navigation Rules.—Inland vessels navigating the River Hooghly shall navigate at all times as follows:—

- (a) between Kidderpore Docks Netaji Subhas Dock on the edge of College Sand:

Provided that no inland vessel with a flat or flats in tow when coming up on the flood tide between sunset and sunrise shall proceed above Netaji Subhas Dock until the ebb tide has made:

- (b) between Netaji Subhas Dock and Rajabagan Ferry Station, either close to the right bank or to the outer line of moorings close to the left bank of the River: Provided that every inland vessel other than a stern wheeler, launch, tug or ferry steamer which has no other craft in tow shall when sea-going vessels are under way and about to turn either on the flood or ebb tide heave to on the College Sand if she is above the sea-going vessels and off the Union South Jute Mill if she is below them until such time as the sea-going vessels have completed the manoeuvre of turning round;
- (c) between Rajabagan Ferry Station and Akra Semaphore on the edge of Sankral Sand;
- (d) between Akra Semaphore and Pir Serang Shrine, on the edge of Munikhali Sand;
- (e) between Pir Serang Shrine and the north end of Budge Budge, on the edge of Koffri Sand;
- (f) between the north end of Baj Baj and the Premchand Jute Mill, near the right of the River and on the edge of Budge Budge Sand: Provided that between Fort Gloster Flat Buoy and the Lothian Jute Mill on inland vessel other than a stern wheeler, launch, tug or ferry steamer which has no other craft in tow shall navigate the channel when sea-going vessels are turning or about the turn on either the flood or ebb tide:

- (g) between the Premchand Tute Mill and the upper end of Moyapur Bar, on the edge of Achipur Sand;
- (h) On Moyapur Bar, the shallow tracks;
- (i) in Royapur Reach, on the edge of Royapur Sand;
- (j) on Royapur Bar, the shallow tracks;
- (k) in Brul Reach, on the edge of Brul Sand;
- (l) in Fisherman's and Fulia Reaches on the edge of Fulia Sand;
- (m) in Ninan Reach, on the edge of Shipgunge Sand;
- (n) in Nurpur Reach and in the vicinity of the James and Mary, the Western Gut: Provided that between the 15th August and 1st December, they may navigate the Eastern Gut during the ebb tide;
- (o) From Hooghly Point to Hospital Point, the left bank of the River over Hooghly Sand;
- (p) from Hospital Point to the Silver Tree Point, the left bank of the River.

56. From Rabindra Setu down to and including Luff Point inland vessels crossing or intending to cross from one side of the navigable channel to the other, shall not obstruct the passage of, or cause risk of collision with, any sea-going vessel which is using the crossing at the time, but shall slacken speed, stop or reverse and if necessary turn round.

57. Restriction on speed.—(1) Outward bound vessel shall when approaching Baj Baj and abreast of Madhu Chak Mark in Koffri Reach reduce their speed to six knots through the water and the speed shall not be increased until the vessel has passed the lower Fishing Marks at Baj Baj.

Inward bound vessels shall reduce their speed to six knots through the water when abreast of the Upper Baj Baj Sand Buoy in Baj Baj Reach and shall not increase their speed until they have passed the Fort Gloster Column:

Provided, however, that if at six knots the vessel makes a wash which might cause other vessels in the Baj Baj mooring to range on their mooring cables, the speed shall be further reduced.

(2) No vessel shall overtake any other vessel off the Baj Baj Oil Moorings.

(3) No vessel shall pass Haldia Oil Jetty at a speed in excess of six knots or at a speed which may cause the vessel alongside Haldia Oil Jetty to range.

58. Unmooring during freshets.—Inland vessels lying above Rabindra Setu shall not haul out of moorings from 15th June to 31st October during the last quarter of the ebb.

59. Storm signals.—When a storm signal is hoisted on the flagstaff at the Trustees' office, 15, Strand Road the flagstaff on the clock tower at the entrance to Kidderpore Docks and the flagstaff on the Harbour Pilot's house at Baj Baj or other authorised position in the port the masters of all inland vessels shall immediately take every precaution in their power to make their vessels snug and secure.

670 GI/94—5

60. Inland vessels and bores.—No inland vessel shall lie alongside a floating pontoon while a bore is making. Any inland vessel lying alongside a floating pontoon when a bore is due, shall cast off and lie in the stream till the bore has passed, when it may, if so required, proceed alongside again.

61. Crews for vessels.—Every inland vessel shall have on board a sufficient number of crew to perform any duties which may become necessary for her safety or movement in any emergency.

62. Prescribed lights.—Every inland vessel shall exhibit the lights prescribed in the Rules made under the Inland Steam Vessels Act, 1917 (1 of 1917).

63. Search lights.—Inland vessels are permitted to use search-lights for navigational purposes: Provided that no search-light shall in any circumstances be directed so as to interfere with the navigation of any vessel under way.

64. Fire appliances.—Every inland vessel shall carry the fire appliances prescribed in the Rules made under the Inland Steam Vessels Act, 1917 (1 of 1917).

65. Comprehensive Rule.—The provisions of rules 9, 10, 11, 27 and 43 shall apply in relation to flats and boats as they apply in relation to sea-going vessels; and the provisions of rules 48, 49, 50, 51 clauses (c), (d) and (e) of rules 53, rules 54, 59 and 60 shall apply in relation to flats and boats as they apply in relation to inland vessels.

66. Boat Registration and licensing.—No flat or boat shall ply whether regularly or occasionally, within or partly within the Port, unless it has been registered and licensed on payment of prescribed fees. The Boat Surveyor shall at the time of registration brand on the flat or boat her registered number and tonnage: Provided that no flat or boat required to be registered under the Registration of Barges Rules, 1952, shall be registered and licensed by the Trustees, unless such flat or boat has been registered by the Registering Authority, Government of West Bengal and has had her registered number branded according to the provisions of the said Registration of Barges Rules, 1952, and no number shall be branded on such flat or boat by the Trustees' Boat Surveyor.

67. Application for registration.—Every application for the registration of a flat/boat shall be made in writing to the Trustees' Boat Surveyor in Form 'D' of the Schedule with an affidavit and photo certificate furnishing the following particulars:—

- (a) Owner's name and address, or name and address of his duly authorised agent in Calcutta,
- (b) description of the boat or flat, and
- (c) nature of licence, cargo or passenger, held or required.

68. Method of registration.—Every flat or boat requiring registration, shall, if a flat, be placed at a convenient mooring or, if a boat be sent to the special licensing buoys at Outram Ghat for measurement under rule 70 by the Trustees' boat Surveyor who shall enter in a register, to be maintained by him, the particulars mentioned in Rule 67, together with all relevant measurements taken under rule 70.

Every flat/boat requiring registration shall be placed at the licensing buoy or at a convenient place for stage inspection to be carried out by the Trustees' Surveyor on payment of the prescribed fees. Provided that any flat/boat may, on payment of prescribed fees, be surveyed at the owner's workshop.

69. Cancellation of registration.—The registered number of a flat/boat shall remain in force as an identification number throughout the whole working life of the flat/boat unless—

- (a) the flat/boat remains unlicensed for a period of 3 years,
- (b) the flat/boat is condemned by the Trustees' Boat Surveyor as unfit for further service,
- (c) the number branded on the flat/boat becomes obliterated and cannot otherwise be traced, and
- (d) the dimensions of the flat/boat are altered.

70. Method of Measurement.—Every flat/boat shall for the purpose of these rules be measured—

- (i) for Cubic Capacity by the formula
 $LXBXD \times K = \text{Cubic Capacity}$ where:

L is the length in metres measured from the inside of the stem post to the inside of the stern post;

B is the greatest breadth in metres measured from side to side inside the ceiling planks or inside the frames whichever measurement is less;

D is the greatest depth in metres from a line extended from side to side across the uppermost continuous strakes to the upper side of the floor ceiling plank or to the upper side of the floor whichever measurement is less;

K is a constant dependent on the type of flat/boat and taken from the following table:—

Class I:—

- (a) Flush decked, square built and open boats and flats. ...K=0.9
- (b) Bazar boats where the brake forward and aft does not exceed 23 cms. ...K=0.8
- (c) Bazar boats where the brake forward and aft exceeds 23 cms. ...K=0.7

Class II—Open country boats known as—

- (a) Jolly boats of powoos. ...K=0.9
- (b) Hollahax. ...K=0.83
- (c) Bhurs and ponsways. ...K=0.8
- (d) Dinghees, Bowleahs and Green boats. ...K=0.64
- (e) Chotes. ...K=0.63

Provided that (i) for straw boats Cubic capacity shall be measured by the same formula in which L and K are taken as above, and

B is the breadth in metres measured inside the ceiling planks or inside the frames, whichever measurement is less, under the deck beam amidships,

D is the depth in metres measured from the underside of the deck beam amidships to the upper side of the floor ceiling planks or to the upper side of keelson whichever measurement is the less;

(ii) for Freeboard—

- (a) by taking if it is a decked or open flat or boat of iron and steel, the figure in the column headed "F₁" or "F₂" as the case may be corresponding to the depth of the vessel (D) in accordance with the following table, the correction (C) being applied where the length (L) does not correspond with the depth.

D	F ₁	F ₂	F ₃	C
m	m	cm	cm	cm
1.68	16.76	22	30	1.905
1.83	18.29	24	32	1.905
1.98	19.81	27	36	1.905
2.13	21.34	29	39	1.905
2.29	22.86	32	43	1.905
2.44	24.38	35	46	1.905
2.59	25.91	37	49	2.223
2.74	27.43	40	53	2.223
2.90	28.96	42	56	2.223
3.05	30.48	45	59	2.223
3.20	32.00	47	63	2.223
3.35	33.53	50	66	2.223
3.51	35.05	53	71	2.540
3.66	36.58	57	76	2.540
3.81	38.10	60	80	2.540
3.96	39.62	64	84	2.540
4.11	41.15	68	90	2.540
4.27	42.67	70	93	2.540

D=Depth,

L=length,

F₁=Freeboard for decked flats or boats of iron or steel.

F₂=Freeboard for open flats or boats of iron or steel,

C=Correction to be applied to the freeboard for every 3.05 metres difference in length.

- (b) bytaking, if it is a wooden boat either square built or country built, or a composite built boat, 8 cms, for every 30 cms. depth of hold, as measured under clause (i) above.

- (iii) for Passengers by dividing the superficial area in square metre of the deck space available for passengers by 0.5574 and counting, if carried, two children below the age 12 years or 74.64 kgs. weight of luggage as the equivalent of one passenger;

Provided that for boats belonging to private firm or companies and used exclusively for the conveyance of their employees, the divisor shall be 0.3710 instead of 0.5574.

- (iv) for passengers and Cargo under clause (i) and (ii) above.

71. Application for licence.—Every application for a licence for a flat/boat shall be made in writing to the Trustees' Boat Surveyor in Form "E" of the Schedule and shall contain the following particulars:—

- (a) Owner's name and address, or
- (b) name and address of his duly authorised agent in Calcutta.
- (c) a description of the flat or boat.
- (d) the registered number branded on the flat/boat by the Trustees' Boat Surveyor or the registered number marked according to the provisions of the Registration of Barges Rules, 1952, and
- (e) the name of the Manjhi in charge of the flat/boat.

72. Method of licensing.—Every flat or boat requiring a licence shall, if a flat, be placed at a convenient mooring or, if a boat be sent to the special Licensing Buoy at Outram Ghat for survey by the Trustees' Boat Surveyor who, on payment of prescribed fees, shall:

- (a) issue a licence, if the flat/boat is found to be in good order and suitable for the purpose for which it is intended or
- (b) indicate, if the flat/boat is not in good order, the repairs or alterations necessary before a licence can be granted;

Provided that any flat/boat may, on payment of the prescribed fees, be surveyed at the owner's work-shops.

Every flat/boat so licenced other than a flat/boat required to be registered under the Registration of Barges Rules, 1952, shall have her registered number in figures not less than 15 cms. high painted/welded/engraved on both bows by the Trustees' Boat Surveyor.

73. Manjhi's licence.—No flat/boat shall be allowed to ply within the port unless it is in charge of a Manjhi licenced by the Trustees. Manjhi Licence Book which is not transferable shall contain all the licences granted to the Manjhi and such licences will ordinarily be issued at the same time as the flat/boat licence. A Manjhi newly appointed having no earlier Manjhi Licence in his name will have to appear before the Board Surveyor for test after three months of working for which licence was issued. A Manjhi newly placed in charge of a flat/boat shall himself apply for a licence to the Trustees' Boat Surveyor and shall procure the licence of the flat/boat in which his name shall be entered by the said Surveyor.

A Manjhi licence may be revoked in case of breach of any of the conditions of the licence or these rules by the concerned Manjhi.

Failure to appear before the Trustees' Boat Surveyor for test on the expiry of the licence granted to him shall render the Manjhi liable to be charged duplicate Manjhi licence fees on every such occasion for immediate subsequent licensing.

74. Manjhi Licence Book.—Manjhi's Licence Book is obtainable from the Boat Registration office on payment of prescribed fees.

75. Cargo Boat Crew.—(1) Every flat or cargo boat plying in the port shall carry—

- (a) an approved life-buoy or a suitable approved substitute with a suitable life line attached to it of size not less than 1 inch in circumference and 10 fathoms in length ;
- (b) when under way, when in tow or when waiting outside the entrance to the Kidderpore or Netaji Subhas Docks, the crew laid down in sub-rule (2) ;
- (c) 50% of the crew laid down in sub-rule (2) subject to a minimum of two, when laid-up. The rounding of fractional figures, for this purpose will, as a special case, be the nearest lower whole number. However, when a flat or a cargo boat is laid-up at sites above the Vivekananda Bridge, a minimum of one crew/watchman only will be necessary.

(2) The crew for a flat or cargo boat shall be as under :

Category of flat or boat	Mining Scale
(i) Upto 60 registered metric tonnes	1 Manjhi
(ii) exceeding 60 registered metric tonnes but not exceeding 90 registered metric tonnes	1 Manjhi 3 Dandeas
(iii) exceeding 90 registered metric tonnes but not exceeding 115 registered metric tonnes	1 Manjhi 5 Dandeas
(iv) exceeding 115 registered metric tonnes but not exceeding 160 registered metric tonnes	1 Manjhi 5 Dandeas
(v) exceeding 160 registered metric tonnes	1 Manjhi 6 Dandeas

76. Passenger boat crew.—Every passenger boat plying in the port shall carry,—

- (a) Not less than two approved life-buoy or suitable approved substitutes with suitable life lines attached to them not less than 1 inch in circumference and 10 fathoms in length, and if she is licensed to carry more than 40 passengers one additional approved life-buoy or a suitable approved substitute with a suitable life line attached to it for every additional twenty passengers or part thereof,

(b) When under way or plying for hire, if she is licensed for—

not more than 10 passengers, a crew of	2 Dandeas 1 Manjhi
not more than 15 passengers, a crew of	3 Dandeas 1 Manjhi
not more than 20 passenger, a crew of	4 Dandes 1 Manjhi
not more than 25 passenger, a crew of	5 Dandeas 1 Manjhi
not more than 30 passengers, a crew of	6 Dandeas 1 Manjhi
not more than 35 passengers, a crew of	7 Dandeas 1 Manjhi

(c) When laid up for the night or when lying at anchor if eshe is licensed for—

not more than 15 passengers, a crew of	1 man
not more than 20 passengers, a crew of	2 men
not more than 30 passengers, a crew of	3 men
more than 30 passengers, a crew of	4 men

77. Load line.—Every flat/boat exceeding the registered measurement of 28 cu. mts. shall have her load line which shall at no time be submerged, indicated by a conspicuous mark cut into the hull and painted white on dark ground. This mark shall be made by the Trustees' Boat Surveyor at the time of registration.

78. Exhibition of passenger plate.—Every boat licensed to carry passenger shall exhibit a passenger plate on which shall be shown in english and Bengali the registered number of the boat, licence number, the number of passengers she is authorised to carry, the number of her crew and the expiry date of her licence.

79. Inspection of licence.—Every Manjhi in charge of a flat or boat plying in the port shall carry his own licence and the licence of his flat/boat, each of which shall be produced whenever it is required by the Port Police or by an officer/staff duly authorised by the Trustees.

The licence of a passenger boat shall also be produced for inspection at the request of any passenger.

80. Seizure of licence.—In case of breach of these rules or any of the conditions of the Licence by the owner or agent or Manjhi of the flat or boat, the flat/boat may be seized by the Port Police or by an Officer/Staff authorised by the Trustees and kept in police custody till finalisation of the dispute.

The boats/flat plying without licences or with expired licence or without licensed Manjhi or with a Manjhi with expired Manjhi licence may be seized by the River Traffic Police and place at the Licensing Buoy for registering and licensing as the case may be by the Superintendent, Boat Registration. The licences of such seized boats/flats shall be referred to the Superintendent, Boat Registration for recovery of prescribed charges.

81. Duration of licence.—Every licence granted under these rules shall usually continue to be in force for one year from the date on which it is granted, unless revoked. The licence may also be granted to a boat/flat for restricted period of less than a year, if considered necessary. Duplicate licence may also be issued in lieu of lost or deferred licence.

Every expired or revoked licence shall be surrendered to the Trustees' Boat Surveyor without delay.

82. Extension of licence.—An extension of licence may be granted for a period not exceeding 3 months at the rate prescribed in the Calcutta Port Trust Scale of Rates :

Provided that no such extension shall be granted until the flat/boat has been surveyed and found to be in good order and suitable for the purpose for which it is intended.

Notwithstanding anything contained in this rule an extension of licence for a period not exceeding three months may be granted without a survey in case of a boat held up outside the Port of Calcutta and its navigable river and channels.

3. Renewal or extension of licence under certain circumstances.—(1) The owners of boats and flats plying within the Port shall be responsible for renewal or extension of licences, granted for such vessels, immediately on the expiry of such licences unless the vessels are completely laid up for repairs and cease to ply in the Port at that time. When the boats or flats are not actually plying at the time of renewal or extension of licence, the owners shall inform the Trustees' Superintendent Boat Registration in the prescribed form within a week therefrom.

(2) Failure to comply with the provision shall without prejudice to the other rights of the Trustees, render the owner liable to be charged licence fees at double the rate (for the expired period) from the date of expiry of the licence or at such enhanced rate as may be laid down by the Trustees from time to time.

84. Continuity of licence.—(1) The continuity of the licence shall be maintained if application for renewal or extension of the expired licence of the boat flat is made and such boat/flat prescribed within 7 days of the expiry of the licence.

(2) The break in continuity of licences granted shall be allowed in regard to boat laid up for repairs only. The owners must state the location, type of work involved and the duration of such repairs and apply for laying up the Boat/flat. Discontinuity of licence shall only be allowed if the laid-up period is over six weeks and prior intimation in writing is given to the Trustees' Superintendent Boat Registration by the Boat owner before the expiry of the licence.

(3) In case the validity of licence of a boat/flat expires while the boat/flat is in inside the Docks loaded with cargo and awaiting discharge, the owner should inform the Superintendent, Boat Registration at least a week prior to the expiry of such licence and obtain extension certificate or temporary licence after survey on account of the reason stated above and deposit the prescribed fees as the case may be. The Superintendent, Boat Registration on being satisfied will stamp their licences stating that such boats/flats are not to be loaded again and are to be placed for survey outside the docks on completion of discharge of cargo. In the event of failure to comply with the above provision the normal penalty charges shall be levied.

85. Refusal of licence.—Notwithstanding anything contained in these rules, the Trustees reserve the right to refuse any application for the issuance of extension of a licence.

86. Re-measurement.—The owner or agent of a flat or boat which has been altered in dimension during the currency of its licence shall at once send it to the Trustees' Boat Surveyor for re-measurement.

87. Re-survey.—The Trustees may at any time direct a licensed flat or boat to be re-surveyed without any fee.

88. Transfer of ownership.—The transfer of ownership of flats/boats may be effected by submitting the prescribed form duly filled-up and stamped, a money receipt and by delivery of possession of the flats/boats. The transferor must for the sake of record procure a letter from the transferee being the lawful owners of the flat-boat addressed to the Board of Trustees that a transfer of the flat/boat has been made indicating the mode of transfer and stating that the transferor has no further interest in it.

An advertisement will be issued in one of the leading newspapers, at the purchaser's expense notifying sale of a flat/boat as well as furnishing details, of the flat/boat viz. brand, registered tonnage, date of sale, name of the seller and the purchaser, etc. Such advertisement would be issued by the Superintendent, Boat Registration, Calcutta Port Trust giving a time limit of 15 days to the general public to notify their objection in writing together with documentary proof, if any, to the authorities concerned and if no objection is forthcoming within the stipulated time limit, then the transaction would be taken as finalised and the flat/boat, would be transferred in the name of the purchaser.

89. Loss of boat.—If a flat/boat is broken up or lost, the owner or agent shall without delay return the certificate of Registry and the licence to the Boat Surveyor for cancellation.

90. Unlicensed boat with cargo.—(1) Every flat or boat arriving in the Port without a licence or with a licence which has expired and wishing to discharge cargo shall at once apply for an unloading permit at the nearest Inland Wharves Toll Office and deposit with the Cashier a charge at double the rate of the maximum licence fee payable for the boat/flat for one year.

(2) Any flat/boat discharging cargo under this rule shall within 15 days of the date of entering the Port, or if a straw boat, within 30 days, proceed for survey and licence to the licensing buoy at Outram Ghat. Any balance of deposit remaining after payment of the prescribed fees for licensing shall be refunded to the party concerned.

(3) No amount deposited under this rule is refundable if the boat/flat sent for repair or relicensed for restricted period is not surveyed within the time or the formalities under the Port Rules are not observed.

91. Carriage of passenger.—No person in charge of a licensed passenger boat plying for hire in the port shall, without good reason, refuse to carry in such boat a passenger tendering the proper hire.

92. Boats to be under control.—All boats under way within the port shall themselves have sufficient control or shall be in tow of a vessel of sufficient power so that they are able to keep free the navigable channel required by sea-going vessels.

93. Clearance area for sea-going vessels.—The navigable channel between the Lower College Sand Buoy and the Upper Panchpara Flat Buoy and between the Port Gloster Flat Buoy and the southern boundary pillars of the Port of Calcutta shall at all times be kept clear for the manoeuvring of sea-going vessels.

Boats may lie ashore on the right bank in Garden Reach but they shall not place or have any anchors or mooring tackle in the stream.

94. Navigation rules.—(a) (1) Flats or boats within the port shall, at all times, navigate as follows :—

(a) between Kidderpore Docks and Netaji Subhas Dock, between the right bank of the river and the line of buoys marking the edge of College sand ;

(b) between Netaji Subhas Dock and Rajabagan Ferry Station, close either to the right bank or to the outed line of mooring buoys on the left bank of the river ;

(c) between Rajabagan Ferry Station and Akra Sentalphore, on the edge of Sankral Sand ;

(d) between Akra Sentalphore and Fir Serang Shrine on the edge of Munikhali Sand ;

(e) between Fir Serang Shrine and north end of Baj Baj, on the edge of Kofri Sand ;

(f) between the north end of Baj Baj and the southern boundary of the port, on right back of the river.

(2) From Rahindra Setu down to and including Tuff Point every flat or boat navigating near a crossing shall proceed with caution and, if necessary anchor outside the navigable channel so that sea-going vessels may pass clear.

94. Restriction on movement.—(b) No boat shall proceed alongside any sea-going vessel entering moorings or proceeding to a jetty berth, when during the day. International Code Flag 'A' is flying at the triatic stay of the vessel, or when at night, two lights are exhibited vertically, that is a red light over a white light six feet apart visible all round the horizon.

95. Cargo boats alongside sea-going vessels in moorings.—The maximum number of cargo boats permitted to lie abreast of each other on the outside of vessels in the outer berth of the undernoted moorings shall be :—

- In No. 1 Calcutta Moorings, flat or 2 boats
- in No. 4 Esplanade Moorings, 1 flat or 4 boats
- in No. 3 Esplanade Moorings, 1 flat or 4 boats
- in No. 2 Esplanade Moorings, 1 flat or 5 boats
- in No. 1 Esplanade Moorings, 1 flat or 5 boats
- in No. 1 Princeps Moorings, 1 flat or 4 boats
- in No. 3 Hastings Moorings, 1 flat or 5 boats
- in No. 2 Hastings Moorings, 1 flat or 5 boats.

96. I.V. Wharves.—No flat/boat shall be at or alongside the Inland Vessels Wharves for the receiving, landing or shipment of goods out of, or into, any vessel, not being a sea-going vessels, except when such flat/boat is so landing or shipping goods.

97. Fishing boats.—Fishing boats are exempted from registration and licensing. However, those boats shall observe all other rules applicable to boats :

Provided that between day-break and dark no fishing boats may be moored in the navigable channel between the South-end of Ulubera Reach and Fulla Point.

98. Wooden Dinghee.—Any wooden dinghee used for ferrying passengers and materials between vessels and shore in the docks must obtain plying permit from Dock Master on payment of prescribed fees, the validity of such plying permit must conform to the passenger licence/certificate issued by Superintendent, Boat Registration.

99. Exhibition of lights.—Every boats whether at anchor or under way shall between dark and day-break exhibit at a height of at least 1.83 metres above the dock a white light in a weather proof lantern so constructed as to give a uniform and unbroken light of sufficient power to be visible all round the horizon at a distance of at least 1.61 kms.

100. Dumb barge.—Every dumb-berge, lighter or flat in tow of a sea-going vessel in the port—

(a) shall, if in 'tow' alongside in the night exhibit in a properly constructed lantern on the outer edge of the vessel and at a height of not less than 91 cms. above any obstruction on deck, a white light, clear, uniform and unbroken, which shall be visible all round the horizon at a distance of at least 3.23 kms.

(b) shall, if in tow astern, exhibit a similar white light at the aft and at a height of not less than 1.83 metres above the deck.

101. D Fire places.—No fire shall be lighted in a flat/boat except in a properly constructed iron caboose or fire-place which shall be kept on deck or in such other part of the flat/boat as the 'Trustees' Boat Surveyor may direct.

102. Lost property.—When property belonging to any passenger is left in a boat it shall at once be sent by the person in charge of the boat to the officer-in-charge of the nearest Police Station.

103. Reporting of accident.—Whenever any accident occurs to a flat/boats, the owner, agent or person in charge of such flat/boat shall at once proceed to the nearest Port Police Station and report to the Officer-in-charge, the circumstances connected with the accident.

104. Issue of certificate after accident.—(1) The owner, agent or person in-charge of the flat or boat shall, after complying with the provisions of rule 103 submit a report in writing to the 'Trustees' Superintendent Boat Registration along with the licence of the flat/boat stating the nature of the accident and the details of the repairs required to be carried out.

(2) On receipt of the report, the Superintendent, shall cause the flat/boat to be examined and specify in writing the repairs to be carried out.

(3) After the repairs so specified under sub-Rule (2) have been duly carried out, the flat/boat shall be placed again before the Superintendent.

(4) On being satisfied about the repairs, the Superintendent shall issue a certificate in writing to that effect enclosing the licence of the flat/boat referred to in sub-rule (1) on the basis of which alone the flat/boat may be allowed to ply in the river.

105. Owner or Manjhis' responsibilities.—Without affecting his other responsibilities under these rules, the owner or the person in charge of any boat shall, in particular, be responsible :—

(a) that the boat is provided with the number of crew and life-saving appliances required by these rules ;

(b) that the boat is kept thoroughly clean ;

(c) that the registered number is kept clearly painted on both sides in the manner prescribed by these rules ;

(d) that valid licences are carried both for the boat and Manjhi ;

(e) that the gear, tackle and life-saving appliances specified in the licence are provided and maintained in good working order ;

(f) that the load line is clearly marked and at no time submerged ;

(g) that the boat, if carrying passengers does not contain any person in excess of the number for which it is licensed ;

(h) that the boat is at all times moved so as to keep a free navigable channel for sea-going vessels ;

(i) that the boat or flat should under no circumstances interfere with ship's movement or create obstruction to ship's work in the river or docks ;

(j) that the boat or flat should not be kept unattended in the docks or river ;

(k) that the boat or flat should in no way be involved in activities like theft, smuggling, pilferage etc.

106. Revocation of licence.—A licence granted to any flat/boat may be revoked—

(a) If the dues or charges payable to the Trustees on any account or charges in respect or in any way connected with the flat/boat remains unpaid for a period of three weeks from the date of demand thereof.

(b) whenever the flat/boat is in the opinion of the Trustees unfit for the purpose for which it is licensed ;

(c) whenever any breach of the conditions of the licence or of these rules has been committed by the owner or his agent or by the Manjhi in charge of the flat/boat ;

(d) whenever the Trustees may think fit ;

Provided further that in case of a dispute arising out of revocation of any licence under clauses (a), (b) and (c) Chairman/Deputy Chairman shall be the final authority.

CHAPTER V

RULES FOR REGULATION OF DRY DOCKS

107. Application for dry docking.—Application for placing a vessel in a dry dock may be made to the Chief Mechanical Engineer, at any time. However, no definite date of regulation shall be allotted to the vessel until the application has been made in the prescribed Form 'F' of the Schedule annexed hereto which may be obtained from the office of the Chief Mechanical Engineer.

108. Regulation of dry docks.—On receipt of an application mentioning therein preference for Kidderpore or Netaji Subhas Dry Docks in the prescribed form, the vessel shall be placed on Entry List and an advice giving particulars of her regulation shall be sent to the applicant in the prescribed Form 'G' of the Schedule annexed hereto.

No vessel shall be permitted to enter a dry dock without previous regulation and no application shall be deemed to have been accepted until the advice of regulation in prescribed Form 'G' has been sent.

109. Order of docking.—Vessels accepted in dry dock other than those provided for under rule 110 shall be docked in the order in which they appear in the Entry List.

Provided that —

- (a) if any vessel which is not ready on her booked date or on the date the dry dock is vacant, whichever is later, shall forfeit one place in the list.
- (b) any vessel the dimension or construction of which is found to differ from the descriptive particulars given in the prescribed Form 'F' to an extent which may in the opinion of the Superintendent, Dry Docks interfere with the safe docking of the vessel shall be refused entry into the dock.
- (c) Dry dock booking should be confirmed in writing 48 hours before scheduled docking date as per Form 'F'.
- (d) In case confirmation/cancellation of booking is not done, cancellation charges as per scheduled rates shall be levied irrespective of whether or not the concerned dry dock is vacant.

110. Preference in dry docking.—In regulating admission to a dry dock preference shall be given to :—

- (a) a vessel with a gross tonnage of not less than 3,000 tonnes over all smaller vessels;
- (b) a vessel with a gross tonnage of not less than 3,000 tonnes requiring the dock for a period not exceeding 24 hrs. over all similar vessels regulated for a longer period and all smaller vessels;
- (c) a vessel with a gross tonnage of not less than 3,000 tonnes requiring the dock for a period not exceeding 72 hrs. over all similar vessels regulated for a longer period and all smaller vessels;

111. Preference to damaged vessel.—The Chairman, may at his discretion allow any vessel to enter a dry dock with overriding preference over all other vessels standing on the Entry List, if such immediate entry to a dry dock is considered necessary by him.

112. Arrangement prior to dry docking.—The Master of a vessel shall, prior to the time of her admission into a dry dock, arrange :—

- (a) that the vessel is upright and her trim of stern does not exceed one foot for every 100 feet of her length between perpendiculars, provided that the Chief Mechanical Engineer may at his discretion permit a vessel, which cannot be trimmed within this limit, to be dry docked subject to such conditions as he may think fit.
- (b) that ballast tanks are either pressed full or pumped perfectly dry with the door on and properly secured.

(c) that suitable hawsers and heaving lines are in readiness on each side, fore and aft and masthead pandants move as per directions of Superintendent, Dry Docks.

(d) that all bilges are kept perfectly dry.

(e) that reading of the ballast tank sounding are taken while the vessel is afloat in dry dock and immediately the vessel is on the blocks, fore and aft.

(f) that copies of the readings taken under clause (e) above are at once delivered to the Superintendent, Dry Docks.

113. Docking with cargo on board.—The Owner or Master wishing to dry dock a vessel with cargo or additional bunkers on board may submit a special application to Chief Mechanical Engineer explaining the circumstances and furnishing full particulars of the nature and stowage of cargo in addition to furnishing the information required as per Form 'F' provided that dry docking of such vessel may be refused without assigning any reason therefor.

114. Refusal of admission.—Any vessel for which her Master has not made arrangements required under rule 109 may at the discretion of the Chief Mechanical Engineer be refused permission to enter the dry dock.

115. Assistance and extra hands.—The Master of a vessel shall arrange that the crew render every assistance when docking or undocking the vessel and shall also supply extra hands which are in the opinion of Superintendent, Dry Docks required on board during these operations.

116. Co-operation during shoring.—From the time at which the dock ropes are made fast to the vessel to the time at which she is secured on the blocks, the Master shall use every effort to ensure the fullest cooperation between his crew and the dry dock staff in shoring the vessel, and shall ensure all other duties on board to cease so that his crew may be available for any work required by the Superintendent, Dry Docks.

117. Alteration of ballast tanks.—While a vessel is in a dry dock no alteration shall be made in the condition of her ballast tanks without the permission of the Superintendent, Dry Docks, who shall not flood the dry dock until he is satisfied that the original condition prevailing before alteration has been restored by the Master. The Master of any vessel who cannot restore original condition of the ballast tanks without undue delay should immediately forward an application with all necessary details to Superintendent, Dry Docks.

118. Shifting of weights.—While a vessel is in a dry dock no bunkers, cargo, or heavy weight shall be shifted or taken on board or landed without the written permission of the Superintendent, Dry Docks.

119. No out-board work.—No out-board work shall be carried on while a vessel is being docked or undocked.

120. Extension of stay.—No vessel shall remain in a dry dock longer than the time for which it has been regulated provided that the Chief Mechanical Engineer may at his discretion allow further regulation on receipt of application before expiry of the time of regulation and subject to his satisfaction that circumstances not known when the vessel was regulated or which are beyond the control of the parties engaged for the work will prevent the completion with the original period of regulation of work which can be done only in a dry dock.

121. Removal of vessel.—The Master or Owner shall, unless the period of regulation is extended, make all necessary arrangements for taking the vessel out of dry dock at the expiration of the period for which she was regulated, provided that the Chief Mechanical Engineer may if the Master or Owner fails to make such arrangements, take all necessary steps to remove the vessel.

122. Precautions before undocking.—The Master shall satisfy himself that all sea-cocks, bilge holes and other apertures in the vessel's bottom have been securely closed before any water is let into the dry dock at the time of undocking.

123. Equipment provided.—The Port shall provide all blocks, horizontal and bilge shores necessary for the safe docking of the vessel, sufficient floating stages and travelling trestles for washing down, scraping and painting the vessel and sufficient trestles and stagins for ordinary propeller work and minor repairs.

All stagings and supports for extensive repairs must be provided by the Master or the Owner or the Contractor carrying out the repairs.

124. Appointment of contractors.—The Trustees shall from year to year authorise certain approved firms or individuals to undertake work in connection with vessels in dry docks. No person/firm shall be allowed to undertake any such work unless he has been so authorised by the Chairman.

125. Protection of Port property.—No block, shore stage, pole, rope or other article belonging to the Port shall be removed from the Dry Dock premises without the written permission of the Superintendent, Dry Dock.

126. Damage to dry docks.—No article belonging to the Dry Docks shall be destroyed, cut or otherwise damaged or allowed to go adrift nor should timber or other heavy materials be thrown upon the steps and stone work or passed into or out of the Dry Dock otherwise than by the means provided and prepared for the purpose.

127. Use of cranes.—For booking of cranes in the dry docks, an application has to be made to the Superintendent, Dry Docks who would arrange for the same subject to availability, need and priority as deemed fit by him.

128. Filtered water and electricity.—Separate requisition should be placed for filtered water and electricity prior to dry docking.

129. Special disposition of blocks.—For laying special disposition of blocks the Agent/Master/Owner should submit the docking plan at least 3 days in advance.

130. Misdeclaration in tank sounding form.—While docking, if a vessel behaves contrary to the declaration made about the tank sounding by the Master, the docking may be cancelled by the Superintendent, Dry Docks or in case, to accommodate such condition the vessel is required to be taken out for laying the blocks again all such charges on daily dry dock hire basis may be levied while undocking if a vessel disturbs the block arrangement contrary to the Master's declaration in the Tank Sounding Form, total cost of relaying the blocks should be borne by the Shipowner/Agent.

131. Discharge of waste.—If a vessel discharges oil or any unwanted material, rubbish, etc. in the dry dock, the owner/Master would be required to clear those from dry docks before undocking and for any damage to machineries of dry dock on account of the same the repair cost should be borne by the Owner/Agent.

132. For redocking of any vessel for any reason whatsoever required by the Owner, additional charges other than Dry Dock hire charges may be levied as per Schedule of Rates.

133. Use of capstan.—For use of electro-hydraulic/hydraulic capstan, individual booking for each capstan shiftwise should be made to Superintendent Dry Docks who would arrange the same subject to availability, need and priority as deemed fit.

134. In case of extensive work in the way of underwater hull or any fittings, the location of the blocks to be made clear for such work must be indicated prior to docking to organise laying of blocks accordingly.

CHAPTER VI

RULES FOR SHIP-BREAKING

135. Application for ship-breaking.—An Owner requiring to dismantle a vessel or break up a vessel for scrap, shall apply in writing to the Director, Marine Department, and shall produce for his inspection the clearance given by the Director General of Shipping, Indian Customs, and the Sales Tax Authorities, as applicable, and also such other documents as may be required by the Director, Marine Department. On being satisfied with the production of required documents, as applicable, Director, Marine Department may allot a suitable berth for dismantling the vessel within the Calcutta Dock System.

136. Agreement relating to ship-breaking.—The Owner, when so required, shall enter into formal agreement on such terms and conditions as may be laid down by the Director, Marine Department, regard being had to the circumstances of the case and the degree of risk involved in dismantling breaking up or destroying of the vessel concerned.

137. Payment of charges.—The Owner shall pay immediately on demand all charges prescribed by the Trustees as and when demanded by the Director, Marine Department, in the shape of wharfage, mooring, berth hire, Dry Dock, beaching charges, ground rent charges, crane hire charges and any other charges as applicable, before such services are rendered.

138. Bank guarantee from a scheduled bank for ship-breaking.—The Owner shall also furnish, if asked to do so, a bank guarantee from a scheduled bank having its Head Office or Branch Office in Calcutta, as approved by the Trustees' Financial Adviser and Chief Accounts Officer in the form prescribed by the Director, Marine Department, undertaking to pay to the Trustees, in the event of the vessel fully or partly sinking or becoming a wreck, the cost of salvage operations to be carried out by the Director, Marine Department to secure the safety of the Port, the safety of other vessels and/or for keeping clear the navigational channels. In deciding the amount and other terms of such bank guarantee, the decision of the Director, Marine Department shall be final.

139. Ship breaking without due diligence.—In case the Owner fails to carry out the breaking up or dismantling work with due diligence as required by the Director, Marine Department, the Trustees may, without prejudice to any of their rights, themselves or through other agencies break up or dismantle and/or sell and/or remove the portions so dismantled or broken up of the vessel at the cost and expense of the owner.

140. The expression 'Owner' includes his agents, representatives or assigns of vessels.

141. In case of any dispute as to the interpretation or working of these rules on ship breaking the decision of the Chairman shall be final and binding.

CHAPTER VII

RULES FOR DAMAGE TO PORT PROPERTY

142. Masters and Owners of vessels shall be held liable for any damage whatsoever that shall have been caused by their vessels or servants to any of the works or property of the Trustees and the Trustees reserve the right to detain their vessels in dock until security has been given for the amount of the damage caused.

Provided that without prejudice to any rights of the Board, the Chairman or Deputy Chairman may allow the vessel or vessels to leave the Port on sufficient security being furnished by the Owner/Master to cover the estimated cost of damage/loss.

CHAPTER VIII

RULES FOR VESSELS CARRYING
PETROLEUM

143. Definitions.—In this chapter unless the context otherwise requires—

- (1) "bulk oil vessel" means a petroleum vessel with petroleum in bulk;
- (2) "case oil vessel" means a petroleum vessel with petroleum in cases, casks, drums or other receptacles;
- (3) "discharged vessel" means a petroleum vessel which has completed the discharge of her petroleum;
- (4) "excluded petroleum" means petroleum having its flash-point not below 93C (or 200F), to which these rules do not apply;
- (5) "flash-point", in relation to any petroleum, means the lowest temperature at which it yields a vapour which will give momentary flash when ignited, and determined in accordance with the provisions of the Petroleum Act 1934 (30 of 1934) and the rules made thereunder;
- (6) "gas-free certificate" means a certificate granted by an officer appointed by the Central Government in this behalf to the effect that a vessel has been thoroughly cleaned and freed from petroleum and inflammable vapour;
- (7) "petroleum" means any liquid hydrocarbon or mixture of hydrocarbons and any inflammable mixture (liquid, viscous or solid) containing any liquid hydrocarbon;
- (8) "Petroleum Class A" means petroleum having its flash point below 23C (or 73F);
- (9) "Petroleum Class B" means petroleum having its flash point below 65.5C (or 150F); but not below 23C (or 73F);
- (10) "Petroleum Class C" means petroleum which has its flash point not below 65.5C (or 150F);
- (11) "petroleum in bulk" means petroleum contained in a receptacle exceeding 100C litres in capacity;
- (12) "petroleum vessel" means any vessel carrying more than 5,000 litres or 5 metric tonnes of Petroleum Class "A" or 50,000 litres or 50 metric tonnes of petroleum Class "B" or any other substance having the same flash point as that of Petroleum Class "A" or Petroleum Class "B";
- (13) "to transport" means to move petroleum from one to another within the port.

144. Regulation of petroleum vessels.—No petroleum vessel shall proceed above Sandheads until she has been allotted a berth in the Port of Calcutta.

145. Restriction on movement.—No petroleum vessel shall proceed above Baj Baj with—

- (a) Petroleum Class "A".
- (b) Petroleum Class "B" which is not intended for discharge at the petroleum berth in Netaji Subhas Dock;

Provided that this rule shall not apply to—

- (i) a recognised wagon ferry;
- (ii) a vessel licensed under rule 160 following a route approved by the Director, Marine Department;
- (iii) a vessel proceeding into Dry Dock in accordance with rule 165.

146. Declaration by Master of ships carrying petroleum or by the ship's Agent and discharge or shipment of petroleum or inflammable substances including substance like paints and varnishes.—(1) The Master of every ship carrying petroleum or any other substance having flash point below 65.5C (or 150F) shall deliver to the Pilot before entering the Port of Calcutta a written declaration in Form "H" specified in the Schedule to those Rules under his signature.

Provided that if in anticipation of ship's arrival the Agent for such ship delivers to the Director, Marine Department of the Port; a written declaration as aforesaid under his signature, no such declaration need be made by the Master of the ship.

(2) The Agents shall furnish a list of all hazardous cargo with full particulars to the Director, Marine Department and the Traffic Manager of the Port.

(3) The Master of the ship shall be responsible for compliance with all relevant rules, regulations and instructions issued from time to time.

(4) Notwithstanding anything contained in sub-Rule (3) the Director, Marine Department, when the circumstances so warrant may grant relaxation in regard to the quantities of petroleum or any other substance having flash point below 65.5C (or 150F) that may be brought for discharge or shipment at the docks and jetties at the Port of Calcutta subject to the compliance of conditions that—

- (i) the vessel cannot be taken in Baj Baj mooring for the duration of Bore Tides;
- (ii) Cargo is to be delivered direct from the vessel to the consignee or to be removed to the Trustees' Hazardous Godown immediately on arrival of the vessel or in case of shipment, the cargo should be loaded only one day or two days prior to the sailing of the vessel;
- (iii) the above operation will be carried out in day light hours only;
- (iv) "No smoking" should be strictly observed and strict precautions against out break of fire during the time of loading/unloading should be taken;
- (v) in case of inflammable liquid having flash point below 23C(73F), not more than 5 tonnes of such cargo to be handled at a time in quayline and the same should be removed immediately from the port premises;
- (vi) Port Fire Service personnel should be present at the time of unloading of the cargo and the ship's fire fighting appliances should also be kept in readiness near storage area of the cargo.
- (vii) the unloading and loading operations are to be carried out under direct supervision of nominated responsible persons from the steamer agents and the consignee and they shall be answerable for any mishap :

Provided that no such relaxation shall be granted for such quantities exceeding—

- (a) 20 tonnes in regard to petroleum Class 'A' or other substance having flash point below 23C (or 73F).
- (b) 20 tonnes in the case of manufactured products such as paints and varnishes having a flash point below 23C (or 73F);
- (c) 100 tonnes in regard "Petroleum Class "B" having a flash point below 65.5C (or 150F).
- (d) 150 tonnes in the case of manufactured products such as paint and varnishes having a flash point above 23C (or 73F), but below 65.5C (or 150F).

147. Attendance of tug.—No petroleum vessel with Petroleum Class "A" or "B" and no discharged vessel without a gas-free certificate for all tanks shall be transported between Garden Reach and Netaji Subhas Dock unless she has a tug in attendance.

148. Discharge of petroleum in bulk, and loading of petroleum or inflammable liquids in bulk.—Petroleum vessels shall discharge/load.—(a) Petroleum Class "A" in bulk or inflammable liquids having flash point below 23° C (73° F) may be discharged/shipped directly into/from storage tanks of Importers/Exporters at Haldia/Baj Baj.

(b) Petroleum Class "B" Class "C" or inflammable liquids having flash point of 23° C and above may be discharged/shipped direct into/from storage tanks of Importers/Exporters at Haldia/Baj Baj/Netaj Subhas Docks.

149. Discharge or loading of case oil vessels.—Every case oil vessel shall discharge or load her petroleum or inflammable liquids, at the Petroleum Depot, Baj Baj but no such vessels shall begin her discharge or loading until the Director, Marine Department, is satisfied that,—

- (a) the Collector of Customs has permitted her petroleum or, as the case may be, inflammable liquids to be landed or loaded;
- (b) proper arrangements have been made for the disposal of leaky casks, drums or other receptacles;
- (c) the receptacles satisfy the requirements of the Petroleum Rules, 1976.

150. Discharge into lighters.—(1) No case oil vessel shall discharge under the foregoing rules any petroleum into a lighter unless such lighter is capable of being cleared and unloaded into a storage shed at Baj Baj between sunrise and sunset;

Provided that every such lighter shall be duly licensed for the purpose by the Trustees' Boat Surveyor;

Provided further that no lighter loaded with petroleum shall be detained overnight at Baj Baj unless specific permission in writing to that effect is first obtained from the Director, Marine Department.

(2) Provisions of this rule shall also apply in relation to all inflammable cargo with or without liquid hydro-carbon.

151. Fires.—No fire or naked light and no smoking shall be allowed on any boat carrying petroleum in cases, drums or other receptacles.

152. Inadequate facilities for discharge.—If the Collector of Customs at any time declares that the accommodation for the discharge of petroleum by any petroleum vessel is unsuitable, the Director, Marine Department may direct that the vessel be removed to Diamond Harbour or elsewhere within the Port.

153. Discharge or loading under own power.—No petroleum vessel shall without the permission in writing of the Director, Marine Department, discharge or load Petroleum Class 'A' or Petroleum Class 'B' in bulk with its own generated power.

154. Petroleum or inflammable liquids in small quantity.—A vessel, carrying otherwise than in bulk a quantity of petroleum Class 'A' or inflammable liquids not exceeding 5 tonnes (5,000 litres) or Petroleum Class 'B' or inflammable liquids not exceeding 50 tonnes (50,000 litres), may land it at the docks or jetties under the following conditions :—

- (i) that Petroleum Class 'A' is covered by an import licence granted under the Petroleum Rules, 1976;
- (ii) that each consignee who imports Petroleum Class 'A' in quantity exceeding 300 litres produces a certificate of storage accommodation in Form II of the Petroleum Rules, 1976, signed by him or his agent.

Provided that quantities not exceeding 5 tonnes (5,000 litres) Petroleum Class 'A' or quantities not exceeding 50 tonnes (50,000 litres) or Petroleum Class 'B' may be discharged into lighters or boats with the previous approval of the Director, Marine Department, subject to the compliance of the conditions specified in class (i) and clause (ii) and that the petroleum is not unloaded from boats or lighters at the following ghats, namely :—

- (a) on the Howrah side-Bichali Ghat north of Cowie's Ghat Sqr. or
- (b) on the Calcutta side-Jagannath Ghat, Sahib Bazar Ghat, Rutherford Ghat or Baghbazar Ghat;

670 GI/94—6

Provided further that Petroleum Class 'C' otherwise than in bulk may be landed in any quantity at the docks or jetties or discharged overside into boats, or lighters.

155. Cleaning.—Every discharged vessel shall, unless she is proceeding direct to sea, move without delay to appointed moorings at which she shall, subject to any direction of the Harbour Master (Port) remain until she is cleared and freed from petroleum and inflammable vapour : Provided that the Harbour Master (Port) may, if he is satisfied that due precautions have been taken to prevent the discharge of oil, oily water or refuse on to a wharf or into a dock or stream, permit her to perform her cleaning operations alongside the berth at which she has discharged.

156. Precaution within docks.—(1) Every vessel discharging Petroleum Class 'B' shall carry at each end a 10 c.m. wire pendant fitted at either end with an eye and the in board end of the wire shall be placed on the nearest available to bitts and the outboard end shall hang within reach of water.

(2) The length of each such pendant shall be 15 fathoms and the same shall be lightly strapped to the rails.

157. Bunkering petroleum.—No vessel shall bunker with Petroleum from any boat or barge between sunset and sunrise. Between sunrise and sunset bunkering of vessels with petroleum from any boat or barge will be permitted :—

- (a) at moorings in the stream,
- (b) at the Jetties, and
- (c) in the Docks, if the Dock Master is satisfied that the flash-point of the petroleum is not below 65.5° C or 150° F.

158. Precautions during bunkering.—Every vessel loading petroleum for bunkers shall observe the following conditions :—

- (a) The Master or Ist Mate of the vessel shall be on board and shall be responsible for ensuring that bunkering rules are observed and that all reasonable precautions for safety are taken.
- (b) An officer of the vessel shall be on watch and an attendant shall be stationed at the flexible connecting pipe.
- (c) No smoking cooking, naked lights or forges shall be allowed within 30.48 metres of the flexible and inlet pipes.
- (d) A suitable gutter or other contrivance shall be placed under the connecting pipe to prevent any petroleum dripping into the river or dock.
- (e) An attendant shall always be on duty at the pump of the vessel supplying the fuel.

159. Craft not allowed alongside.—No inland vessel or small craft shall approach within 30.48 metres of :—

- (i) a petroleum vessel bunkering or discharging in bulk;
- (ii) a discharged vessel until all her openings are closed.

160. Certification of boats or barges.—No boat or barge shall transport petroleum in bulk within the port unless she has been licensed by the Trustees' Boat Surveyor and also licensed by the appropriate authority in accordance with the Petroleum Rules, 1976; Provided that this rule shall not apply to a recognised wagon ferry.

161. Restriction night work.—No vessel shall load, discharge or transport Petroleum Class 'A' within the Port of Calcutta between sunset and sunrise;

Provided that this rule shall not apply to bulk oil vessels discharging at the Petroleum Depots, Baj Baj and Oil Jetties at Haldia in accordance with the provisions of the Petroleum Rules, 1976.

162. Transshipment of heavy petroleum.—Any vessel may, with the consent in writing of the Harbour Master (Port), tranship to any other vessel Petroleum Class 'C' in bulk.

163. Clearing of boats or barges.—No boat or barge used for the carriage of petroleum shall pump out bilges :—

(a) in the docks.

(b) alongside any tug or bulk oil vessel.

164. Restriction on straw boats.—No fires or smoking or naked lights shall be permitted on any vessel carrying straw within 155 metres of the high water line of the Baj Baj Petroleum Depot.

165. Gas free certificate for bulk oil vessel.—(1) No bulk oil vessel shall be taken amongst the other ships unless the vessel is proceeding to an oil berth (or in the case of a vessel carrying fuel oil only, into dock) or a certificate is produced from the Controller of Explosives East Circle, Calcutta, to the effect that he has examined the tanks, cofferdams, pump rooms and such other parts as deemed necessary with the aid of vapour testing instrument and certified by him in writing that such tanks, cofferdams pump rooms and other parts of the vessel are free from petroleum and vapour of petroleum and the vessel is in a fit state to enter the dock.

(2) The Master of all bulk oil vessels proceeding to dry dock shall produce the certificate referred to in sub-Rule (1).

(3) No repair work to any part or fitting of a petroleum tanker shall be carried out in the dry dock, or in the wet dock unless such part or fitting has been examined by the Controller of Explosives, East Circle, Calcutta and certified by him in writing to be free from petroleum vapour or petroleum.

(4) The Controller of Explosives, East Circle, Calcutta, while granting a certificate referred to in this rule shall specify thereon the period for which and the conditions under which such certificate shall remain valid.

Provided that a bulk oil vessel which has not carried petroleum of flash point below 150 F since her last gas free certificate was granted and which is entering a dry dock for the purpose of hull painting and examination only, will be admitted into dry dock on a certificate issued by the Master of the vessel stating that the tanks have been properly cleaned out. If after entry into dry dock it should transpire that the vessel requires more extensive repairs, a gas free certificate shall be produced before such repairs can be undertaken.

166. Separate certificate for repairs to any compartment.—Every bulk oil vessel entering the port with a gas free certificate shall before carrying out repairs involving the use of naked lights in any compartment, obtain a further certificate for that compartment.

167. Gas free certificate necessary in certain cases.—Every vessel in the port which uses oil as fuel shall, before carrying out any repairs in the bunkers obtain a gas-free certificate from the Inspector of Explosives or Assistant Inspector of Explosives, East Circle, Calcutta.

168. Officers on board.—During the time that any petroleum vessel is in port, a responsible Dock Officer and Engineer Officer shall be on board to carry out and give effect to the provisions of these Rules.

During the time that a petroleum vessel is loading or discharging, or preparing to load or discharge petroleum, the First Mate and Chief or second Engineer shall be on board and shall see that every precaution is taken to ensure the safety of the vessel and her cargo and in particular that the boilers and machinery are maintained in working order so that the vessel may be moved without delay if so required by the Harbour Master (Port).

[F. No. PR.16012/493-PG]
ASHOKE JOSHI, Jt. Secy.

SCHEDULE

Form A

(See Rule 21)

CALCUTTA PORT TRUST

I,.....Chairman, Calcutta Port Trust, do hereby license under Rule 21 of the CALCUTTA PORT RULES, 1993 the S.S.M./V.....of which.....is Master, to remain at her present moorings in the said Port having on board the crew specified below : Provided always that on its revocation under Rule 22 of the said Rules, or on breach of any of the conditions written hereunder this licence shall absolutely cease and determine.

Conditions of Licence

The vessel must remain at.....or such other moorings within the said Port as are allotted by an Officer duly authorised by the Trustees in that behalf for the period from.....to..... The reduced crew must consist of.....

Signature of

Licensing Authority.....

Designation

Chairman

Place

Calcutta

Date :.....

Form B

(See Rule 22)

CALCUTTA PORT TRUST

I,.....Chairman, Calcutta Port Trust, do hereby revoke the licence in Form A granted to the S.S./M.V.to remain in the said Port with reduced crew specified in the said licence.

Signature of

Licensing Authority.....

Date :

Designation

Chairman

Place

Calcutta

Form C

(See Rule 23)

CALCUTTA PORT TRUST

I,.....Chairman, Calcutta Port Trust, do hereby grant under Rule 23 of the CALCUTTA PORT (MARINE OPERATIONS) Rules a licence that S.S./M.V.....of which.....is master, moored in the following creek, river or dock.....shall for the period from.....to.....be exempted from the provisions of Rule 19 of the said Rules : Provided that during this period she remains in the said creek, river or dock.

Signature of

Licensing Authority.....

Date :

Designation

Chairman

Place

Calcutta

Form D

(See Rule 67)

Owner's name and address.....

Agent's name and address.....

Description of flat/boat.....

Nature of licence cargo or
passenger, held or required.....

The undersigned Owner/Agent of the flat/boat above described requests that it may be registered in accordance with Rule 68 of the Calcutta Port Rules.

Signature of Owner/Agent.....

Residence.....

Date.....

Form E

(See Rule 71)

Application for licence of each flat/boat

Brand & No	Description of boat and Class	Tonnage	Number of Oars	Crew Name	Manjhi Age	Height

Number of Passengers

The undersigned Owner/Agent of the flat/boat above described requests that it may be licensed in accordance with the CALCUTTA PORT RULES 1993 to pay as a flat/boat.

Signature of Owner/Agent.....

Residence.....

Dated.....

Form F

(See Rule 107)

APPLICATION FOR REGULATION OF
DRY DOCKSThe Chief Mechanical Engineer,
8, Garden Reach Road,
Calcutta-700043.
Sir,

We have requested that you will kindly arrange to take into Dry Dock the M.V. _____ of which we certify the following descriptive particulars.

Length.....

Beam.....

Depth method.....

Gross tonnage.....

Draft forward.....

Draft aft.....

Displacement weight of vessel

at draft stated.....

Style of construction of
vessel's bottom

Her Keel is ::

(a) a keep-plate

(b) a bar-keel

(c) a slab keel

(d) a duct-keel

She has :

(e) an overhang

(f) a camber in her keel

(g) other special features viz.,

Attached Plan showing any special style of construction are numbered and dated.....

Date and hour when the vessel will be ready to dock.....

Contractor's name and address.....

which the use of the dock will be required.....

Yours faithfully,

Signature.....

The the Harbour Master (Port), C.P.T.

c.c. The Harbour Master (Port) CPT.

c.c. The Supt., Dry Docks, NSD

Dated.....

Owner/Master of M.V.

Form 'G'

(See Rule 108)

CALCUTTA PORT TRUST

ADVICE OF REGULATION

TO

The Owner/Master

S.S./M.V.....

Sir,

Arrangements have been made pursuant to your application for regulation, dated.....for the admission of the S.S./M.V.....into the Kidderpore/Netaji Subhas Dry Docks at.....m. on theday of19.

The period of regulation expires at.....m. on theday of 19

You are, however, required to give notice to the Harbour Master (Port) of the exact time at which your vessel will be ready to undock in order that he may make his arrangements.

Yours faithfully,

Chief Mechanical Engineer

Calcutta.....

FORM 'H'

(See Rule 146)

Declaration to be made by the Master of a Ship carrying petroleum before entering the Port or by the Ship's Agents.

Nature of Petroleum	Total quantity carried in the ship	Name of the ship quantity of Petroleum to be landed in India (Name of the Port)	Remarks
---------------------	------------------------------------	---	---------

(1)

(2)

(3)

(4)

(a) Petroleum Class 'A' which can be used in an internal Combustion engine.

(b) Other substances having flash point below 23°C (73° F)

(c) Substance having flash point between 23°C (73°F) and below 65.5°C (150° F)

Total

Owner/Master of

M.V.